॥ श्रीः ॥

औरंगज़ेब नामा,

अर्थात्

मुगलसम्राट् महीउद्दीन मोहम्मद औरंगज़ेब
आलमगीर बादशाह का सचित्र
इतिहास ।

जिस को
राय मुन्शी देवीप्रसादजी मुन्सिफ राज्य जोधपुर इतिहासवेत्ताने
फारसी तवारीख मआसिरे आलमगीरी से सरल हिन्दी-
भाषा में उल्था करके उपयोगी टिप्पणी तथा तत्संबंधी
विशेष संग्रहादि से अलंकृत कर लिखा ।

वही
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६६ फसली १३१८-१९ सन् १९०९ ई०.

बाबरशाह,

अकबरशाह,

औरङ्गज़ेब

बहादुरशाह

उपक्रमणिका ।

मुगल बादशाहोंने बहुत वर्षोंतक हिन्दुस्तान की बादशाही की है और हिन्दुओं का अच्छा बुरा तथा नफा नुकसान उनके हाथों में रहा है। इसपर भी उनका कोई इतिहास हमारी हिंदी भाषामें नहीं है और जो कुछ है भी तो टूटा फूटा और गपशप है, इस वास्ते हम उनका संक्षिप्त इतिहास फारसी तवारीखोंका आशय लेकर अपनी सरल बोलीमें लिखते हैं ।

मुगल जाति तुर्कोंसे पैदा हुई है और तुर्क बहुत पुरानी जाति उत्तराखण्डकी जातियोंमें से है, जिसका कुछ परिचय तुरुष्कके नामसे हमारे पुराने ग्रंथो (इतिहास और पुराण वगैरः) में भी मिलता है, कई विद्वान ऐसा अनुमान करते ह कि तुरुष्क चन्द्रवंशी राजा ययातिके बेटे तुरुके वंशमें हैं परंतु मुसल्मान इतिहासवेत्ता कहतेहैं कि आदम जिससे सब आदमियोंकी सृष्टि चली है तुर्कोंका भी मूल पुरुष है । आदम की दसवीं पीढ़ी में नूह पैगम्बर हुआ । नूह के बेटे याफस का बड़ा बेटा तुर्क था तुर्क लोग उसकी औलाद में हैं । इस बातको तुर्कभी मुसल्मानी मत मानने के पीछे से मानने लगे हैं, नहीं तो पहिलेके तुर्क अपनी उत्पत्ति आदम से बहुत पुरानी मानते थे । उनका संवत्सर जो आईन अकबरी में लिखा है आदम के समय से (जिसे मुसल्मान और ईसाई सात हजार वर्ष के लगभगही मानते हैं) २६ गुना पुराना है जिसकी संख्या आज हमारे विक्रमी संवत् १९६२ में १ लाख ८९ हजार और ६ वर्षों की होती है ।

ऐसेही उनकी तवारीख भी बहुत पुरानी होगी परन्तु वह हिन्दुस्तानमें तो देखी सुनी नहीं जाती, तुर्किस्तान और मुगलिस्तान वगैरह तुर्कों के मुख्य देशोंमें कहीं उन लोगों के पास होगी जो मुसलमान नहीं होगये हैं । ऐसी हालत में हमको लाचार उन्हीं तवारीखोंसे काम लेना पड़ता है जो मुसलमानों की बनाई हुई हैं, ये तवारीखें भी बहुत हैं क्योंकि तुर्कोंने मुसलमान होने के पीछे असली मुसलमान अर्थात् अर्बोंके फतह किये हुए सारे मुल्कही उनसे नहीं ले लिये वरन उनके सिवाय नये मुल्क भी फतह किये थे, इस प्रकार उनका राज दुनियाभरमें

फैल गया था। अब भी रूम, ईरान, और तूरान, वगैरहके मुसलमान बादशाह तुर्क ही हैं। हिन्दुस्तानमें भी मुगलों के पहिले वही बादशाह थे। बल्कि हिन्दुस्तान को हिन्दुओं से फतह ही उन्होंने किया था, परन्तु हम इस छोटेसे ग्रंथमें जो कि सिर्फ हिंदुस्तानके मुगलबादशाहों की राज्यव्यवस्था से संबंध रखता है तुर्कोंकी तवारीखका सार खेंचना जरूरी नहीं समझते केवल उनकी पीढ़ियां-मात्र लिखकर आगे मुगलों को भी स्थूल रूप से आदि से लेकर उनका हिंदुस्थान-में बादशाह होने तकका बयाँन लिखते हैं, फिर बादशाह होने से पीछे का हाल विस्तार पूर्वक लिखेंगे क्योंकि हमारी असली गरज हिन्दुस्तान के इतिहास से है। इसके वास्ते अकबरनामा बहुत अच्छा आधार है जिसमें मुगलों की पीढ़ियां और उनकी पुरानी व्यवस्था बहुतसी तवारीखों का निचोड़ लेकर लिखी गई है। इसके तीन दफ्तरों में से पिछले दो में तो अकबर बादशाह का पूरा इतिहास है। शेष और पहिले दफतरों में पीढ़ियां और उनका कुछ कुछ वृत्तांत बाबर बादशाहतक हैं बाबर के पीछे हुमायूं की पूरी तवारीख है। हम इस दफतर को चारखण्डोंमें लेते हैं।

पहिले खंडमें पीढिया अमीर तेमूर तक,

दूसरे खंडमें अमीर तेमूर और उनके वंशकी एक शाखा का वृत्तान्त बाबर बादशाहतक जो हिन्दुस्तान से संबंध रखती है।

तीसरे खंडमें बाबर बादशाह की तवारीख जिसमें बाबर की स्वयं लिखी हुई दिनचर्या से भी विशेष बातें बढ़ाई गई हैं।

चौथे खण्डमें हुमायूं बादशाह का पूरा इतिहास।

आशा है कि पढनेवालों को यह मेरा परिश्रम स्वीकृत होगा और इस ग्रन्थ को हिन्दी साहित्य के रत्नभण्डार में आदरपूर्वक स्थान मिलेगा क्यों कि इस से हिन्दी-के इतिहासाभावके अन्धेरे घुप भवन में थोड़ा बहुत इसका प्रकाशका जरूर पड़ेगा

जोधपुर (मारवाड़) } भवदीय--
देवीप्रसाद.

भूमिका ।

मोहम्मद अमीन मुन्शी का बेटा मिरजामोहम्मद काज़िम औरंगजेब बादशाह की तवारीख़ आलमगीरनामाके नाम से लिखता था, जब वह १० वर्ष का हाललिख चुका तो बादशाह ने आगे लिखने की मनाही करदी ।

बादशाह के मरे पीछे शाहआलम बहादुरशाहके राज्य में मोहम्मद साकी मुस्तइद्-खां ने नव्वाब इनायतुल्लाहखां के कहने और मदद देनेसे हज़ूर और सूबोंके अख-बारों की फर्दें जमा करके ४० वर्ष का बाकी हाल लिखा और जो कुछ उसने देखा था या मोतबर लोगों से सुना था वह भी उसमें बढ़ाकर "मआसिरआ-लमगीरी" नाम एक ग्रंथ सन् ११२२हि. (संवत्१७६७) में रचा । फिर अगले१० वर्षके हाल का खुलासा मिरजा काजिम के आलमगीरनामे से लिखकर उसके शुरू में लगादिया । इसतरह यह मआसिरआलमगीरी औरंगजेब बादशाह के ५० वर्ष राज करने की तवारीख़ खुलासे के तौर पर है । बहुत तफ़सील के साथ तो है नहीं जैसा कि शाहजहां का बादशाहनामा है या खुद आलमगीरनामा है ।

खाफीख़ांने भी जिसकी तवारीख मशहूर है लिखाहै कि "जब १० वर्षपीछे" तवारीख लिखनेवाले उस बड़े बादशाह का हाल लिखने से रोके गये तो भी कई मुनशियों और ख़ासकरके मुस्तइदखां नेपोशीदा तौरपर कुछ २ हाल दक्खन के किलों और शहरों के फतह करने का बुरीबातों को छोड़कर लिखा, बृन्दावने दूसरे १० और तीसरे १० वर्ष में से कई सालों का थोड़ा थोड़ा हाल तहरीर किया । कोई ऐसी तवारीख कि जिस में ४० वर्ष का बिलकुल खुलासा या पूराहाल हो देखी और पाई नहीं गई, इसवास्ते सन्११ से सन् २१ जलूस तक "हजरत खुल्द, मकां-नी (औरंगजेब) की सल्तनत का हाल तारीख महीने और वर्ष के साथ लिखने के लिये कोई सिलसिला हाथ नहीं आसका, मगर इसके पीछे तो पूरी पूरी कोशिश करने और ढूंढने से लिखने के लायक अच्छे अच्छे हाल अखबारके दफतरों मोतबर याद-रखनेवालों और उस बड़े बादशाह के बाज़े कदीमी मुसाहिबों या पास रहने वालों और बूढ़े ख्वाजा—सराओं से पूछ पूछ कर तहकीक किये और जो कुछ खुदने होश संभाले पीछे अपने आंखों से देखे थे और याद रखे थे वे सब लिखे" ।

---

(१) शुरू । (२) औरंगजेब के का खिताब ।

खाफ़ीखां के इस लिखनेसे भी "मआसिरआलमगीरी" औरंगज़ेब की पूरी तवारीख मालूम नहीं होती और यह भी सच है कि दक्खन की लड़ाईयों में जितना कुछ बादशाही फौजों का नुकसान हुआ और जो जो तकलीफें बादशाह को उठानी पड़ी थी वह सब हाल जैसा साफ तौर से ख़ाफ़ीखां ने लिखा है वैसा मआसिरआलमगीरी में नहीं है तो भी यह बात नहीं है कि मआसिरआलमगीरी अधूरी तवारीख़ हो, वह उन सब किताबों में जो औरंगज़ेब बादशाह की तवारीख़ पर लिखीगई हैं मोतबर गिनी जाती है और इसीलिये ऐशियाटिक सोसाइटी बंगाल ने भी उसे कलकत्ते के मोलवियों से सही कराकर सन् १८७१ (संवत् १९२८) में छपवाई है । हिन्दी भाषा में औरंगजेब की कोई तवारीख़ न होने से हमने भी उसीका उलथा करना उचित समझा ।

हमने पहिली पहल संवत् १९२७ में मुआसिरआलमगीरी की कलमी नकल टोंक के एक मुसलमान मित्र के पास देखी थी और उसमें से हिन्दुओं के साथ संबंध रखने वाली बातें छांट ली थीं, फिर जोधपुर में दो छपीहुई प्रतियां ख़रीदीं । एक तो वही कलकत्ते की छपीहुई है जिसका ब्योरा ऊपर आगया है,दूसरी आगरे के इलाही नामक लेथो प्रेस की छपी है यह कलकत्ते वाली प्रति से कुछ गलत है । हमने इसी को आगे रखकर यह तरजुमा लिखा, फिर कलकत्ते वाली से मिलाया और अख़ीर में उस खुलासे से भी टकराया जो कलमी प्रतिसे लिखागया था और जहां जो फ़र्क़ निकला वह नीचे हाशिये में लिखदिया ।

मआसिरआलमगीरी में जिलूसी वर्ष अरबी महीने और दिन लिखे हैं, उस के साथ विक्रम संवत् महीने तिथि और दिन गणितकरके ब्रेकिट में हिन्दीवालों के सुभीते के लिये लिखदिये हैं । इस में तरजुमा करने से जियादा महनत पड़ी है फिर भी जो कहीं इस गणित तथा तरजुमे में भूलचूक रहगई हो तो पढ़नेवाले माफ़ करें और जो सुधार सकें तो सुधार दें क्यों कि यह सर्व साधारण के हितका काम है।

मआसिरआलमगीरीके रचयिताका कुछ हाल ।

मोहम्मद साकी ने मआसिरआलमगीरी में जहां जहां प्रसंग आतागया है अपना भी कुछ हाल लिखाहै । जिससे जानाजाताहै कि यह औरंगजेबके मुसाहिब बखत-

---

(१) इस गणित की जांच के लिये पुराने पंचांग भी ३०० वर्ष के जमा करलिये हैं ।

वरखांका दीवान और मुनशी था। उसके लिखे हुये पोशीदा हुक्मोंके मसौदे बादशाहकी नजर से गुजरा करते थे, जिससे बखतावरखांके मरने पर सन् १०९६ (संवत् १७४२) में बादशाह ने बुलाकर उसको अपने नोकरों में दाखिल कर लिया। तब तो बृहस्पतिवार के अखबार लिखने का काम दिया था फिर जानेमाज, खाने का मुशरिफ बनाया फिर खवासों की मुशरफी भी दी। इन कामों के सिवाय पोशीदा और जरूरी हुक्म भी वही लिखता था। अखीर में नजारत के कागज लिखने का भी इख्तियार उसीको दिया गया और उसका बेटा हाफिज मोहम्मद महोसन उसकी जगह बकायानवीसी (अखबार लिखने) पर मुकर्रर हुआ। इस तरह मोहम्मद साकी २१ वर्ष तक औरंगजेब के पास रहकर खूब जानकार होगया था और इसी प्रसंग से हुक्म न होने पर भी वह बहुत सी तवारीखी याददाश्तें लिखसका था।

औरंगजेबके हालकी दूसरी तवारिखें।

"मआसिर आलमगीरी" के सिवाय एक और भी तवारीख, औरंगजेब बादशाह के हालकी राकृत नामसे किसी मुन्शीकी बनाई हुई है, पर उसमें "मआसिर आलमगीरी" के बराबर हाल नहीं है। वह भी हमने पढ़ी और अपने तरजुमे से मिला कर उसमें जो कहीं कोई बात जियादा देखी वह हाशियें में लिखदी।

दूसरे एक और किताब "सवानह आलमगीरी" भी है, पर वह अभी तक हमारे देखनेमें नहीं आई नाम ही सुनाहै।

तीसरी आकिलखां की बनाई हुई एक तवारीख है। जो औरंगजेब के अमीरों में से था।

चौथी अमलस्वालह नाम एक और तवारीख है इन दोनों पिछली तवारीखोंमें भी १० वर्ष काही हालहै।

पांचवीं वकाये नामतखान आली, नाम एक और किताब दक्खन की लड़ाइयों के अखबारों की है।

---

(१) मुसल्मान जिस कपड़े को बिछाकर नमाज पढ़ते हैं उस को जानमाज कहते हैं। (२) अधिकारी। (३) खिदमतगारों सब कों (४) देखभाल पड़ताल

छटवें 'जंगनामें न्यामतखांन आली' है इसमें भी कुछ हाल औरंगजेब की लड़ाइयों का है जो मारवाड और दक्खनमें हुई थीं ।

ऊपर लिखी हुई किताबें तो खास औरंगजेब की ही तवारीख की हैं इनके सिवाय औरंगजेब के पीछे जो कई तवारीखें पिछले बादशाहों की बनीहैं उनमें भी औरंगजेब का हाल लिखा है इस किस्म की किताबों में से एक बखतावरखां की बनाई हुई तवारीख "मिरआतुलआलम"है उसमें भी औरंगजेब का हाल है,मगर १० वर्ष से जियादे का नहीं ।

औरंगजेब के और मआसिरआलमगीरी के पीछे की लिखी हुई किताबों में एक अच्छी किताब खाफीखां की है जिसका नाम लुबुतवारीख है । इस में औरंगजेब का जियादा हालहै यह मोहम्मदशाह के राज्य काल में बनी थी और एशियाटिकसोसाइटी के हुक्म से कलकत्ते में छपीहै ।

दूसरी मुन्शी जविनराम की बनाई हुई तवारीख मोहम्मदशाही भी उसी जमानेकी है इसमें जो अहवाल औरंगजेब का लिखाहै वह मआसिरआलमगीरी से मिलता हुआ है मगर कुछ कमीं के साथ । यह अभी नहीं छपीहै ।

तीसरी खुलास्तुल तवारीख मुनशी सुजानरायकी बनाई हुई है इसमें भी औरंगजेब का हाल, है मैंने इस तवारीख की तारीफ तो बहुतसुनी है मगर अभी तक देखी नहीं और यह छपी भी नहीं है ।

चौथी सियर उल मुत्ताखीरीन है । यह १२९ वर्ष पहिले लार्ड हेस्टिंग की हुकूमत में बनी थीं, इसमें औरंगजेब के हालका खुलासा आलमगीरनामें और लुबुततवारीख से लेकर दिया गया है ।

पांचवीं तवारीख मुजफ्फरी १०० वर्ष पहिले की बनी हुई है इसमें भी औरंगजेब की सलतनत का थोड़ासा अहवाल लिखा मिलताहै ।

इनके सिवाय और भी कई छोटी मोटी किताबेंहैं जो हिन्दुस्तान की तवारीख पर बनती रहीहैं और इन में कोई भी औरंगजेब के हाल से खाली नहीं है पर वह हाल ऊपर लिखी हुई किताबों में से ही लिया हुआ है ।

यहांतक जो लिखागया वह सिर्फ फारसी किताबों के बाबत है इनके पीछे उर्दू की तवारीखें हैं । उनमें भी औरंगजेब का हालहै मगर फारसी या अंगरेजी तवारीखोंसे खुलासा करके लिया हुआ है ।

उर्दू तवारिखोंमें दिल्लीके मुन्शी जुकाउल्लाहखां की बनाई हुई किताब बादशाह नामें और आलमगीर नामे में औरंगजेब की अच्छी तवारीख है।

अंगरेजी किताबें जो औरंगजेबकी तवारीख पर लिखी गई हैं वह दो प्रकारकी हैं एक तो फारसी तवारीखोंके तरजुमों से बनी हैं और दूसरी औरंगजेब के राजमें आयेहुए योरोपियन मुसाफिरोंके लिखेहुये सफरनामों से बनाई गई हैं इनमें औरंगजेब का हाल फारसी तवारिखों से कुछ जियादा और अनोखा भी है।

इन फरंगी मुसाफरों में डाकटर बरनियर तो औरंगजेबके बादशाह होने के कुछ पहिले शाहजहांके राजमें आगया था, उसके सफरनामे में इन दोनों बाप बेटोंका हाल है। जिस का तरजुमा फेंच भाषासे अंगरेजी और अंगरेजी से उर्दू तथा हिंदी में भी हुआहै।

बरनियरके पीछे डाकटर फ्रायर सन् १६७३ ईसवी (संवत् १७३०) में, पादरी जान ओविंग्टन सन् १६८९ (संवत् १७४२) में, डाकटर जमीली क्रीरी सन् १६९५ (संवत् १७५२) में और मनूची सन् १७०७ (संवत् १७६४) में आये थे।

इनके सफरनामों में तवारीखी हालातोंका सिलसिला तो थोड़ा ही है मगर दूसरी बातें राजदरबार फौज लशकर आमदनी और लोगों के चाल चलन वगैराकी जियादा हैं, उनमें से भी कुछ २ बातें छांटकर इसतरजुमेंके पीछे शेषसंग्रह के नामसे जोड़ी गई हैं।

इतने पर भी बढ़चढ़कर औरंगजेबके समयके असलकागजोंकी नकलें हैं जो बहुत परिश्रम औरखर्चसे हाथ आई हैं उनकी भी नकलें शेषसंग्रहमें इस पुस्तक के पढ़नेवालों को मिलेंगी।

उर्दू फारसी और अंगरेजी तवारीखों के सिवाय एक हिंदी तवारीख का नाम औरंगजेबके प्रसंगमें सुनागयाहै जो किसी बुंदेले सरदारने लिखी है और जिसका कुछ हाल औरंगजेब के समय का डयू साहब ने लिखाहै और फिर स्काट साहिब ने उस (बुंदेलेसरदारकी किताब) का तरजुमा भी अंगरेजी में करडाला है। मगर वह हमारे देखनेमें नहीं आया इसलिये डयू साहिब के ही लेख से एक दो जगह कहीं कोई जरूरी बातें लेली गई हैं।

इस तरह से इस पुस्तक के सर्वांग सुशोभित करनेमें जहां तक होसका आलस यां गफ़लतसे कोई परिश्रम उठा नहीं रखा है, पर बहुतसा काम राज का और निज का करने पर भी ९ महीने के अन्दर अन्दर यह मसौदा तैयार करदिया है अब आगे बुद्धि विचक्षण विद्वानों के पसंद आने नहीं आने की बात है । सो उमेद तो है कि पसंद आही जावेगा और न आया तो किसी साहसी सज्जन को इस से अच्छा ग्रन्थ तैयार करने का सौभाग्य मिलेगा । क्यों कि समय अनेक प्रकार की उन्नति के लिये अनुकूल है और एक के पीछे एक और एक से अच्छा एक हमेशे से तयार होता आया है । इसका कुछ परेखा नहीं है ।

तवारीख मोहम्मदशाही के अखीर में मुनशी जीवनरामने कहा है कि "हरेक खण्डहर (टूटा पड़ाहुआ घर) अपने दरवाजे का पता बतलाता है और हरएक पांव का चिन्ह अपने सिरका पता देता है । यह दुनिया (संसार) की एक कहानी है, कुछ तो मैंने कही है और जो बाकी रहगई है उस को दूसरा कहता है ।

अब अख़ीर में इतना कहना और रह गया है कि इस पुस्तक की भाषा विशेष करके उर्दू है जहांगीरनामे की सी हिन्दी नहीं है इस के दो कारण हैं ।

एक तो मित्रवरतिवारी नकछेदीजी ने,जो डुमरांव के प्रसिद्ध कवि और सुलेखक थे, जहांगीरनामे को देख कर मुझे लिखा था कि बादशाहों की तवारीख़ की भाषा में हिन्दी और संस्कृत के ऐसे शब्द ढूंढकर प्रयोग करना विडम्बना से ख़ाली नहीं है ।

दूसरे अभी हिन्दुस्तान और खास करके राजपूताने के लोगों के समझ में आनेवाली यही खड़ी बोली है । इसलिये इस पुस्तक में विशेष करके हिन्दी उर्दू के वेही शब्द रखेगये हैं जो रातदिन बोले जाते हैं और दफ्तरों और कचहरियों में भी लिखे पढ़े जातेहैं । इन के सिवाय जो तवारीखी शब्द फारसी या अरबी भाषा के जरूरी समझे जाकर लिखने पड़े हैं—इन के अर्थ वहीं ब्रेकेट में या नीचे हाशिये पर लिखदियेगये हैं ॥

विनीत—

देवीप्रसाद

मआसिरआलमगीरी के लेखककी।
मूलभूमिका।
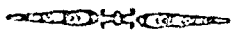
मोहम्मद साकी भूमिका में खुदा और पेगमबर की तारीफ शुरू करके लिखता है कि "खुदाने पैगमबरों को तो गुमराही के जंगलों में भटकने वालों को ईमानदारी के सीधे रास्ते में लाने का हुक्म दिया जिनमें मोहम्मद पैगमबर को सब का सरदार बनाया और बादशाहों को मुसलमानी मजहब फैलाने और काफिरों के अंधाधुंधमतों के मिटानेके लिये पैदा किया, जिन में अरबी पैगमबर के पीछे चलने वाले बादशाह आलमगीर गाजी को सबका सरताज बनाकर तखत पर बैठाया"।

इसके पीछे मआसिरआलमगीरी के लिखनेवाले मोहम्मद साकी ने अपने दिलमें विचार किया कि ४० वर्ष के अखबार तो लिखचुकाहूं अब जो आलमगीर नामा लिखनेवाले मिरजा मोहम्मद काजिम के लिखे हुवे १० वर्ष के अखबार का खुलासा चुनकर अपनी किताब के सिरपर लगादे तो उसका सरनामा भी होजावे और ढूंढने वालों के वास्ते ५० वर्ष की तवारीख मिलने की आसानी भी होजावे।

---

(१) जैसे औरंगजेब का तवारीख़ मजहबी रंग में डूबीहुई है वैसेही यह भूमिका भी है। मुसलमान लेखकों का ढंग मालूम होने के लिये हमने आगे भी बहुत जगेह तरजमे में असली रंग की झलक दिखलाने की कोशिश की है।

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना।

इस में कोई सन्देह नहीं कि यह ग्रंथ साधारण दृष्टि से पाठकों को अत्यन्त नीरस प्रतीत होगा. क्यों कि इसमें उपन्यासिक ढंगकी चटक मटक और रोचकता नहीं है. परन्तु विचार करने से इसका वास्तविक महत्व भी शीघ्रही चित्त में चढ़ सकता है। पुरातत्त्व वेत्ता, इतिहासप्रिय और स्वदेशहित–आकांक्षी महाशयोंके लिये यह संग्रह साक्षात् एक अमूल्य रत्न है।

स्मरण रहे कि कौरव पाण्डवों में महा युद्ध होतेही इस देश के दुर्दिन दिखाई देने लगगये थे। उसी क्षण से यह संसारशिरोमणि देश अपनी भविष्य अवनति के आगम का ग्रास बन चला था। पुराण प्रसिद्ध महाराज परीक्षित के पुत्र राजा जन्मेजय से कोई इक्कीस पीढ़ी पीछे पाण्डववंशकी राज्यश्रीका सर्वनाश होगया और नागवंशी राजाओं का राज्य हुआ। नागवंश की दश पीढ़ी गुजरने पर अन्ध्रवंश का राज्य हुआ और अन्ध्रवंश के बाद नन्दवंश के हाथ में हिन्दुस्तानका साम्राज्य शासन गया।

जब एक के हाथ से दूसरेके हाथ में राज्य जाता है तब एक प्रकारका भीषण राज्य विप्लव होता है और प्रजा में अराजकता सी फैल जाती है। उस अवस्था में बन्दरों की लड़ाई में बिल्ली को हाथ मारने का मौका मिल जाता है। और यही हुआ भी। जब कि इधर जल्दी जल्दी एक के बाद दूसरे वंशका साम्राज्य स्थापित होता था तभी छोटे छोटे सरदारों को सिर उठाने का मौका मिलता जाता था। अस्तु पश्चिम की सरहद के कई राजा देशी साम्राज्य के शासन से स्वतन्त्र तो होगये परन्तु उनमें इतनी सामर्थ्य न थी कि वे बाहरी हमलों को रोक सकें। परिणाम यह हुआ कि सन् ईस्वीसे ५०० वर्ष पहले फारिसके बादशाह विश्ताइपके बेटे दारयवुशने सिंधुके किनारे तक अपना दखल जमालिया। कोई दोसौ वर्ष बाद ईरानियोंका सितारा मंदा पड़ा और यूनानने जोर पकड़ा। यूनानके बादशाह जगत्प्रसिद्ध सिकन्दरने फारिसके बादशाह दाराको मारकर फारिस राज्यकी यावत् अमलदारी पर अपना कब्जा करनेकी इच्छासे हिन्दुस्तान में भी पदार्पण

(१) नागवंशी राजाओं की राजधानी तक्षकशिला या तक्षशिला नगर बतलाया जाता है। इसी वंश का एक राजा सिकन्दर से मिलकर राजा पुरु के विरुद्ध लड़ने आया था।

किया । उसने सिंधु पार करके झेलम तक धावा मारा । उस समय हिन्दुस्तानका साम्राज्य मुकुट नंदवंशी राजा महानन्दके शीश पर सुशोभित था । उसके पास आठ लाखके लगभग सब सेना थी । क्या जाने उसीके भयसे या अपनी सेनाके मनहार होजानेसे सिकन्दर झेलमसे आगे न बढ़ा, पर स्वदेशको लौटते वक्त पंजाबमें और यथाअवसर सिन्धुके किनारे किनारे कई एक प्रतिनिधि शासकोंको नियत करता गया ।

परंतु घर पहुँचते पहुँचते सिकन्दरका देहान्त होजानेके पश्चात् यूनानियोंका दाना पानी भी हिन्दुस्तानसे उठ गया । इधर नंदवंशके बाद गुप्तवंशका अधिकार बढ़ा । इस वंशने अपना अच्छा प्रभुत्व बढ़ाया, सारे हिन्दुस्तानको मुट्ठीमें करलेनेके सिवाय मध्य एशियातक अपना आतंक जमाया, परन्तु होनहार वश दाल में काय पैदा होगया. गुप्तवंश के आदिराजा चन्द्रगुप्तका पोता अशोक इस देश का चक्रवर्ती महाराज कहाजाता है । उसने हिन्दूधर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म को अंगीकार किया । और अपने राज्यभर में बौद्ध धर्मका डंका पीट दिया. परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्तानी लोग जो अब तक केवल राजनैतिक विप्लव के शिकार थे अब धार्मिक प्रतिद्वंदता के फन्दे में भी जकड़े गये ।

धिक् रे देश तेरे दुर्दिन ! न वह चक्रवर्ती महाराज अशोक रहे न वह बौद्ध धर्म रहा । सन् ईस्वी की छठवीं शताब्दी के लगभग इधर श्री स्वामी शंकराचार्य्यजीने वेदमत के उद्धार करनेका बीड़ा उठाकर बौद्धधर्म को उन्मूल करना आरम्भ किया, उधर अरबिस्तान में आखिरी पैगम्बर महम्मद साहब ने दीन इस्लाम का झंडा उठाकर सारे संसार को मुसल्मान बनाना चाहा ।

ये भी न रहे वह भी न रहे, पर सन् ईस्वी की सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, काबुल के मैदान में दोनों के चेलों का मुकाबिला हुआ, उस समय गजनी में यादववंशी राजा गज राज्य करता था, उस पर खुरासान के हाकिम फरीदशाह ने चार लाख सवारों के साथ आक्रमण किया, एक लडाई में राजपूतों की जै रही पर दूसरी में गजने हारकर मुस्लमानी धर्म स्वीकार करलिया । लीजिये उसी समय से मुसल्मानी मजहब के लिये हिन्दुस्तान का दरवाजा खुलगया । सन् ७११ ईस्वी में खलीफा हारूंरशीद के बेटे मामूरशीद ने कश्मीर और सिन्ध पर दीन इस्लाम की दुहाई फेर

दी। इस के वाद सन्१०१०से१०२४ई०तक महमूद गजनवीने २४ हमले हिन्दुस्तान पर किये जिन में उस ने काशी तक दीन ईस्लाम की दुहाई फेरी और लाखों हिन्दुओं को लूट मार कर देश को तहसनहस कर दिया।

इस के वाद मुस्लमानी सितारा कुछ दिनों के लिये मंद सा पड़ा और हिन्दुओं ने जोर पकड़ा। सिन्ध और पंजाव की सरहद से सम्वन्ध रखनेवाले दिल्ली अजमेर और कन्नौज के राजाओं ने परस्पर संधि वन्धन करके यह निश्चय करलिया कि अब धर्मशत्रु मुस्लमान लोग पंजावसे आगे न वढ़ने पावें,परन्तु दीन इस्लाम का वह किंचित् मन्दापन ऐसा ही था जैसे तेल डालते समय दिया की ज्योति मन्दी पड़ती है। एक शताव्दी गत होते होते उस का ऐसा प्रखर प्रकाश हुआ कि यदि इस ग्रन्थका चरित नायक अदूरदर्शी औरंगजेव रूपी पतिंगा स्वार्थरूपी प्रेमपाश में पड़कर समाज सहित भस्म होने का साहस न करता तो इस समय उसी जाज्वल्यमान ज्योति के उजेले में हम आप ही अपनी स्वतन्त्रता का रास्ता पा लेते। सीधी वात तो यह है कि न हाथ की विल्ली जाती न मेंओं मेंओं करना पड़ता।

जव बुरे दिन आते हैं तो मनुष्य के गुण भी अवगुण होकर उस के कालस्वरूप होजाते हैं। हा! स्मरणमात्र से हृदय विदीर्ण होता है! इस देश का अन्तिम हिन्दूसम्राट् चहुआणवंशावतंस शूरशिरोमणि राजा पृथ्वीराज मानो इस देशकी श्री और ह्री का अन्तिम नमूना था। निस्सन्देह वह जैसा स्वरूपवान् वलवान् गुणवान् धर्मवान् और यशस्वी था वैसा ही नीतिकुशल भी था, किन्तु केवल दूरदर्शिता की कमी होने से पुरानी लकीर का फकीर वनकर जैसे उस ने हिन्दुओं की नाव डुवोई उसी तरह से आलमगीर औरंगजेव ने मुस्लमानी सलतनत खोई।

पृथ्वीराज को पकड़ लेजाने के पश्चात् गजनी का शाह शहावुद्दीन गोरी भी शीघ्र ही गोर में गड़गया। इधर उस के प्रतिनिधि शासक कुतवुद्दीन ने कन्नौज को फतह करके गंगा पार होना चाहा, पर तवतक वह भी चलवसा। उस के वाद अलतिमश खिलजी तुगलक लोदी वहमनी सूर आदि कई एक मुस्लमानवंश दस दस पांच पांच वर्षके लिये हिन्दुस्तान का साम्राज्य करके नाश होते गये। अन्तमें मुगलसाम्राज्य का मूल वावर आया और उस ने यहां मुगलवंशका पौधा जमाया. इस मुगलवंश ने तीन सौ वर्ष पर्य्यन्त अखंड राज्य किया अन्त में औरंगजेव ने उसे भी जड़ से खोदिया

इस ग्रन्थ के प्रथम और द्वितीय खण्डों में मुगलवंश की पूर्व व्यवस्था का वर्णन है अत एव जिस देश के सम्बन्ध में हमें उस भिन्न जातीय भिन्नधर्मावलम्बी मुगल-वंशकी आद्योपान्त व्यवस्था का जानना आवश्यक हुआ है उस देशकी पूर्व व्यवस्था का किंचित्र परिचय देना आवश्यक समझकर उपरोक्त घटनाशैली को सूक्ष्म रूप से प्रकाशित किया गया है। अब हम इस ग्रंथके चरित नायक औरंगजेबके उन पूर्व पुरुषोंका भी किंचित परिचय दिया चाहते हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान में मुगल साम्रा-ज्यकी जड़ जमाई, क्यों कि इस ग्रंथके पढने में तभी आपको आनन्द आवेगा और आप समझ भी सकेंगे कि औरंगजेबने अपने बाप दादोंकी कमाई किस तरह और क्योंकर गमाई अथवा हिन्दुस्तानमें किस तरह की शासनप्रणाली से राज्य स्थिर रह सकता है और स्थितराज्य उन्मूल होसकता है तो किस तरह से ?

मुगल वंशके मूल पुरुषसे लेकर बाबरके पिता तक का हाल आप इस ग्रंथ-के प्रथम और दूसरे खंडोंमें पढेंगे। बाबरका जन्म सन् १४८२ में हुआ था। जिस समय इसके पिता शेख उमरका देहान्त हुआ उस समय इसकी अवस्था केवल १२ वर्षकी थी। उमर शेख मिरजाने मरते समय अपना सारा राज्य बराबर तीन हिस्सोंमें बांट दिया था। बाबरकी बैटक (राजधानी) कोहकनमें थी और काबुल और कन्दहार उस की राजधानी के सूबे थे। पिताके मरने पर इसके पांच वर्ष बड़े अमन चैन से कटे। इसके बाद समरकंद के मालिक ने इस की राजधा-नीको आघेरा। बहुत दिनोंतक लड़ाई होनेके पश्चात् एक दिन रात्रिको बाबर किलेसे निकल भागा और राज्य पर समरकंदियोंका कब्जा होगया। वहाँसे भागकर बाबरने अपने एक पुराने मित्र की शरण ली जिस की सहायतासे उसने समरकं-दियोंका थाना उठाकर फिरसे अपना राज्य पालिया. परंतु अबकी बार उसके भाइयोंने ही उस पर आक्रमण किया। उन्हों ने खूब खून खराबा कर के राज्य पर आधिपत्य जमाने के सिवाय बाबरको इस संसार सेही विदा करदेना चाहा। इस अवस्था में बाबरके कुछ दिन बड़े दुःख में कटे यहाँतक कि शिरपर दुपट्टा नहीं पैरमें जूता नहीं फिर रोटी के टुकड़े और पानी के प्याले की कौन कहे।

परंतु "सबहि दिन नहीं बराबर जात" कालान्तर से बाबर के वे दुर्दिन शीघ्रही दूर होगये और उस ने 'येन केन प्रकारेण' अपना राज्य पालिया। केवल यही नहीं उस

ने काबुल कन्दाहार गजनी बदखशां आदिको तावे में कर के हिन्दुस्तान की सरहद तक अपना आतंक जमा लिया और यथाअवसर हिन्दुस्तान जैसे सुविस्तृत भूभाग परभी अपनी भविष्य संतानके साम्राज्यका बीज बो दिया ।

स्मरण रहे कि कुतबुद्दीन ऐबक से लेकर अल्लाउद्दीन खिलजी तक जितने बादशाह दिल्लीके तख्तपर बैठे उनमें से कोई भी पूरब में जौनपुर और दक्षिण में अहमदनगर से आगे नहीं बढ़े । सिर्फ गुजरात की तरफ दौड़ धूप करते रहे । अलाउद्दीनने सन् १२९४ई. में दक्षिण देश विजय किया. उस के बाद बंगाल और फिर सन् १३०३ में उस ने राजपूताने के कई एक छोटे २ सरदारोंको लूटते मारते हुए चित्तौड़का किला फतह किया । तात्पर्य यह कि सन् ईस्वीके चौदहवीं शताब्दीके आरंभमें सारे हिन्दुस्तान में मुसलमानों की धाक बँध गई । परंतु अलाउद्दीनका बेटा सपूत न निकला ।

अलाउद्दीन के बाद ही दिल्ली की सल्तनत पूर्व अवस्था को पहुँच गई । जो जहाँ थे सो तहाँ के स्वतन्त्र शासक बन बैठे और दिल्ली में एक के बाद दूसरे वंश बारी बारी से राज्यकरने लगे । जिस समय जहीरुद्दीन महम्मद बाबर काबुलका बादशाह था उस समय इब्राहीम लोदी दिल्ली का बादशाह था । इब्राहीम का चचा दौलत खाँ लोदी बगावत ठान कर पंजाब के पहाड़ोंमें चला गया था, उसीने बाबर को अपनी सहायता के लिये बुलाया था ।

यहाँ तो वह मसल हुई कि बुलाया था मक्खी हांकने को सो साथ खाने लगे । साथ क्या खानेलगे सब थाली चाट गये" बाबर ने पंजावकी सरहदमें पैर देतेही क्या हिन्दू क्या मुसल्मान वहाँ के सब छोटे छोटे सरदारों पर आतंक जमाना शुरू किया और उन्हें अपना पक्षपाती बनालिया । इसप्रकार अपने दल को पुष्ट करके उसने पहिले दौलतखाँ की ही खबर ली । बादको दिल्लीपर आक्रमण किया । बाबर को सामने आया हुआ देखकर इब्राहीम कोई एक लाख सेना साथ लेकर उस से भिड़ा पर आप स्वयं इस लडाईमें मारागया । मालिकके मरते ही सब फौज तीन तेरह होगई और बाबरने चढ़ी सवारी दिल्लीपर अपना दखल जमालिया । यह लडाई सन् १५२५ई. में हुई थी.

अब अफगान लोगों की आखें खुलीं और उन्होंने विदेशी शत्रु को मार निकालने की इच्छा से मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंहजी की शरण ली । बाबर ने भी वि-

चारा कि जबतक प्रबल राजपूतों के दाँत खट्टे नहीं किये तबतक दिल्ली की बादशाहत मिली न मिली बराबर है, इस हेतु वह भी लड़ने को तैयार हुआ सन् १५२६ ई० में आगरे के पास सिकरी के मैदानमें लड़ाई हुई। दुर्भाग्य वश लड़ाई की चाल चूक जाने से मेवाड़पति को परास्त होना पड़ा और बाबर ने विजय पाई। इस विजय के पश्चात् बाबर के नाम का हिन्दुस्तान भरमें आतंक जमगया।

तत्पश्चात् बाबर तो दिल्ली में रहकर भारतवर्ष में अपनी सल्तनत अटल करने के उपाय करने लगा और उसका ज्येष्ठ पुत्र हुमायू दिग्विजयके लिये निकला। उसने गुजरातके हाकिम बहादुरशाह को शिकस्त देकर वहां अपना दखल जमाया। फिर जौनपूरसे लेकर बिहार और बंगालको भी फतह किया, तबतक सन् १५३० ई०में बाबरका देहान्त होगया। इस घटनासे मुगल साम्राज्य फिर कमजोर पड़ गया। उधर बहादुरशाह भी बदल खड़ा हुआ इधर बंगालमें शेर शाहसूरने बंगालको अपने ताबेमें करके जौनपूरके जिलेपर दखल जमाते हुये चुनारके किलेमें थाना रोप दिया. यह देख कर बाबरने उसे दिल्ली तक बढने देना उचित न समझकर चुनारके किलेपर आक्रमण किया। हुमायूको वहां गले हाथ बिजय मिली इस लिये वह शेरशाहके शासनको नेश्तनाबूद करने के लिये और भी आगे बढ़ा पर ज्योंहीं वह मध्य बंगालमें पहुँचा कि शेरशाहने फिरसे उसे आघेरा और चारो ओरसे रसद पहुँचना बंद करके उसने मुगलसेनाको अन्न पानीके लिये मुहताज कर दिया।

इस आपत्ति से आक्रांत होकर हुमायू आगरेको लौटने के लिये विवश हुआ। शेरशाहने उसे वहांसे तो चले आने दिया पर ज्योंही मुगलसेना गंगाके किनारे बक्सरके पास पहुंची कि अफगानों ने सामने आ ललकारा। हुमायू ने मुकाबिला किया पर मुगल सैनिकों के मनहार होने के कारण उसे हारखानी पड़ी। वहां से भागकर हुमायू कन्नौज तक पहुंचने पाया था कि फिरसे सूरसेना ने उसे आ दबाया। यह बात सन् १५३९ ई० की है। कन्नौज की लड़ाई में तो हुमायू इस तरह से हारा कि उसे प्राण बचाना कठिन होगया फिर राज्य काज की बात कौन कहे।

धन्य करमके फेर! समस्त हिन्दुस्तानको अपने अधिकार में करने के लालसी बाबर के पुत्र हुमायूको आज हम सिंध के मैदान में असहाय फिरता देखते हैं मियाँ बीबी दो और दो चार सच्चे बफादार दोस्त उनके साथ में हैं—पर अवस्था यह

है कि रोटी है तो पानी नहीं, पानी है तो रोटी नहीं। इसी अवस्था में अमर कोट के पास हुमायूं की बीबी ने (सन् १५४२) में एक बच्चा जना। कालान्तर से वही बच्चा शहंशाह जलालुद्दीन महम्मद अकबर के नाम से हिन्दुस्तान के तख्तपर एक जगत्प्रसिद्ध बादशाह हुआ। उसी अवस्थामें अपनी प्रसूता बीबी और दुधमुंहे बचेको लियेहुए हुमायू फारिस (Persia) के बादशाह तहमासाशाह की शरण में गया। तहमास्पशाह ने हुमायूं को सादर आश्रय दिया और उस की यथोचित सहायता भी की। हुमायू ने फारिस के सेनापति बैरमखान की सहायता से पहले काबुलपर आक्रमण किया और अपने स्वतंत्र एवं स्वेच्छाचारी भाइयों को दमन करके अपने पैतृक राज्यका अधिकार प्राप्त किया।

इधर सन् १५४५ ई० में शेरशाह सूर कालिंजर के किले की लड़ाई में मारा-गया। और उसका बेटा सिकन्दरसूर तख्तपर बैठा, पर उस के विषयविलासिता में लिप्त होनेसे शीघ्र ही राज्य श्री ने उस से विदा ली। बंगाल निवासी एक हेमूनामक बनिया जहां तहां देश दबाकर बलवान् होगया। इसी अवसर में हुमायूको पुनः हिन्दुस्तानपर आक्रमण करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने सन् १५५५ ई० में सिंधपार करके सरहिन्द के पास सिकन्दरसूरको परास्त किया और चढ़ी सवारी दिल्ली और आगरे पर दखल जमालिया।

अभी छैः महीने भी नहीं हुए थे की हुमायूं इस संसार से चल बसा, मानो वह अकबरको हिन्दुस्तान के तख्त तक पहुंचाने के लिये ही आया था। उस समय अकबर की उमर केवल तेरह वर्ष की थी, अस्तु हेमू ने उसे नाबालिग जानकर पंजाब प्रान्तपर दखल जमातेहुए दिल्लीपर आक्रमण करना चाहा परंतु बुद्धिमान बैरमने उसे पानीपत के मैदान में जालिया। जिस तरह नबाब सिराजुद्दौलाको परास्त करने से अंग्रेजों की अमलदारी जमगई उसी तरह बैरमको पकड़ लेने से मुगल राज्य की नींव हिंदुस्तान में मजबूत हो गई।

परस्परका प्रेम नेम या व्यवहार तभीतक निभता है जबतक एक दूसरे के अधिकारोंपर अनुचित हस्ताक्षेप न करें। इस के विरुद्ध होते ही, राजा प्रजा और अफसर मातहत की कौन कहे बाप बेटे की भी नहीं बनती। अस्तु बैरमखां ने

अकबरको लड़का समझकर समस्त राज्य पर इच्छानुसार शासन किया चाहता था, इधर अकबर भी अब अपना वैभव प्रकाशित करना चाहता था। इसी में दोनों की अनबन होगई। सौभाग्यवश उसी समय अकबर को शेरशाह सूर के दो पुराने मुसाहब मिलगये, वे दोनों अब्बुलफजल और राजा टोडरमल हैं। इन्हीं दोनों की सहायता से अकबरने समस्त राज्य शासनका भार अपने हाथ में ले लिया और बैरमको पिन्सन देकर मक्केको रवाना किया।

बुन्देलखंड अन्तर्गत रयासत विजावरके पास पाटन गांवका रहनेवाला वीरन नामका एक ब्राह्मण भी अकबरके दरबारमें जा पहुंचा। वही तवारीखमें बीरबलके नाम से प्रसिद्ध है। राजा टोडरमल लखनऊ जिलेके रहनेवाले जातिके खत्री थे और अबुलफजल एक सिंधी गृहस्थके लड़के थे। अबुलफजल और टोडरमल शेरशाह सूरकी पेशीमें काम कर चुके थे। अस्तु वे दोनों तो राज्यके एक एक महकमें के मालिक हुए—अबुलफजल वजीर हुआ और राजा टोडर मालके महकमें के मालिक हुए—और बीरबल अकबरके अंतरंग मित्र वा प्राइवेट सेक्रेटरी थे। इन तीनों बुद्धिमान व्यक्तियोंकी सहायतासे अकबर के राज्य शासनका सूर्य्य ऐसा प्रकाशमान् हुआ कि सैकडों वर्ष वाद अब भी अंग्रेज लोग उसके सहारे हिन्दुस्तानका शासन कर रहे हैं, पर खेदहै कि मदान्ध या मतान्ध औरंगजेब उस प्रकाश से विलकुल ही वंचित रहा।

एक अंग्रेज लेखकका यह वाक्य बहुत ही महत्व पूर्ण है कि (Man is an instrument of Devine-wisdom) मनुष्य ईश्वरेच्छाके पूर्ण करनेका एक औजार है। और तभी यह नियम है कि पूर्व संचित कर्म्मानुसार जो जैसे स्वभावका होता है उसे वैसे ही यार दोस्त या अनुचर वर्ग मिलजाते हैं। अकबर के राज्यकालमें जो कुछ हुआ वह सब उक्त चौकड़ीकी करतूत समझिये। राजा टोडर मल और अबुलफजलके जो मंतव्य शेरशाह सूरकी अकाल मृत्युके कारण अधूरे रह गए थे उन्हें उन्होंने अकबर के द्वारा पूर्ण किया। परन्तु अकबर के हिन्दुओं में पूज्य होजाने का कारण बीरबल थे। अबुलफजल और टोडरमल यदि यह निश्चय करते कि अमुक व्यवसाय से राज्यश्री की वृद्धि होगी तो बीरबल यह बतलाते

कि वह इस प्रकार से पूरा पड़सकैगा अथवा स्वयं उस को कर दिखाता था । इसी लिये अकवर के राज्यकाल में वीरवल के नाम ने सर्वोच्चासन पाया। विचारने की बात है कि अलाउद्दीन खिलजी, गयासुद्दीन वलबन, शेरसाहसूर और बावर आदि कई बादशाह सहस्र चेष्टा करनेपर भी जिस राजनैतिक चाल को पूरा न करसके उसे अकबर ने हँसते खेलते करलिया। किस के वल से ? वीरवल के वल से !

ऊपर कहेहुए चारों वादशाह इस वात को समझते थे कि जवतक राजपूताने के राजपूतों को अपने पंजे में नहीं करलिया, तबतक मुसलमानी वादशाहतका जमना कठिन है क्योंकि साम्राज्यवंशीय सदस्य जो दूर देश में शासन—अधिकार पाकर वागी होजाते हैं और सल्तनत की जड़ पर आघात करके उसे उन्मूल करदेते हैं उन्हें दवा रखने के लिये राजपूत राजाओं की वड़ी जरूरत है । इस के सिवाय इस वातका भी भय था कि परस्पर की हाथावाही में शायद एक दिन वह समय न आवै कि मुसलमानी राज्य हिन्दुस्तान से समूल उन्मूल होजावे और यही राजपूत राजा साम्राज्य लेलेवें। इन वातों को जानते सब थे पर कोई कुछ कर नहीं सके थे । अकवर ने महाराज मान के साथ मित्रता करके शनैः शनैः सब राजपूत राजाओं को पालतू तोता वना लिया। क्यों न हो उस ने राजपूत जाति के स्वभावका परिचय पालिया था।

अकवर सन् १५५६ ईस्वी में गद्दी पर वैठा था। उस ने ११ वर्ष के अर्से में सन् १५६७ तक जैपूर जोधपूर आदि के वड़े २ राजाओं को सम्बन्ध बन्धन में वांध पाया. तब उस ने सुदूरवर्ती देशों को विजय करने के लिये कदम वढ़ाया। ईश्वर की कृपावत् अपने प्रताप एवं राजनीति के वल से उसने अपने भक्षक राजपूतों को ही अपना रक्षक वनाकर पहले गुजरात पर हमला किया। वहाँ अपना अधिकार स्थापित कर के उस ने वंगाल विहार दक्षिण आदि देशोंपर भी अपनी दुहाई फेर दी। इस प्रकार से समस्त हिन्दुस्तानको अपने कब्जे में कर के उसने उत्तर की तरफ उत्तरीय हिन्दुस्तान और काबुलको अपने कब्जे में किया. इन्हीं लड़ाइयों में राजा वीरवल मारेगये।

स्थानाभाव के कारण हम अकबर के शासन प्रणाली की और उस की चालचलन की आलोचना नहीं कर सकते पर इतना फिर भी कहेंगे कि वह एक वड़ा दूरदर्शी और नीतिज्ञ पुरुष था। यदि उस के उत्तराधिकारी ठीक उसी की रीति

नीतिका अवलम्बन करते ता आज दिन हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की आवादी वारह करोड़ से कहीं ऊपर होतीं और हिन्दू मुसल्मानों में केवल उतना ही भेद वाकी होता जितना कि शैव और वैष्णवों में अथवा जैन और हिन्दुओं में है।

अकबरका देहान्त सन् १६०५ ई० में हुआ उस के पश्चात् उसका जेठ पुत्र जहाँगीर तख्तपर बैठा। उसने यावज्जीवन अपने वाप की रीति को अच्छी तरह से निवाहा। उसने मुगलराज्य की सीमाको गतकालसे भी कुछ अधिक बढ़ाया और इसी लिये उसे अंग्रेज लोग "दी ग्रेट मुगल एमपरर" (The jreat Moghal Emperow) लिखते हैं, पर उसके समय में ऐसी कोई विशेष घटना नहीं हुई जो इस प्रकरण में प्रयोजनीय समझी जा सके। जहांगीर सन् १६२७ ईस्वी में स्वर्गवासी हुआ और उस का मझला पुत्र शाहजह सिंहासन पर बैठा. इसने भी वाप दादे की अच्छी निवाही। इस के समय में राजदरबार की वाहरी वातें सब ठीक थीं, परं इस के हृदयपर विषयविलासिता के पूर्ण अधिकार करलेने से इस का अन्तरंग जीवन अत्यन्त कलुषित कहाजाता है।

यह विचार लेना वड़ी भूलहै कि अन्तरंग वातोंसे और वाहिरी व्यवहारोंसे क्या संबन्ध है। जैसे जरा सी पारे की खाक रोम रोम से फूट निकलती है वैसे ही मनुष्य के दुष्कर्म वहां तक सर्वत्र सर्वनाश करते हैं जहाँ तक कि उसका संबन्ध हो। स्मरण रहे कि औरंगजेब एक पवित्रात्मा और उद्दंड पुरुष था और पिता के व्यवहारों से ही चिढ़कर ही कठोर नीति का अवलम्बन कियाथा।

औरंगजेब हमारा धर्म--शत्रु था इसी हेतु से हम उसे नीच,नराधम,दुष्ट आदि चाहे जिन अपशब्दों से संबोधन करें पर न्यायबुद्धि से यही कहना पड़ेगा कि वह एक उद्दण्ड और पवित्रात्मा पुरुष था। माना कि उसने भाइयों को धोखा दिया लड़के को मरवा डाला; पर किस लिये ? केवल अपने स्वत्व और अधिकारों की रक्षा के लिये। फिर भी उसका राजसी अधिकारों पर अधिकृत रहना राजश्री के सुख उपयोग करने के लिये नहीं था वरन् अपने पैगम्बरों की आज्ञाओं के निर्वाह करने के लिये था। माना कि हिन्दुस्थान के तख्त पर बैठकर अरब में पैदा हुए नबी की आज्ञानुसार

कार्य्य करना उस की भूलथी पर भूल से काम करने वाला ईश्वर के यहां भी क्षमा पाताहै फिर हमारी मानव समाज में क्यों उसका अनुकरन न किया जाय ।

औरंगजेब के विषयमें विशेष कहना सुनना व्यर्थ है क्यों कि जब उस का रोजनामचा ही आपके सामने पेश है तो आप उसकी रीति नीति की आलोचना स्वयं कर सकतेहैं ।

हमें विशेष आनंद इसबातका है कि अकबर से लेकर शाहजहां तक सब का श्रेणी-बद्ध इतिहास प्रकाशित होचुका है पर औरंगजेब की तवारीख अब तक नहीं मिली थी सो महाशय मुन्शी जी ने उसे भी हिन्दी में अनुवाद कर के मुगलवंशकी तवारीखका मसाला पूरा कर दिया ।

यथानुमान इस ग्रंथको पढ़कर अंतमें आपको यही कहना पड़ेगा

दोहा—होनहार होनी प्रबल, होनी होय सु होय ।
दोष न काहू दीजिये, भलो बुरो नहिं कोय ॥
होनहार होतव्यता, तैसी मिलैं सहाय ।
कै लैआवे ताहिको, कि ताहि वहां लेजाय ॥

मुम्बई
१४ अप्रैल सन् १९०९ ई.

लेखक—
कुँअर कन्हैयाजू.

॥ श्रीः ॥
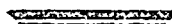
मुगल बादशाह

(१) खण्ड.

मुगलोंकी पीढ़ियाँ आदम ।

अब से ७००० वर्ष पहिले आदम ईश्वरेच्छासे बगैर मा बापके पैदाहुए उस समय मकर लग्न था । शनि मकरमें, बृहस्पति मीनमें, मंगल मेषमें, चन्द्रमा सिंहमें, सूर्य बुध कन्यामें और शुक्र तुलामें थे । आदमका कद ६० गज ऊंचा था फिर ईश्वर ने उनकी बांई पंसली से हव्वा को पैदा करके मर्द औरत का जोड़ा मिलाया इनके २१ लड़के और २० लड़कियां हुई । फिर उनकी भी औलाद बढ़ी यहांतक कि आदम के मरनेके समय उन की सन्तान में पुत्र प्रपौत्र सब मिलाकर ४०००० होगये थे ।

आदम हिन्दुस्तान में मरे । और सरंदीप (सिंहलद्वीप) के पहाड़ पर गाड़े गये जहाँ आदम गाड़े गए उस भूमि की कदमगाहआदम (आदमके चरणों) के नामसे जियारत होती है आदम के पीछे हव्वा मरीं ।

शीस ।

आदम के हव्वा में दोदो बालक एक एक गर्भ से होते थे एक लड़का और एक लड़की । फिर उनका आपस में विवाह करदिया जाता । बड़ा बेटा हाबील था । उसको छोटे भाई काबील ने मारडाला तब शीस अकेला जन्मा । आदम ने अपनी १००० वर्षकी उमर होजाने पर इसीको अपना वलीअहद युवराज बनाया आदम के पीछे यही उसकी जगह पर बैठाया गया यह शाम देश में रहा करता था और विद्याका पहिला आचार्य हुआ यह ९१२ वर्ष का होकर मरा ।

अनूश ।

शीस की ६०० वर्ष की अवस्था होने पर उसका पुत्र अनूश पैदा हुआ और यह ६०० वर्ष जिया । मगर यहूद और नूसारा (मूसाई और ईसाई) इसकी उमर ९६५ वर्ष की बतलाते हैं—इसने बादशाहीकी रीति चलाई ।

केनान।

केनान अपने सब भाइयों में लायक था । इसने बाबुल और सूस दो शहर बसाए । बाग और मकान बनाने की तरकीबें निकालीं । इसके वक्त में आदमी बहुत बढगये थे इसने उन सब को दूर दूर भेजा और आप शीसकी औलाद समेत बाबुलमें रहा । उसकी उमर कोई ९२६ वर्ष की और कोई ६४० वर्ष की बतलाते हैं।

महलाईल।

केनान के पीछे उसका वली अहद महलाईल गद्दी पर बैठा वह ९२६ वर्ष जिया. या ८४० या ८९९.

यर्द (वर्द)

यर्द महलाईल के बेटों में सब से अच्छा था । बाप के हुक्म से बादशाह होकर इस ने नहरें और नदियां निकालीं इसकी उमर कोई ९०२ और कोई ९६७ बताते हैं ये सब यहां तक आदम की जिंदगीमें पैदाहुए थे ।

अख़नूख।

इस को इद्रीस भी कहते हैं। यह यर्द का बड़ा बेटा था । यह आदम के मरने के पीछे पैदा हुआ था । परन्तु कोई कहते हैं कि यह आदम की जिंदगी में ही १०० वर्ष का होगया था और कोई कहते हैं कि ६० बर्ष का था । इसने मिश्र देश के एक गारीमन विद्याननामक विद्वान से हिक्मत सीखी । और लिखने, कातने, बुनने, और सीने आदि की कारीगरी चलाई । ज्योतिष विद्या निकाली लोगोंको सूर्य की सेवा सिखाई जिस की राशि बदलने पर उत्सव करता था । कानून बनाये ७२ भाषाओं में ईश्वराराधना का उपदेश किया, १०० शहर बसाये, मिश्र में बड़े २ गुंबद अहराम के नामसे बनाये जिनमें तमाम कारीगरियों के नमूने और औज़ारों के नकशे हैं कि जो कोई भूलजाये तो उनमें देखले । इसकी उमर मरने के वक्त किसीने ८६९ किसी ने ४०९ और किसीने ३६९ वर्ष की लिखी है ।

मतूशलख़।

अख़नूख़ के बहुत बेटे थे जिन की गिनती मुशकिल से होती थी । उनमें से "मतूशलख़" बाप की जगह बैठा । जब यह ९०० वर्ष का हुआ तब इसको एक बेटा जन्मा जिसका नाम लमक रक्खा गया उसके पीछे २९० वर्ष और जिया ।

लमक ।

म्यद के पीछे गद्दी पर बैठा और ७८० वर्ष जिया ।

नूहपैगंबर ।

लमक का बेटा था । जब आदम को मरे हुए १२६ वर्ष होगये थे तब सिंह लग्न में पैदा हुआ । उस के समय में आदमी बहुत पापी होगये थे इसलिये पानी का तूफ़ान आया और दुनिया सब उस में डूबगई । नूह और ८० आदमी १ नाव में बैठकर बचे । मगर हिन्दुस्तानकी किताबों में जो कई हजार वर्षों की लिखीं हैं इस तूफान (प्रलय) का जिक्र नहीं है ।

कुछ दिनों पीछे उन ८० आदमियों में से भी ७ ही जीते बचे १ नूह और ३ उसके बेटे याफ़त, साम, और हाम और उन तीनों की तीन औरतें ।

नूह ने शाम ईरान और खुरासानका राज्य साम को दिया हबश सिंध हिन्द और सोदान का हाम को और चीनसकलाब और तुर्किस्तानका राज्य याफ़त को दिया । अब तवारीख वालों के मत से तमाम दुनिया के आदमी इन्हीं तीनों की औलाद में हैं ।

फिर नूह १६०० और कईलोगों के मत से १३०० वर्ष का होकर मरा । ९५० वर्ष तक उसका राज्य रहा था ।

हाम ।

हाम के हिन्द, सिन्ध, ज़ंज, नूबा, किनआन, कोश, क़िब्र, बरबर, और हबश नौ बेटे हुवे परन्तु कोई ६ ही बतलाते हैं । सिन्ध और किनआन का नाम नहीं लेते और नूबे को हबश का बेटा बतलाते हैं ।

साम ।

साम के भी ९ बेटे थे । १ अर्फ़खशद २ क्यूमुर्स जो ईरान के बादशाहों का मूलपुरुष था ३ असवाद जिसके बेटे अहवाज़ और पहलव और पहलव का बेटा फारस; फ़ारस ४ यगन जिस के बेटे साम और रूम ५ बूरज़ ६ लाउज़ जिस के

वंश में मिश्रदेश के फ़रऊन बादशाह थे ७ ईलम जिसने खोज़िस्तान बसाया। खुरासान और तंबाल उसके बेटे थे। खुरासानका बेटा इराक़ तंबालके बेटे किरमान और मकरान हुवे ८ इरम जिससे आद जाति के लोग हुवे ९ बुज़र जिसके बेटे आज़ार्बीयजां, आरान, अरपन और फरग़ान थे।

कई लोगों ने साम के केवल ६ बेटे बतलाये हैं। क्यूमुर्स बूरज़ और लाऊज़ का नामही नहीं लिया है।

याफ़त।

नूह ने याफत को पानी बरसानेवाला १ पत्थर * देकर उत्तर और पूर्व में भेजा। पूर्व और तुर्किस्थान की सब तुर्क जाति के खान उसीकी औलाद में से हैं और इसीलिये उस को तुर्कों का मूलपुरुष कहते हैं। कई तवारीख लिखने वाले अलोनज़ा खां भी उसी को बतलाते हैं जिसको तुर्क लोग अपना मूलपुरुष मानते हैं।

याफत के ११ बेटे तुर्कचीन, सक़लाब, मनसज, (मनसक) कुमारी (केमाल खिलज) खिज़र रूस, सदसान,ग़ज़, और यारज हुए। कई किताबों में आठही लिखे हैं। खिलज, सबसान, और ग़ज़ का नाम नहीं है।

तुर्क।

यह बाप के पीछे सीलोल (सलीकाय) नाम एक अच्छी जगहमें रहा। जहां पानी जंगल और चारा बहुत था इसने घास और लकड़ी के घर और जन्त-वरों की खालों के कपड़े तथा डेरे बनाये। उसने बेटा को १ तलवार और बेटी को सब बरबार देने का क़ानून चलाया। वह २४० वर्ष जिया। ईरान का बादशाह क्यूमुर्स उसके जमानेमें था।

---

* इस पत्थर को तुर्क जदाताश फारसी यदा और अरब हजरुलमतर अर्थात् पानी का पत्थर कहते थे उसमें पानी बरसाने का गुण था जिसकी तरकीब तुर्क लोग ही जानते थे।

१ सरदार।

अलंजाखान।

तुर्क के बेटों में अलंजा खां सब से अच्छा था वह इस की जगह बैठा। उसके पीछे उस का बेटा दीब बाकूय, और दीब बाकूय के पीछे क्यूक खां उस का बेटा राजा हुआ। फिर उस की जगह इस का बेटा अलंजाखां बैठा। उस के २ जोड़ले बेटे मुग़ल और तातार हुए जिन के बड़े होने पर उस ने अपना मुल्क दोनों को बांट दिया और मरते वक्त आपस में मेल मिलाप रखने को कहा। तातारके वंश में ८ घराने हुवे और मुग़ल के ९ जिस से वे लोग ९ के अंक को बहुत मुबारक (शुभ) समझते थे।

मुग़लखान।

मुग़ल के ४ बेटे क़राख़ान, आजरखान् करा खान् और एरजखानथे।

क़राखान।

यह क़रा तुरमदेशमें अर्ताक़ और करताक नामक दो पहाड़ों के बीच में रह करता था।

अगूरखान।

यह क़राख़ानकी बडी बेगम का बेटा था इसने ईरान तूरान, रूम, मिश्र, शाम, और फरंगदेश फत्तह करके अपने राजमें मिलाये और पहिचान के वास्ते तुर्कोंके अलग अलग नाम रक्खे जो आजतक चलेआतेहैं जैसे एगूर क़नगली क़बचाक कारलीग़ और खलज वगैरह।

उसके कुन, आई, यल्दोज, कूक, ताक और तंगीज नामसे छ बेटे थे जिनकी औलादमें तुर्कों की २४शाखायें हुई क्योंकि एकएकके ४।४ बेटे हुएथे। इनमें से जो ईरान में जाकर बसे और वहां उन की औलाद हुई उस का नाम ताजीकों (ईरानियों) ने तुर्कमान रखदिया अर्थात् तुर्क जैसे तुर्कमान नाम पुराना नहीं था कोई

---

१ खां और खान तुरकी बोली में बादशाह और सरदार का नाम है तुर्क और मुग़ल जाति के बादशाह कदीम से खान कहलाते रहे हैं आजकल यह समझाजाताहै कि पठान ही खान कहलातेहैं और यह खिताब पठानों का ही है परन्तु इसमें भूल है क्योंकि खान का खिताब पठानों में पहिले नहीं था मुग़ल बादशाहों से उनको मिला है।

कोई तुर्कमान जाति ही को जुदा वताते हैं और कहते हैं कि उन का तुर्कों से कुछ लगाव नहीं है ।

कहते हैं कि जब आगूर खां दुनियां में दिग्विजय करके अप ने घर आया तो एक बड़ा दरवार करके उसने अपने वेटों अमीरों और सब नौकरों को बखशिसों से निहाल करदिया । उसने दहने हाथ की (वैठक जिस को तुर्क वुरुनगार कहते हैं) और वलीअहदी वड़े वेटे और उस की औलाद में रक्खी और जुरनगार यानी वायें हाथ की वैठक और काम की मुखतारी छोटे वेटों को दी और कहा कि यह क़ायदा हमेशे के वास्ते चले सो २४ फिर्कों में से आधे दहने हाथ पर और आधे वायें हाथ पर वैठते रहें । आगूर खां ७२ वर्ष राज करके मरगया ।

कुंनखान[1] ।

फिर कुनखां तख्त पर वैठा और वाप के वजीर अरकीलखान की सलाह से काम करता रहा ७० वर्ष वादशाही करके मरा ।

आईखान[2] ।

इस का वाप इसी को वलीअहद कर मरा था इस लिये उस के पीछे यही वादशाह हुआ ।

यलदोजखान ।

आईखां का वड़ा वेटा था उस के पीछे ख़ान (वादशाह) हुआ ।

मंगलीखान ।

यह यलदोज़खान का वड़ा वेटा था वाप की जगह वैठा ।

तंगीजखान ।

वाप के पीछे ११० वर्ष तक राज करतारहा ।

ईलखान ।

ईलखान के ऊपर ईरान से फ़रदून वादशाह के वेटे तूर ने और तातर से तातार और एगूर के खान सोनज ख़ान ने चढ़ाई की मुग़ल उन से खूब लड़े । वे लोग

---

१ कुन तुरकी में सूरज को कहते हैं । २ आई नाम चांद का तुरकी में है ।

दिन को दगाबाजी से भागगये और रात को फिर ईलखान के लशकर पर चढ आये। बड़ी लड़ाई हुई सारा लसकर कट गया। चार आदमी बचे थे सो पहाड़ में जाकर छुपे १ तो ईलखान का बेटा कयानखान था दूसरा उस के मामू का बेटा तकूज था और दो दोनों की औरतें थीं यह वारदात अगूर खान से १०० वर्ष पीछे हुई।

कयान।

कयान पहाडों में फिरता फिरता एक सजल जँगलमें पहुंचा और वहां सुथान देखकर रहनेलगा उससे जो औलाद हुई वह कयान कहलाई और तकूज की औलादका नाम दरल्कीन हुआ यह लोग २००० वर्षमें बहुत बढ़गये और जब इन्हें अरकनी कूनमें रहने की जगह न मिली तो इन्होंने वहां से बाहर निकलने का विचार किया बीचमें १ पहाड पडता था जिसमें लोहेकी खान थी, उसके गलानेके लिये गेंडोंकी खालों की धोंकनियाँ बनाई और बहुतसी भट्टियां दहकाकर लोहे को पिघलाया इसतरह से रस्ता निकालकर बाहर निकले और तातारवगैरह से अपना मुल्क छुडालिया। मुगलों का मुल्क पूर्व के ऊजड़ प्रांतों में है! उसका गिर्दाव सात आठ महीने के रस्ते का है उसकी सरहद पूर्व में खता की सरहद से पच्छिम में एगूर की सरहद से उत्तर में करगेज़ और सलीकायकी सरहद से और दक्षिण में तिब्बत की सरहद से मिली हुई थी। यह लोग जंगली जानवरों का मांस खाते थे और चमडे पहिनते थे

तेमूरताश।

मुग़लिस्तान में फिर आने के पिछे तेमूर ताश जोकयान के खानदानम से था बादशाह हुआ वह कयान से कितनी पीढीपीछे हुआ था यह कुछ मालूम नहीं होता क्योंकि बीच की पीढियाँ किसी ने नहीं लिखीं मगर तवारीख लिखने वालों ने इसदलील से कि ईरान के बादशाह फरदून के वक्त में तो मुगलों का राज छूटा-

---

१ यह उसपहाड़ का नाम था। २ नौशेरव ईरान का फारसी बादशाह था। संवत् ५८८ मेंतखत पर बैठा था और संवत् ६३६ में मेरा मैंने इसका जीवन-चरित्र उर्दू में लिखाहै।

था और नौशेरखां के वक्त में फिर उनके हाथ आया इनदोनों बादशाहों का ज़माना २००० वर्ष के लगभग है ऐसा अनुमान किया है कि कयान खानकी औलाद २०००वर्ष तक पहाडों में रही थी। उसमें पहिले ४००० वर्षोंमें २८ पीढियां हुई थीं तो उस हिसाब से तो इन २००० वर्षों में २९ हुई होंगी।

मंगलीख्वाजा।

तेमूर ताश का बेटा उसके पीछे मुगूलिस्तानका बादशाह हुआ।

यलदोजखान।

मंगलीख्वाजा का बेटा अरकनाकून से आनेके पीछे बडा बादशाह हुआ जिस ने मुगलों को बसाया और सुख दिया उस के पीछे मुगलों में वही आदमी खानदानी और सरदारी के लायक समझा जाता था जो अपनी पीढीयां यलदोज-खान से मिला देता था।

जोईनाबहादुर।

यलदोजखान का बेटा बाप के पीछे तख्त पर बैठा।

आलनकुवा।

यह जोईना बहादुर की बेटी थी इस का विवाह चचेरे भाई जबून बयान के साथ किया गया था जो कुछ वर्षों पीछे ही मरगया था आलनकुवा १ रात में सुख से सोई हुई थी कि एक अद्भुत प्रकाश डेरे में आकर नाक और मुंह के रस्ते से उस के अन्दर उतर गया और जैसे कि मरयम कुंवारी ही गर्भ से होगई थी वैसे ही यह विधवाभी उस नूर (तेज) से होगई। यह प्रकाश हमेशा उस के डेरे में होजाता था और उस से उस का भी तेज बढ़ता जाता था ओछी समझ के लोग यह विचित्र चरित्र देखकर आलनकुवा को कलंक लगाने लगे तो उसने अपने सरदारों बुलाकर सब भेद बताया और कहा कि तुम लोग रात दिन पहरा रखकर देखलो कि क्या बात है उन्हों ने ऐसाही किया तो आधीरात को देखा कि एक

---

१ यह हिसाब अटकल पच्चू है इससे जाना जाता है कि मुगलों के पास पुरानी तवारीख नहीं थी। २ इसापैगमबरकी मां।

नूर चांद जैसा चमकताहुआ ऊपर से उतरा और बेगम के डेरे में चलागया इस से सब लोगों का बेगम के कहने का यकीन होगया और दिलों में जो शक था सो सब जातारहा ९ महीने पीछे बेगम ने ३ बेटे जने।

१ "बूक़ीन, कतकी" जिससे कतकीन कौम पैदा हुई।

२ "बूसकी, सालजी" जिस से सालजियोत लोग हुए।

३ बूजेंजर काआन।

इन तीनों भाइयों की औलाद मुगलों में मुख्य मानी जाती है और उस को नीरून अर्थात् तेज वंशी कहते हैं।

बूजञ्जर काआन।

वह जब बडा हुआ तो तूरान के तख्त पर बैठा तुर्क और तातार वगैरह जो अलग २ अपने खानों के तावेदार थे सब उसके हुक्म में होगये वह अबू मुसलिम[1] मखजी का समकालीन था।

बूका काआन।

बूकाखान बूजेंजर काआन का वडा बेटा था उसने बाप के पीछे न्यायनीति और राजरीति से प्रजापालन किया।

दोतोमनेन खान।

यह बूकाखानका बेटा था बापने अक्लमंदीसे अपनी मौत का वक्त मालूमकरके इसको अपनी जगहपर बैठा दिया इसके ९ बेटे हुए जिनमें नवां भाई कायदूखान था वह तो अपने चचेरे भाई मार्चीनके पास गया हुआ था और बाकी भाई अपनी मा मनूलून के पास थे। दोतोमनेनखान के मरे पीछे १ दिन दरलकीन कौममेंसे जलायर जातिके लोगोंने काबू पाकर उन सबको मां समेत मारडाला जब मार्चीनको यह हाल मालूम हुआ तो उसने जलायर लोगों को बहुत दबाया जिससे उन्होंने अपना कसूर कबूलकरके ७० आदमियों को जो उनलोगों के मारने

---

[1] अबू मुसलिम १ बड़ा सरदार था उसने बनीउमैया जाति के खलीफों का राज छीन कर अब्बासीखलीफों को सन् १३२ हिजरी संवत् ८०६ में दिलादिया था जिसको सन् ६५६ संवत् १३१४ में मुंगलों ने नष्टकर डाला।

न शरीक थे मारडाला और उनके वालबच्चों को बांधकर क़ायदूखान के पास भेजदिया क़ायदूख़ानने उनके माथोंपर गुलामी के दाग़ लगाकर उन्हें छोड दिया।

क़ायदूखान।

माचीन की मदद से तख्तपर बैठा मुल्क में आबादी बढाई जलायर लोगों से और उससे कई लडाइयां हुईं।

बाय संगरखान।

क़ायदूखान के ३ बेटों में से बडा बायसंगरखान बापके पीछे उसकी जगह पर बैठा।

तोमनाखान।

बापने मरते हुवे इस सपूत बेटे को राज सौंपा जो बहादुर था और अकलमंद भी था उसने मगूलिस्तान और तुर्किस्थान के बहुतसे विभाग अपनी बापोती के राजमें शामिल किये। उसकी दो बेगमें थीं एक से सात बेटे हुवे और दूसरी से दो जोड़ले एक क़बल और दूसरा काचूलीबहादुर—काचूली को १ रात यह सपना आया कि क़बलखान की गोदमें से एक तारा निकलकर आकाशमें चढा और अलोप होगया। ऐसा ३ बार हुआ चौथी बार फिर बडा तारा निकला जिसका उजाला दुनियां में फैलगया और उससे कई तारे और भी चमके जिनसे अलग अलग प्रांतों में रोशनी होगई। फिर जब बड़ा तारा अलोप हुआ तो उसका प्रकाश वैसा ही बनारहा। काचूली की जब आंख खुली तो वह उस सपने का फल सोचनें लगा कि इतने में फिर उसकी आंख लगगई और अब उसने फिर दूसरा सपना देखा कि उस की गोद से ७ बार एक तारा चमका और अस्त होगया। आठवीं बार बहुत बड़ा तारा निकला जिसने तमाम दुनियाँ में उजाला करदिया और उससे कई छोटे २ तारे और निकले जिससे पृथ्वी के प्रत्येक कोनों कुचालों में रोशनी हो गई. जब वह बड़ा तारा डूबगया तो दुनियाँ में उसी तरह उजाला बनारहा और दूसरे तारे भी वैसे ही चमकते रहे.

दिन निकलते ही काचूली ने सारा हाल अपने बाप से अर्ज किया तो मनाखान ने कहा कि क़बला खान के ३ शाहज़ादे तख्त पर बैठेंगे और राजकरेंगे लेकि

चौथी वेर इनके पीछे १ वादशाह प्रकट होगा जो दुनियाँ के वहुतसे देशों को फतह करेगा उसके कई वेटे होंगे जिनमें से हरेक एक एक मुल्क में राज करेगा और काचूली के ७ वेटे सरदारी करेंगे आठवां दुनियाँ को फतह करेगा और उसके वेटों में से हरेक एकजिले का हाकिम होगा.

फिर तोमनाखांन के कहनेसे दोनों भाइयों ने आपस में यह अहदनामा किया कि तख्त का मालिक तो कवलखान रहे और फ़ौज का काम काचूली करे इसी तरहसे दोनों की औलाद भी पीढी दर पीढी चलती रहे।

यह अहदनामा गौरी खेत में लिखा गया जिसपर (१) तातारी (२) लिपि दोनों भाइयों की मोहर होनेके पीछे तोमना खानने भी आल तमगा अर्थात् अपनी लाल मोहर करदी थी.

कबलखान।

तोमनाखानके पीछे कवलखान वादशाह हुआ और काचूली वहादुर उसका काम करता रहा उसवक्त खताका वादशाह अलतान खान था उसने कवलखानसे दोस्ती करके उसको अपने पास बुलाया कवलखान काचूली को राजसौंपकर खता में गया दोनों खानों में खूब मेलमिलाप रहा मगर जव कबलखान रुखसत होकर अपने देशको रवाना हुआ तो लोगोंने अलतानखानको वहका कर कुछ सवार कवलखान को लौटालाने के लिये भेजे कवलखान तो हाथ न आया वल्कि कई सवारों को जो उसतक जापहुंचे थे मार कर निकलगया। मगर उसका वड़ा वेटा कनवरकान भागताहुआ तातारियोंके पंजे में फंसगया वे उसको पकडकर अलतानखानके पास लेगये अलतानखानने अपने आदमियों के वदले में उसको मरवाडाला कवलखानने वापस आकर छोटे वेटे कुवीलाखानको वली अहद किया और वही उसके पीछे मुग़लिस्तान का खान हुआ।

कुबीलाखान।

कुवीलाखा ने खान होते ही भाई का वैर लेने केलिये वड़ी भीड़ भाड़ से खता पर चढाई की और अलातानखां को लड़ाई में हराकर उसका माल असवाव लूट लिया।

---

१ मुगल वादशाहों में यह दस्तूर था कि जिस कागज पर लाल मोहर छाप करदेते थे वह सदाके लिये पक्का होजाता था।

वरतान बहादुर ।

कुबीलाखां के पीछे उसका भाई वरतान खान हुआ । यह ऐसा बहादुर था कि उससे कोई लड़ने को न आया इसलिये लोग उसको बहादुर कहने लगे इसके जमाने में काचूलीबहादुर मरा और उसका बेटा अरूमची बरलास सिपहसालार (सेनापति) हुआ यह बडा बहादुर था इसलिये उसको बरलास का खिताब मिला था जिसका अर्थ बहादुर है । बरलास जाति के मुगल सब इसीकी औलाद में हैं ।

बीसूकाय बहादुर ।

वरतान बहादुर के पीछे उसके ४ बेटों में तीसरा बेटा बीसूकाय बहादुर तख्त पर बैठा । इसके वक्त में एक रूमची बरलास मरा और उसके २९ बेटों में से बड़ा " सूगूचचन सिपहसालार हुआ । बीसूकाय बहादुर ने उसकी सलाह से तातार पर चढाई की और जब वहां से जीत पाकर गांव देलूनयलदाक में आया तो २० जीकाद सन् ५४९ हिजरी (फागण वदि ७ सं० १२११) को उसकी बीबी बिकूलनअंगा से लड़का पैदा हुआ जिसका नाम बीसूकाय बहादुरने तमूचीन रक्खा सूगूचचन ने कहा कि यह वही सितारा है जो चौथी बार कबलखान की गोद से निकला था ।

तमूचीन तुला लग्न में थे राहू तीसरे और केतू नवें घर में था और कोई कहते हैं हिजरी सन् ५८१ संवत् १२४२ में जबकि तमूचीन ने रून जाति की सारी कौमों का सरदार हुआ था सातों ग्रह तुलाराशि में इकट्ठे हुए थे ।

तमूचीन ।

सन् ५६२ (सं० १२२२ । २४) में वेसूकायबहादुर के मरने पर तमूचीन १३ वर्ष की उमर में तख्तपर बैठा । कुछ दिनों पीछे सूगूचिचन मरगया उसका बेटा कराचार नूयान भी छोटा ही था जिससे नेरून जाति के लोग तमूचीन से बदल कर सालजयोत[1] लोगों से मिलगये तमूचीन पहिले तो उन के हाथों से तकलीफ पाता रहा और एक बार कैदभी होगया था मगर फिर जो ईश्वर कृपा

---

१ जफ़रनामे में तानजूत नामसे लिखा है पर सही सालजयोत मालूम होता है ।

हुई तो उसने सब बलाओं से बचकर जामूका सालयूत कनकरात और जलाकर वगैरह कौमों से खूब लड़ाइयां कीं जब उसकी उमर ३० वर्ष की हुई तो उसने अपने सब खानदानों का हाकिम होगया और ४० वर्ष की उमर में तुर्किस्तान के कईखानों के दुशमन होजाने से कराचार नूयांन की सलाह मान कर कौम करायत के हाकिम आवंगखां के पास गया जो उसके बाप का दोस्त था और उसके वास्ते कई अच्छे अच्छे काम और संग्राम किये खान भी बहुत महरबानी करता था जिससे वहां के बड़े बड़े खानें और खान के खानदानवालों ने ईर्षा से खान के बेटे शंक्र को बहकाया. और उसकी मारफत तमूचीन की बुराइयां कराकर खान का दिल भी उस से फिरादिया। तब तो तमूचीन बहुत घबराया और करा-चारनूयांन के उपाय करने पर वहांसे निकला और रस्तेमें दोबार उनलोगों से बडी २ लड़ाइयां लड़ा और जीता फिर ४९ वा ५० वर्षका होकर सन ५९९ के रमजान (संवत १२६० के जेठ सुदी) में बादशाह हुआ तीन वर्षपीछे तंकरी नाम एक देवताने उसका नाम चंगीजखान (बादशाहों का बादशाह) रखा उसदिन से उसका पराक्रम और प्रताप बढनेलगा। खता, खुतन, चीन, माचीन, कुबचाक, सकीन, बुलगार, आस, रूस, और आलन वगैरह तमाम मुल्कोंमें उसका राज्यहोगया। उसके ४ बेटे जूजी चगताई, औकदाई, और तूली थे।

दरबार और शिकारका काम जूजी को, इनसाफ और दंडदेनेका चगताई को राजका ओकदाई को और फौजका काम तूली को सौंपा गयाथा।

हिजरी सन ६१५ (सं० १२७५) में चंगीजखांने "ख्वारजम" के बादशाह सुलतान मोहम्मदके ऊपर चढाई करके उसदेशको गुस्सेसे कतल करडाला फिर उसने आमूया नदीसे उतरकर बलखपर धावाकिया और तूलीखां को खुरासानपर भेजा। ईरान और तूरान फतह होनेके पीछे चंगेजखां बलखसे तालकानमें आया वहांसे

---

१ तुरकी, भाषा, में, तंकरी, वा, तंगरी, परमेश्वर, का, नामहै । २ यहां से चंगीजखां की चढ़ाईयां मुसलमानी मुलकों पर होने लगी थीं।

सुलतान जलालुद्दीनके ऊपर चढा और उसको सिंधनदी तक भगाकर तूरान होता हुआ अपनी जन्मभूमी में लौट आया। यहां चार सफरसने हिजरी ६२४ (माहसुदि ६ संवत् १२८२) *को तंगकूत देशकी सीमामें मरगया परन्तु पहिले ही यह कह चुकाथा कि जो म इससफर में मरजाऊं तो मेरे मरने को छुपाये रक्खें जब तक कि तंगकूतवालों का पाप न कटजावे और दूरदेशों में बखेड़ा न पडे। उसके बेटों और अमीरों ने ऐसाही किया यहांतक कि तंगकूत वाले बाहर निकले और मारेगये फिर इसकी लाशका संदूक लेकर चले और जो आदमी मिला उसको मारते गये कि जिससे यह खबर इधर उधर न फैले १४ रमजान (भादो सुदि १९ संवत् १२८४) को बडे लशकर में पहुँ-चने पर यह बात जाहिर हुई और लाश एक दरख्त के नीचे गाडी गई जिसको एक दिन चंगीजखां ने अपनी कबर के वास्ते पसंद कर लियाथा। जहां थोडे ही दिनों में ऐसी सघन झाडी हो गई कि जिस में कबर छुपगई और फिर किसी को उसका पता नहीं लगा कि कहां थी।

चंगीजखां ने ७४ वर्ष की उमर पाईथी जिसमें से २९ वर्ष राज और दिग्वि-जय में बीते थे वह कराचारनूयान की सलाह से राज करता था मरने से कुछ पहिले उसने सब बेटों और अमीरों को जमा करके खानी (बादशाही) ओकदाईको दी काचूली और कबलखान का अहदनामा खजाने से मंगाकर सब के सामने पढा जिस तोमनाखानसे लेकर चंगीजखान तक सब खानोंने अपनी २मोहरें कीं थीं उसने कहा मैंने भी इसी अहदनामके मवाफिक कराचारनूयानके साथ बरताव कियाहै तुमभी ऐसेही करते रहना। फिर उसने एक और अहदनामा ओकदाई और दूसरे बेटों तथा भाई बंदोंसे आपसमें लिखाकर ओकदाईको सौंप दिया कि तूरान तुर्किस्तान ख्वारम ऐगूर काशगर बदखशां और गजनीन के देश सिंधु नदीतक चगताई को दिये और

---

* सन् आर संवत् का मीलाने नहीं होता। ज्ञात हो कि हिजरी सन् और संवत् का अंतर सदा एक सा नहीं रहता अपने संवत्में लौर होनेसे ३६५$\frac{१}{८}$ दिनका वर्षहोता है और हिजरी सन् का कुल ३६० दिनका, अतः सन् हिजरी से संवत् निकालने की विधि यह है कि सन् में से उसके ३ सैकड़ा घटा देवे कि ६७९ नौ बढावे तो संवत्बनजायगा जैसे ६१५ में १८ घटाये तो रहे ५९७ उसमें ६७९, १२७६ इत्यादि।

वह अहदनामा कवलखानं और काचूली वहादुरका भी उसीको सौंपा और कहा कि कराचारनूयान के कहने से कभी वाहर मत होना और उसको अपने मुल्क वा मालमें शरीक समझना फिर चगताई और कराचारनूयान के वीचमें वाप वेटेका सा नाता कायम कर दिया जिस से कराचारनूयान की औलाद भी चगताई कहलाने लगी।

चग़ताई खान।

चगताईखानने वापके पीछे पेशवालीग नाम शहरको अपना राज्यस्थान वनाया और सारा काम अपने राजका कराचारनूयान को सौंप दिया। आप वहुधा ओकदाई का आनकी खिदमत में रहा करताथा उमर में उससे वड़ाथा तो भी वाप के कहने से उसकी वंदगी में कुछ कसर नहीं रखता था। ओकदाई काआन से ७ महीने पहिले जीकाद सन् ६३८ के शुरू (द्वि०वैशाखसुदि संवत् १२९७) में मरगया कराचारनूयानने उसके पोते और मवातकान के वेटे कराहलाकूखान को गद्दी पर वैठाया।

कराहलाकूख़ान।

उधर ओकदाई काआन ने अपने वेटे कूचू को वलीअहद किया था वह वाप की जिंदगी में ही मरगया तो उसका वेटा शेरामून वली अहद हुआ और वही दादा के पीछे काआनी की गद्दी पर वैठा। मगर तीनचार वर्ष वाद उसका काका कयूकखान रूस की तर्फसे आकर काआन हुआ और उसने कराहलाकूखां को उठा कर यसूमनका को चगताईखान की गद्दी पर वैठाया।

यसूमनका।

यह भी चगताईखान का वेटा था और मवातकान का भाई था इसके मरने पर कराचारनूयानने फिर कराहलाकूखान को गद्दी पर वैठा दिया।

फिर कराहलाकूखान।

अव इसके राज में सन् ६५२ (सं०१३११) में कराचारनूयान ८९ वर्ष का होकर मरा उसके १० वेटों में से एजेलनूयान अपने वाप का काइममुकाम हुआ।

---

१ सम्राट् शाहंशाह। २ यहां से तवारीख हवीवुलसियर की भी कुछ वातें लीगई हैं।

मुबारकशाह ।

कराखां के पीछे उसका बेटा मुबारकशाह बादशाह हुआ। उसे चगताईखान के पोते और यामदार के बेटे अलगूखानने कुछ दिनों के लिये निकालकर तख्तछीन-लिया था मगर उसने सन् ६६२ (सं० १३२० । २१) में फिर अपना मुल्क लेकर एजलनोयानको मुखतारी का काम देदिया जिससे सब चगताई राजी होगये ।

बराकखां (बराक औगलान)

उधर मगूलिस्तानमें तोली खान का बेटा मंगूखान कयूकखांनको निकालकर आप काआन होगया था । उसका भाई कुबेलाखान चीन और खता का बादशाह था उसने मुबारकखान के चचा बराकखान को तूरान की बादशाही दी ।

नेकबेखान और बूकातैमूर ।

ये भी चगताईखान के पोते थे बराकखान के पीछे दोनों बारी बारी से थोडे २ दिनों बादशाही करगये फिर बराकखानका बेटा ददाखान बादशाह हुआ ।

इन बादशाहों की पलटापलटी के बखेडेसे एजलनोयान काम छोड़ कर कश में जाबैठा जो उसकी जागीर का शहर था मंगूकाआन ने उसको अपने भाई हलाकूखान के साथ ईरान में भेजा उसने तबरेज़ की वलायत में मरागा नाम परगना एजल नोयान को देकर बड़ी इज्जत से अपने पास रक्खा.

ददाखान ।

ददाखान जब तूरान के तख्त पर बैठा तो उससे अमीर एजलनोयान के बेटे अमीर एलंकज को अपना सिपहसालार बनाया बाद अपना धर्म छोड कर मुसल-मान होगया.

ददाखान के पीछे ९ बादशाह ।

१ कंजूखान ददाखान का बेटा ।

२ यालीगूखान, कदाईखान का बेटा, बूरीखानका पोता मवातूकान का परपोता।

३ एनसबूकाखान, ददाखानका बेटा ।

४ कीकखान ददाखान का बेटा सन् ७२१ (सं० १३७८) में मरा ।

५ कीककंक, कीकखान का बेटा ।

६ लालकश्त

७ एल, जकदाई, खान ।

८ ददातेमूर ददाखान का बेटा ।

९ तरमशेरीनखां बूरान का बेटा ददा तेमूर का पोता ।

तरमशेरीनखान ।

इसके राज में अमीर अलंकज मरा उसका बेटा अमीर बरकुल अपना बापोती का काम चचेरे भाइयों को देकर कश में आराम से रहनेलगा, उसका बेटा अमीर तुरागाई था और तुरागाई का बेटा अमीर तैमूर भी तरमशेरीनखां के वक्त मेंही (सन् ७३६ सं १३९३) में पैदा होगया था ।

हम यहां से चंगेजखानी बादशाहोंको छोड़कर तैमूरिया बादशाहोंका सिलसिला छेड़तेहैं जो ३०० वर्षके लग भग हिन्दुस्तानमें अपनी डोंडीपीटते रहे थे और चंगेजखांके पोतों को कई पीढी तक हमले करनेपर भी कुछ लाभ न हुआथा ।

इन हमलों का हाल भी हिन्दुस्तानकी तवारीख जानने की इच्छा रखनेवालोंके लिये उपयोगी होनेसे आईन अकबरी और तवारीख फरिश्ताके आधार पर हमला करनेवालों के नामों सहित यहां लिखदेतेहैं ।

हिन्दुस्तानपर मुगलोंके हमले और हमलाकरनेवाले मुगल ।

१ चंगेजखान ।

सन् ६१८ (संवत् १२७५) में खुद चंगेजखान ख्वारजमके बादशाह जलालुद्दीन का पीछा करताहुआ सिंधु नदीतक आया और कई हजार हिन्दूमुसलमानों को पकड़लेगया उसवक्त हिन्दुस्तानका बादशाह सुलतान शमसुद्दीन एलतमश और सिंधका नासिरुद्दीन कबाचा था जलालुद्दीन सिंध में दो वर्ष तक नासिरुद्दीनसे लड़ता और उसका मुल्क लूटता रहा ।

---

१ ये हमले ईरान और तूरान की तर्फसे होतेथे क्योंकि दोनों देशों में मुगलो का राज्य था ।

२ तरमतीनोईन ।

चंगेजखां के बड़े अमीरों में था सुलतान जलालुद्दीन के पीछे आकर मुलतान पर कबजा कर बैठा नासिरुद्दीन कबाचाने बड़ी मुश्किलोंसे उसे निकाला ।

३ चगताई खान ।

फिर चंगेजखानने अपने बेटे चगताईखानको जलालुद्दीनके पकड़ने को भेजा जलालुद्दीन तो ईरानकी तर्फ निकलगया और चगताईखांने सन् ६२० (सं० १२८०) में मुलतानको घेरा पर लशकरमें बीमारी फैलने से तीस चालीस हजार हिन्दुस्तानियोंको जो उसके लशकरमें कैदथे कतल करके तूरान को कूच किया ।

४ ताहर ।

ताहरने जो चंगेजखांके अमीरोंमें से था पंजाबमें आकर १९ जमादिउल आखिर सोमवार सन् ६३९ (माह वदि २ सं० १२९८) को लाहोर को घेरलिया वहां का हाकिम मलिक कराकश कुछ देर ल[illegible]र आधी रात को दिल्ली की तर्फ चलदिया मुगलों ने कायदे के मुवाफिक शहर को लूटा खराब किया और बहुत से आदमियों को पकड़ा शमसुद्दीन के बेटे मोअज्जुद्दीन बहरामशाह ने यह खबर सुनकर फ़ौज भेजी तो मुगल चले गये ।

५ मुगलों की फौज ।

सन् ६४२ (सं० १३०१) में जब कि मोअज्जुद्दीन का भाई अलाबुद्दीन मसऊदशाह दिल्ली का बादशाह था तभी मुगलों की फौज बंगाल में आई । बादशाह ने लखनौती के हाकिम तुग़ाखान की मदद के वास्ते फ़ौज भेजी जिससे मुगल हार कर लखनोती से चलेगये ।

६ मनकोया ।

सन् ६४३ (सं० १३०१) को मनकोया मुगलने कंधार औरतालकां की तर्फ़ से सिंध में पहुँचकर उच्च के क़िले को घेरा । सुलतान अल्लाबुद्दीन मसऊदशाह खुद उससे लड़ने को गया जब व्यासनदी पर पहुंचा तो मुग़ल भागगये ।

७ फिर मुगलों की फौज।

सन् ६५९ के अखीर (सं० १३१४) में, जब कि सुलतान नासिरउद्दीन दिल्ली की बादशाहत पर था, मुगलों की बहुतसी फौज उच्च और मुलतान पर आई बादशाह चार महीने अपना लशकर जमा करके उसके मुकाविले को गया मगर मुगलसेना लडे विनाही पीछी चली गई।

८ हलाकूखान का वकील।

सन् ६५८ के रवीउल अव्वल महीने (संवत १३१६ के माह या फागुण) में ईरान के बादशाह हलाकूखान का वकील दिल्लीमें आया। गयासुद्दीन बलबन जो उन दिनोंमें वडा वजीर था ५० हजार सवार दो लाख पैदल २ हजार जंगी हाथी और ३ हजार गाडियां आतिशबाजी को लेकर वडी धूमधाम से नौबत और नकारे वजाता हुवा पेशवाई को गया और वकील को हिन्दुस्तान की बादशाही का सारा ठाटपाट दिखाता हुआ उसे बादशाह के हजूर में लाया उसदिन दरबार भी ऐसी शानशौकत से सजाया गया था कि जिसके देखते ही वकील की भी आंखें चकरा गई।

९ सारीनूयान।

फिर तूरान की तरफ से सारीनूयान वडा भारी लशकर लेकर सिंध में आया। सुलतान नासिरुद्दीनने अलगखां (गयासुद्दीनबलबन) को उस के मुकाबिले पर भेजा पीछे से खुदभी रवानेहुआ यह खबर सुनते ही सारीनूयान लौट गया।

१० तैमूरनूयान।

जब हालाकूखान का पोता और अयाकखान का वेटा अरगूखान ईरान के तख्त पर बैठा तो तैमूरनूयान जो हिरात कन्धार बलख बदखशां गजनी गोर और वामियां वगैरह का हाकिम था पिछले वर्ष की हार का वदला लेने के लिये बीस हजार सवारों से लाहोर और देपालपुर को लूटता हुआ मुलतान पर आया तो वहां सुलतान गयासुद्दीन बलवन के वेटे कदरखान से लडाई हुई जिस में कदरखान जिस का दूसरा नाम सुलतान मोहम्मदखां भी था मारागया और मुगल लूटमारकर के लौटगये इस के बाद फिर ७ वर्ष तक उन का कोई लशकर हिन्दुस्तान में नहीं आया।

११ मुग़लोंका फिर आना।

सुलतान मोअज्जुद्दीन के कुबाद के वक्त में जो सन् ६९९ (संवत् १३४३) में बादशाह हुआ था, फिर मुग़लों का लशकर लाहोर के पास आया मगर वह मलिक यारबेग वगैरह दिल्ली के अमीरों से लड़ाई हार गया बहुत से मुग़ल मारे गये और बहुत से दिल्ली में पकड़े आये ।

१२ अबदुल्लाहखान।

सन् ६९१ (संवत् १३४९) में अबदुल्लाहखान एक लाख सवार लेकर काबुल के रस्ते से हिन्दुस्तान पर आया । दिल्ली से सुलतान जलालुद्दीन फीरोज खिलजी उस के मुकाबिले को गया पिशोर के पास बड़ी लड़ाई हुई बहुत मुगल मारे गये कुछ सरदार उन के कैद हुवे फिर कुछ भले आदमियों ने बीच में पड़कर सुलह करादी । अबदुल्लाहखान ने जो हलाकूखान का दोहिता था सुलतान को बाप बनाया और सुलतान ने भी उस को बेटा कहा दोनों अपने २ लशकर से सवार होकर आये और मिले फिर दोनों तर्फ से सोगातें ली दी गईं । अब्दुल्लाह खान तो लौट गया मगर अलगूखान जो चंगेजखां का दोहिता था और चारहजार मुग़ल जोरू बच्चों समेत सुलतान के पास रहगये सुलतान ने अलगूखां को मुसल-मान करके अपना जमाई बनालिया ।

१३ ददाखानके १ लाख मुगलोंका आना।

सन् ६९६ (सं० १३५४) में अलाउद्दीन के बादशाह होने पर तूरान के बादशाह ददाखान ने एक लाख मुगलों को सिन्ध पंजाब और मुलतान फतह करने के लिये हिन्दुस्तान को रवाने किया । अलाउद्दीन ने यह सुनकर अलगूखान और जफ़रखान को भेजा लाहोर के पास लडाई हुई १० हजार मुगल मारेगये और बहु-तसे कैद होकर कतल हुए ।

१४ सलदी, वा, चलदी, मुगल।

सन् ६९७ (संवत् १३५५) में जब कि दिल्ली का लशकर गुजरात फतह करने को गया हुआ था सलदी ने अपने भाई और बहुत से मुगलों के साथ सिन्ध में आकर सेवस्थान का किला फतह कर लिया । सुलतान अलाउद्दीनने जफरखांको

भेजा । उस ने सेवस्थान फतह करके सलदी, उस के भाई और १७०० मुगलों को जिन के जोरू बच्चे अलग थे पकड़ा और बादशाह के पास भेज दिया ।

सन् ६९७ के अखीर (संवत १३५५) में ददाखान का बेटा कतलकख्वाजा दो लाख मुगलों के साथ तूरान से आकर सिन्ध नदी से उतरा और दिल्ली तक बढ़ाचला आया । कहीं लूट मार नहीं की तो भी हर जगह से इतने औरत मर्द दिल्ली में आकर जमा होगये थे कि बाजारों और मसजिदों में कहीं खड़े रहने को भी जगह नहीं थी । नाजपानी आने के रस्ते बन्द होगये थे सुलतान अलाउद्दीन ने अमीरोंको बुलाकर लश्कर जमा करने का हुक्म दिया । परन्तु अमीर तो पहिले से घबराये हुए थे तरह २ के बहाने करते थे पर बादशाह ने नहीं माना तीन लाख सवार और २७००० जंगी हाथियों से लड़ने को गया । हिन्दुस्थानमें दिल्लीलेनेके पीछे फिर कोई इतनी बड़ी लड़ाई नहीं हुई थी । आखिर अलावुद्दीन जीता मुगल इतने बहुत मारे गये कि सब मैदान और जंगल उनकी लाशों से पट गया और कतलकर-ख्वाजा ऐसा जी छोड़कर भागा कि उसने हिन्दुस्तानियों के डरसे तीस कोश तक पीछे फिरकर न देखा.

१५ तुरगीमुगल ।

सन् ७०२ सं० १३६०) में जब कि सुलतान अलावुद्दीन चित्तोड़ के किले को घेरे हुवे थे तुरगी मुगल हिन्दुस्तान को लूटने आया, सुलतान चित्तोड़ फतह करके जलदी से दिल्ली को लौटा मगर उसके पहुंचनेसे पहिले तुरगी एक लाख बीस हजार सवारों से दिल्ली के पास जमना तक पहुंचगया था । बादशाहका बडा लशकर दक्खनमें वारंगल फतह करने को गया था और बहुत से बड़े बड़े अमीर जागीरों में थे और मुगल दिल्ली में घुस २ कर लूट मार कर जाते थे बादशाह हैरान था कि क्या करें तो भी वह दिल्ली से निकलकर लड़ने को गया तुरगी बहुत सा माल लूट चुका था इसलिये मुकाबिला किये बगैर दो महीने पीछे दिल्ली से चलागया ।

१६ अलीबेग और तरताल ख्वाजा ।

सन् ७०४ (सं० १३६१) में चंगेजखां का नवासा[1] अलीबेग और तरताल ख्वाजा ३०।४० हजार सवारों से सवालक पहाड के नीचे २ अमरोहे तक चलाआया

---

१ दोहिता ।

और लूट मार करने लगा। सुलतान अलाउद्दीन ने मलिकगाजी तुगलक को बहुत से लशकर के साथ भेजा। मलिकगाजी मुगलों से लड़ा और जीता दोनों सरदारों और बहुतसे मुगलों को बादशाह के पास पकड़ लाया बादशाह ने सबको अपने सामने मरवाडाला ८००० मुगलों के सिर और २० हजार घोड़े लूट में आये थे बादशाहने घोड़े तो अमीरों को बांटदिये और मुगलों के शिर गारे और पत्थर की जगह बुर्जों की भरती में डलवाकर मलिकगाजी तुगलक को पंजाब का सूबेदार करदिया।

१७ कपकमुगल।

सन् ७०५ (संवत् १३६२) में कपक नाम मुगल जो ददाखां के उमदा अमीरों में से था अलीबेग और तरताल ख्वाजा का बदला लेनेके लिये सुलतानकी तर्फ से सवालक पहाड़में, आया मलिक गाजीने सिंध नदी पर जाकर रस्ता रोक लिया जब मुगल लूटका माल लेकर वापस जाने लगे तो धावा करके कपक को पकड़ लिया और दिल्लीमें भेज दिया जहां वह और उसके साथी हाथियोंसे घिस्टावा कर मारेगये और उनके शिरोंसे बदाऊँ दरवाजे के बाहर जंगल में १ बुर्ज बनवाया गया और उनके जोरू बच्चे हिन्दुस्तानके शहरोंमें बिकवादिये गये ५०। ६० हजार मुगलों में से केवल तीन चार हजारसे जियादा जीते नहीं बचे.

१८ इकबालमंद।

थोडे ही दिनों पीछे इकबालमंद नामका एक मुगलसरदार हिन्दुस्तान में आकर फिसाद करने लगा, मलिक गाजीने चढ़ाई करके उसको भी मारडाला और बहुत से मुगलोंको पकड़ कर दिल्लीमें भेज दिया, जहां वे हाथियों के पैरोंमें कुचलवा दिये गये। इसके पीछे फिर कोई चढाई मुगलों की तूरानकी तर्फसे सुलतान कुतुबुद्दीनके तख्त तक नहीं हुई और मुगल ऐसे डरगये थे कि मलिक गाजी तुगलक हरसाल पंजाब से काबुल गजनी कंधार और हिरात तक धावे मार मार कर उनके इलाकों को लूटता था।

१९ ईरानके मुगलबादशाह खुदाबंदे सुलतान कुतुबुद्दीनसे सुलह कर लेना।

ईरानके मुगलबादशाह सुलतान खुदाबंदा ने ख्वाजा रसीद को सुलतान अला-

वुद्दीन के बेटे कुतुबुद्दीनके पास जो सन् ७१७ (संवत् १३७३) में तख्त पर बैठा था ख्वाजा रसीद को भेजकर सुलह और दोस्ती करली।

२० तूरानके बादशाह तरमशरीनखां का हमला।

सुलतान कुतुबुद्दीनके पीछे मलिकगाजी तुगलक चार वर्षतक हिन्दुस्तानका बादशाह रहा उसके वक्तमें तो मुगलों की कोई चढाई न हुई मगर उसके बेटे मोहम्मद तुगलक के तख्त पर बैठने के दो वर्ष पीछे ही सन् ७२७ (सं० १३८४) में ददाखांके बेटे तरमशरीनखानने जो चगताई खान के घरानेमें से तूरान का बादशाह था बहुतसी फौज के साथ हिन्दुस्तानकी सरहदमें दाखिल होकर लमगान और सुलतान से दिल्ली के दरवाजे तक अमलदखल और लूट मार करके इतना दबाव डाला कि मोहम्मद तुगलक ने लाचार होकर इतना बहुत रोकड़ रुपया और जवाहरात भेट किया कि जिसमें तरमशरीनखान राजी होकर दिल्लीसे तो कूच करगया मगर गुजरात और सिंधसे बहुत सी लूट और कैदियों को लेकर सहीसलामत अपने वतन में जापहुँचा।

मोहम्मद तुगलकने तरमशरीनखां को जो नजराना देकर अपनी जान इज्जत और रैयत को बचायां था उसका यह असर हुआ कि फिर कोई मुगलोंका हिंदुस्तान लूटने को नहीं आया बल्कि जब मोहम्मद तुगलक को अपने बागी अमीरोंको फिसाद मिटानेके लिये फौज की जरूरत हुई तो अमीर करगनने सन् ७५१ (संवत् १४०८) में ५ हजार मुगलसवारों को अलतून बहादुर नाम अपने १ सरदार और ५००० मुगल सवारोंको सुलतानकी मदद पर भेजा सुलतान उस वक्त सिंधमें था और बीमार था थोडे दिनों पीछे ही मरगया। मुगलोंने लशकर लूटना शुरू करदिया। मगर सुलतान फीरोजने जो सुलतान मोहम्मद का चचेरा भाई था तख्तपर बैठकर मुगलों को सजादी। तब अलतून बहादुर और अमीर नोरोज गुरगीन जो तरमशरीनखां का जमाई था और सुलतान मोहम्मद के पास रहता था। यहां रहनेमें फायदा न देखकर अपने देश को चलागया। इनके पीछे अमीर तैमूर और बाबर बादशाह ने आकर दिल्ली फतह की और हिन्दुस्तान में अपना राज जमाया जिसका हाल दूसरे और तीसरे खंडमें लिखाजावेगा॥ ॥ इति प्रथमखंड समाप्त॥

---

१ इस ख्वाजा रशीद ने १ बड़ी तवारीख जामेरशीदी नाम बनाई है जिस में मुगलों का बहुत हाल है।

दूसरा खंड।

तैमूरिया बादशाहों का इतिहास।

अमीर तैमूर।

अमीर तैमूर तक बादशाही इनके घराने में नहीं थी । सिपहसालारी थी । सो भी तैमूर का दादा अमीर बरकुल छोड़ बैठा था । तैमूर की और चंगीजखान की पीढ़ियां ऊपर जाकर तोमनाखान से मिलजाती हैं । जिस के दो बेटे कबल-खान और काचूली बहादुर थे. कबलखान की औलाद में बादशाही और काचूली की औलाद में सिपहसालारी रहने का अहदनामा तोमनाखान के वक्त में ही लिखागया था । हम दोनों की पीढियां पिछले खण्ड में लिखेआये हैं यहां फिर भी अमीर तैमूरकी पीढियां पाठकों को सुभीता रहने के लिये लिखते हैं ।

१ तोमना खान मगूलिस्तान का बादशाह.
२ काचूलीबहादुर.
३ एरूमची, बरलास.
४ सुगूचीचन.
५ कराचार नूयान सन् ६९२ (सं० १३११) में मरा.
६ एजलनूयाँन.
७ अमीर एलंगज मुसलमान हुआ.
८ अमीर बरकुल.
९ अमीर तुरागाई सन् ७६२ (सं० १४१७।१८) में मरा.
१० अमीर तैमूर साहिबकरांन.

अमीर तैमूर २५ शाबान सन् ७३६ मंगल की रात (वैशाख वदि १० सं० १३९३) को शहर सब्ज इलाका कुश विलायत तूरान में तगीना खातून से पैदा हुआ था इस के पीछे तीन भाई और दो बहनें और भी जन्मीं थीं जिन के नाम आलमशेख, सयूरगतमश, जो की कतलग तुर्कानआगा और शीरीनबेगीआगा थे ।

अमीर तैमूर का जन्म मकर लग्न में हुआ था इस की जन्मपत्री जफ़रनामे में लिखीहै जो इनके इतिहासका एक सविस्तर ग्रंथ है इनके जन्मसमयमें तूरान का खान तरमशीरीन खान था और ईरान का बादशाह सुलतान अबूसईद जो हलाकूखान की औलाद से था ४ महीने पहिले बेऔलाद मरचुका था जिस से उस राज्य में बखेडा पडाहुआ था। अमीर तैमूर ३६ वर्षका हुआ वहां तक ईरान तथा तूरान में और भी बहुत सी खराबियां आपस की आपधापी से फैलगई थीं जिन से यह बादशाह होने और मुल्कों के फतह करने का मौका देखकर १२ रमजान सन् ७७१ बुधवार (प्र० वैशाख सुदि १३ संवत् १४२७) को अमीर तैमूर बलख से तख्त पर बैठ और ३६ वर्षतक दिग्विजय करके वह तूरानख्वार जम तुर्किस्तान, खुरासान, ईरान, आजरबायजान, फारस, माजंदरान किरमान दयार,बक्र,खोजिस्तान, मिश्र,शाम, और रूम वगैरह वलायतों का बादशाह होगया। जीकाद सन् ७८९ (अगहनसुदि सं० १३४४) में असफहानवालों की बदमाशीसे उस शहर में कतलआम किया वहांसे जाकर फारस के बादशाहों को जीता।

दो दफ़े कबचाक़ जंगल के बादशाह तुर्कीमशखान पर चढ़ाई करके फतह पाई और उस १००० कोस लंबे और ६०० कोस चोडे जंगल को झगडों और बखेडों से साफ़ किया।

सन् ७९५ (संवत् १४४९।५०) में शीराज के बादशाह मुजफ्फर को मारकर तैमूरने ईरान के मुल्कों में कबजा किया। फिर बगदाद और गुर्जिस्तान जीते।

---

१ यहचंगेज़खांके बेटे जूजी खां की औलाद में २३ वां जानशीन था। २ तरमशरीनखान यों तो कई बादशाहोंके पीछे चगताईखानके तख्तपर बैठाथा परन्तु वह चगताईखांन की छटी पीढ़ी में था–१ चगताईरगन २ मसूकान ३ मसूनतवा ४ बराकरगन ५ ददारगन ६ तरमशरीनखान (तरमशीजीनखान) अकबरनामा जिल्द १ पेज ६। २ यह चंगेज़खानके बेट जूजीखान की औलाद में २३ वां बादशाह था।

१२ मोहर्रम सन् ८०१ (आसोजसुदि १२ संवत् १४५५) को सिंधनदी पर पुलबांधकर उसने हिन्दुस्तान को फ़तहाकिया । सन् ८०२ (सं० १४५७ । ५८) में शाम पर चढ़ाई करके उसने हलब और दमश्क में फतहके झंडे गाडे ।

१९ जिलहज्ज शुक्रवार सन् ८०४ (प्र० भादोवदि ५ संवत् १४५९) को रूम के कैसर एलंद्रुम[1] को लडाईमें पकड़ा और छोड़दिया ।

मिश्र मक्के और मदीने में उनके नाम का खुतवा पढागया और सिक्का चला ।

जीकाद सन् ८०६ (सं० १४६१ के ज्येष्ट) में फीरोजा कोह पर जाकर एक दिनमें उसको फतह किया ।

१ मोहर्रम सन् ८०७ (सावनसुदि ३ सं १४६१) में नशापुर के रस्ते से अपने वतन तूरान में आकर बहुत बडा उत्सव किया फिर खता (चीन) के फतह करने को कूच किया मगर समरकंद से ७६ कोस पर गांव अतरार में पहुंच कर १७ शावान सन् ८०७ (बुध चैतवदि ३ सं० १४६१) की रातको उसने परलोक का रस्तालिया तावूत बड़ी धूमसे समरकंद में आया और दफन किया गया.

अमीर तैमूर के चार बेटे थे १ जहांगीर मिरजा जो बाप के जीतेजी सन् ७७६ (सं० १४३१) में मरगया था उसके २ बेटेथे ।

१ मोहम्मदसुलतान जिस के दादा ने वलीअहदकिया था मगर वह भी ७ शावान सन् ८०५ (फाल्गुणसुदि ९ सं० १४५९) को रूम में मरगया ।

२ पीरमोहम्मद जिस को अमीर तैमूर ने वलीअहद करके गज़नी और हिन्दुस्तान की हुकूमत दी थी और अपने पीछे उसके हुक्ममें रहने की सब को वसीयत कीथी वह १४ रमजान सन् ८०९ (फागुणवदि १ सं० १४६३) को अपने एक अमीर के हाथ से मारागया ।

---

१ एलद्रुमवायजीद की औलादमें तो अवतक रूमका राज चलाआता है और तैमूर की औलाद में अब कहीं चप्पे भर भी जमीन नहींहै ।

दूसरा बेटा उमरशेख था जिसको फारस की हकूमत दीगई थी वह भी बापके जीते जी रबीउलअव्वल सन् ७९६ (माघसुदि सं० १४५०) में मरगया था।

तीसरा बेटा जलालुद्दीन मीरांशाह था जिस का हाल आगे आवेगा।

चौथा बेटा मिरजा शाहरुख था यह खुरासानका हाकिम था और अकसर लड़ाइयों में बाप के साथ रहा करता था और बाप के पीछे ईरान तूरान और बापोती के मुल्कों में कबजा करके ४२ वर्ष एकछत्र राज करने के पीछे २५ जिलहज्ज रविवार सन् ८५० (चैतबदि १२ संवत् १५०३) को मरगया। उसका जन्म १४ रबीउलअव्वल गुरुवार सन् ७७९ (सावन सुदि १५ सं १४३४) को हुआ था।

अमीर तैमूर के इन चारों बेटों की औलादने ऊपर लिखे हुए मुल्कों में १०० वर्ष के लगभग राजकिया फिर आपस की फूट और आपाधापी से उजबकों तथा अपने ही नोकरों के हाथ से नष्ट होगया; सिर्फ मीरांशाह की औलाद में से एक बाबरबादशाह दुशमनों से बचकर काबुल में आया था सो भाग्यबलसे हिंदुस्तान फतह करके अपनी औलादके विरसे में छोड़गया और इसीका इतिहास हमको अपने देश के संबंधमें लिखनाहै इसवास्ते अमीर तैमूर के दूसरे बेटों का वृत्तांत छोड़ कर मीरांशाहसे बाबरबादशाह के बाप उमरशेख मिरजा तक संक्षिप्त इतिहास लिखकर इस खंडको ख़तम करते हैं।

जलालुद्दीन मीरांशाह।

मीरांशाह सन् ७६९ (संवत् १४२४) में पैदा हुआ था इसके बापने इसको इराक अजम, इराक अरब, आजरबायजान, दयारबक्र और शामकी हुकूमत हिन्दुस्तानको जाते समय दीथी। वह एक दिन शिकार में घोड़ेसे गिरपड़ा था और जिससे सिरमें सख्तचोट आई अकल में फितूर पड़गयाथा। बड़ा बेटा अबाबक्रमिरजा राज्यका काम करताथा वही अमीर तैमूरके मरनेके पीछे भी बापके नाम का खुतबा और सिक्का चलाकर राजभी करने लगा।

मीरांशाह तब्रेजमें रहा करता था जहां वह २४ जीकाद सन ८१० (द्वि० वैशाखवदि १० सं. १४६९) को करायू सुफतुर्कमान के मुकाबिलेमें मारागया उसके अबाबक्र मिरजा, अलंकर मिरजा, उसमान मिरजा चिलपी मिरज़ा, उमर खलील मिरजा, सुलतान मोहम्मद मिरजा, एजलमिरजा, और सियूरगतमश मिरजा यह आठ बेटे थे ।

बाबर बादशाह सुलतान मोहम्मद मिरजा की औलाद में थे । इस लिये इसीके वंशका हाल लिखाजाता है ।

सुलतानमोहम्मदमिरजा ।

यह मीरांशाह का पांचवां बेटा था और हमेशा अपने से बड़े भाई उमरखलील मिरजा के साथ समरकन्द में रहा करता था । अखीर उमर में अपने चचा मिरजा शाहरुख़के पास जा रहा था जो उसें बहुत अदब और आदर से रखता था और अपने बेटे अलगबेग से उस के सत्स्वभाव और सदाचार के बखान किया करता था ।

मोहम्मदमिरजा जब मरने लगा तो मिरजा अलगबेग सुख पूछने को आया मिरजा के २ बेटे अबूसईद मिरजा और मनूचहर मिरजा थे । मिरजा ने बड़े बेटे की बहुतसी सिफारिश मिरजा अलगबेग से की और मरगया ।

सुलतान अबूसईदमिरजा ।

सन् ८३० (सं० १४८४) में पैदा हुआ था । बाप के पीछे बहुत दिनोंतक अपने चचेरे भाई और खुरासान के बादशाह मिरजा अलगबेग की खिदमत करता रहा फिर २५ वर्ष की उमर में भाग्यबल से समरकन्दका बादशाह होगया और १८ वर्ष-तक तूरान तुर्किस्तान, बदख़्शां काबुल गजनी और कन्धार में हिन्दुस्तान की सर-हदतक राज करके २२ रजब सन ८७३ (फागुणवदि ८ सं० १५२५) को शाहरुख़ मिरजा के बड़े पोते यादगारमोहम्मद मिरजा के हाथ से मारागया । इस के दस बेटे सुलतानअहमदमिरजा, सुलतानमोहमदमिरजा, उमरशेखमिरजा, सुलतान मुरादमिरजा, सुलतानबलदमिरजा, अलगबेगमिरजा, अबाबक्रमिरजा, सुलतान खलीलमिरजा और शाहरुख़मिरजा थे ।

उमरशेख मिरजा ।

यह सुलतान अबूसईदमिरजा का चौथा बेटा था यह सन् ८६० (सं० १५१२। १३) में पैदा हुआ था पिता ने इसको इंदजानका वापोती राज और ओरजंद का तख्त दियाथा. उससे आगे उत्तर में मगूलिस्तान का मुल्क था मगर इसने अपनी सरहद्दों का एसा जाबताकिया था कि वहां के वादशाह यूनसखां ने वहुत् ही जोर लगाया मगर इधर होकर उसके वापके मुल्क में न आसका ।

फिर उमरशेखमिरजा बाप का मरना सुन कर इंदजान के तख्त पर बैठा । ताशकंद शाहरुखिये और सीरामके इलाके भी उसके पास थे उसने कईबार समरकंद पर चढ़ाई की और हरदफे यूनसखानको अपनी मदद पर लाया परंतु जब उसे मदद लाता तबभी अपना एक इलाका उसको देता था और वह कुछ नकुछ वहाना करके मगूलिस्तान को लौट जाता था । अखीर मरतबे ताशकंद भी उसको दे दिया जो सन् ९०८ (सं १५६०) तक शाहरुखियां समेत चगताईवादशाहों के कबजे में रहा ।

पहिले तो यूनसखान मुगलों का वादशाह था फिर उसका बड़ा बेटा सुलतान महमूदखान, हुआ वह उमरशेखमिरजा के बड़े भाई और समरकंद के मालिक सुलतान अहमदमिरजा से मिलकर सन् ८९९ (संवत् १५५०। ५१) में उमरशेख मिरजा पर चढ़आया दक्खन की तर्फ से अहमदमिरजा चढ़ा मगर इनके पहुंचने से पहिले ही उमरशेख मिरजा ता० ४ रमजान सन् ८९९ (वैसाख सुदि पं० सं० १५५१) को कबूतर खाने की छत पर से गिरकर मरगया ।

यह वहुत पढ़ालिखा था और न्याय नीति से राज करता था इसके ३ बेटे और ४ बेटियां थीं ।

बेटे ।

१ बाबरमिरजा (बाबर वादशाह)

२ जहांगीर मिरजा.

३ नासिर मिरजा.

---

१ पुराना नाम फनाकत ।

लड़कियां ।

१ खानजादाबेगम बाबर से ५ वर्ष बड़ी सगी बहन.

२ महरबानू बेगम. जहांगीर मिरजा की सगी बहन.

३ यादगार सुलतान बापके मरे पीछे हुई थी.

४ रजिया सुलतान बापके पीछे जन्मी थी.

५ एक और लड़की जो बचपन में मरगई.
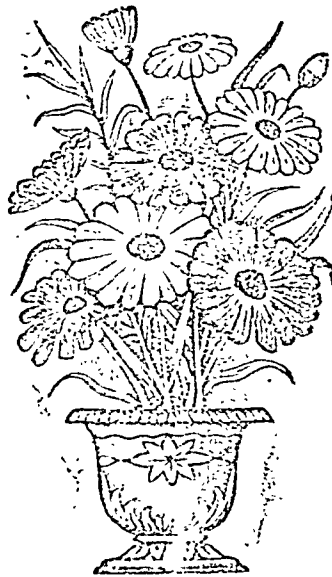
औरंगजेब आलमगीरबादशाह।

सन् १०६७ हिजरी संवत् १७१४ सन् १६५७ ईसवी.

औरंगजेब औरंगाबादमें.

७ जिलहज सन् १०६७ (भादों सुदि ९ सं० १७१४ ६ सितंबर सन १६५७) को शाहजहां बादशाह बीमार होकर बादशाही के कामों को छोड़ बैठा बड़े शाहजादे दाराशिकोह ने मौका पाकर खबरोंका आनाजाना बंद करदिया जिससे मुल्कोंमें बड़ी खलबली पड़गई। चौथा शाहजादा मुरादबख्श जो गुजरातका सूबेदार था अहमदाबाद में तख्त पर बैठ गया और दूसरा शाहजादा शाहशुजा भी बंगालमें बादशाह होकर पटने तक चढ़आया। तीसरा शाहजादा औरंगजेब दक्षिणमें था और इसी की तर्फ से दाराशिकोह के दिलमें खटका था जिससे वह बादशाहको उसकी तर्फसे बहकाता रहता था। उसीतरह अब भी दाराशिकोहने शाहजहांको उलटासीधा समझाकर उस लशकर को जो बादशाहकी सवारीमें चला करता था हजूरमें बुलवाया और बीमार होने पर भी बादशाहको जमुना के रस्तेसे आगरे में लाया इससे उसका यह मतलब था कि उनके जीते जी उनकी मददसे ही शाहशुजा और मुरादबख्श से निबडकर औरंगजेब को भी ठिकाने लगादे।

आगरेमें पहुँचकर उसने राजा जैसिंह को तो बादशाही फौजके साथ और अपने बड़े बेटे सुलेमान शिकोह को अपनी फौजके साथ शाहशुजाअ पर भेजा और राजा जसवंतसिंह को जिसने बादशाह की मा के पक्ष से बहुत बड़ा दरजा और महाराजा का खिताब पाया था और जो हिन्दुस्तानके राजाओं में उमदा (मुख्य) था बहुतसे लशकर के साथ दक्षिणका रस्तारोकने के लिये मालवे को रवाने किया और कासिमखां को एक अलग फौज देकर उससे कहा कि वह महाराजा के साथ उज्जैन में जावे और जो जरूर हो तो गुजरात में पहुंच कर मुराद बख्शको वहां से निकाल दे।

दाराशिकोह की कहासुनीसे बादशाह का भी दिल औरंगजेब से फिरगया था इस-लिये उसने औरंगजेब के वकील ईसाबेग को बिला कसूर कैद करके उसका माल असबाब छिनवालिया । मगर फिर इसकाम को बुरा समझकर उसे छोड़ भी दिया।

सन् १०६८ हि० संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

बुरहानपुरसे औरंगज़ेब.

औरंगजेब पहिले से ही दारा शिकोह से खफा था क्योंकि उसका दिल हिन्दु-ओं के मजहब की तरफ झुका हुआथा इसलिये अब उसने अपने दीन को मदद के लिये बादशाह के पास जाने और मुरादबख़्श को भी लेजाकर उसके कुसूर माफ कराने का मनसूबा बांधा मगर जसवंतसिंह और कासिमखां की तर्फ से लड़नेका खटका था इसवास्ते लड़ाई की तैयारी करके जमादिउलअव्वल सन् १०६८ हि० (माहसुदि २ । २५ जनवरी १६५८) को औरंगाबाद से बुरहानपुर की तर्फ कूच किया और २५ (फागुन वदि ११ । १२ । १८ फरवरी) को वहां पहुंचकर बाद-शाह को मिजाजपुरसी 'सुखपूछने' की अरज़ी भेजी मगर एक महीने तक जवाब नहीं आया और बुरी बुरी खबरें पहुंचीं । महाराज जसवंतसिंह भी दाराशिकोहके लिखने से धमकियां देनेलगा तब २५ जमादिउल आख़िर (चैतवदि १२ । २० मार्च) शनिवार[1] को आगरे की तरफ कूच हुआ ।

२१ रजब (वैशाख वदी ८ संवत् १७१५ । १५ अप्रेल) को देपालपुर से चलने पर मुरादबख़्श भी अहमदाबाद से आगरे को जाता हुआ मिलगया उज्जै-नसे सात कोस पर गांव धरमातपुर में डेरा हुआ जहांसे १ कोस पर जसवंतसिंह और क़ासिमखां लड़ने के इरादे से ठहरेहुए थे । जसवंतसिंह ने लड़ने की तैयारी की । औरंगजेब ने भी गुस्से में आकर २२ रजब सन् १०६८ हिजरी (वैसाखवदि ९ । १६ अप्रेल) शुक्रवार को परा बांधने और रणसिंगा फूकने का हुक्म देदिया ।

महाराजा जसवंतसिंहका लड़ना और भागना ।

दोनों फौज़ों के मिलते ही जसवंतसिंह लड़नेको सवार हुआ । हिन्दुओं की फौज बहुत थी तो भी औरंगजेब के लशकर की तलवारों से कट गई, जसवंतसिंह थोड़े से

---

१ आगरे की छपीहुई मुआसिर आलमगीरी में गुरुवार लिखाहै सो ग़लत है क्योंकि हिसाब से भी शनि आताहै और संवत् १७१४ के पञ्चांग में भी चैतवदि १२ को शनि ही है ।

आदमियों के साथ भागकर अपने वतन जोधपुर की तर्फ चल दिया । औरंगजेब की फ़तह हुई कासिमखां और बादशाही लशकर भी सब भाग गया ६००० दुशमन मारे गये और उनका माल असबाब औरंगजेब के हाथ लगा । वह १ रमजान (जेठ सुदि २ । २४ मई) को चम्बल से उतरा । वहां दाराशिकोह के धोलपुर से लौटजाने की खबर आई यह लड़ाई सन् १०६८ हि०, सं. १७१५, सन् ई० १६५८ में हुईथी ।

दाराशिकोहका लड़ना और भागना ।

६ रमजान (जेठसुदि ७ । २९ मई) को औरंगजेब दाराशिकोह के लशकर से १ कोस इधर ठहरा । दाराशिकोह उसी दिन सवार होकर अपने लशकर से निकला मगर औरंगजेब के डर से आगे न बढ़कर वहीं खड़ा रहा । अपने सजेहुए सिपाहियों को दिनभर धूप लूं और प्यास से मारा आखिर शाम को लौट गया ।

दूसरे दिन ७ रमजान (जेठ सुदि ८–९ । ३० मई को) औरंगजेब ने अपनी फौज को आगरे पर बढ़ने का हुक्म दिया । दाराशिकोह फिर उसी तरह सुबह से डटाहुआ था, औरंगजेब की फौज को देखते ही लडने के लिये आगे बढा । दोनों तरफ से तोप और बंदूक की लडाई शुरूहुई फिर तलवार चली । दाराशिकोह के सरदार रुस्तमखां राव शत्रुशाल और राजा रायसिंह वगैरह बहुत सी लडाई करके मारेगये । अभी और भी बहुत से लोग उसके लशकर में जानदेने को मौजूद थे मगर वह ऐसा घबरागया था कि हाथी से उतर कर घोडे पर सवार हुआ । इस बेमौका हरकत से उसकी फौज बिखर कर भागनिकली और औरंगजेब की फतह होगई । इस लडाई में दाराशिकोह के इतने अफसर और सरदार मारेगये कि उतने किसी लडाई में नहीं सुनेगये थे । औरंगजेब के सरदारों में से आजमखां के सिवाय जिसका दूसरा नाम मुलतिफ़ित खां भी था और जो फ़तह होने के पीछे लू लगजाने से मरा था और कोई काम न आया ।

दाराशिकोह भागकर अपने एक लड़के और कई नोकरों के साथ शाम को आगरेमें पहुंचा और तीनपहर रात तक अपनी हवेली में रहकर दिल्ली को चलदिया ।

---

१ कलकत्ते की छपी प्रति में मारवाड़ है । २ गर्महवा ।

औरंगजेब उसदिन तो दाराशिकोह के डेरे में रहा और दूसरे दिन समूगिरमें पहुंचकर बादशाह को इस लडाई के उज्रकी अरजी भेजी वह १० रमजान (जेठ सुदि १२ । २ जून) को आगरे के पास जाकर नूरमंजिल बाग़ में उतरा। बादशाह ने अरजीका जवाब भेजा और दूसरे दिन आलमगीर नाम एक तलवार भी उसको भेजी।

बादशाही अमीर और बादशाहकी ड्योढी के सब नौकर चाकर औरंगजेब से आमिले और वह सब को राजी करके २० रमजान (असाढ़ वदि ७ । १२ जून) को शहर में गया और दाराशिकोह की हवेली में ठहरा।

२१ (असाढवदि ८ । १३ जून)को खबर आई कि दाराशिकोह १४ रमजान (असाढवदि १ । ६ जून) को दिल्ली पहुंच गया है।

औरंजेब का इरादा बादशाह की खिदमत में हाज़िर होने का था लेकिन दाराशिकोह ने शिकायत खत भेज भेज कर शाहजहां का मिजाज़ बिगाडदिया था, इसलिये औरंगजेब इस इरादे से हटकर २२ रमजान(असाढबदि ९ । १४ जून) को दिल्ली की तर्फ़ रवाना हुआ।

सन् १०६८ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई.

औरंगजेब (मथुरामें)

१४ रमजान (असाढवदि ११।१७जून)को घाट स्वामी में दाराशिकोह के दिल्ली से भी भागने की खबर आई और चांदरात (आसाढसुदि द्वितीया । २२ जून)को बहादुरखां उसके पीछे भेजागया।

२ शव्वाल (असाढसुदि ४ । २४ जून)को औरंगजेब ने मथुरा में शाहजादे मुरादबख्श को फसाद करने के डरा में देखकर उसे पकडलिया और शेखमीर को सौंप कर दिल्ली के किले में भेजदिया।

दाराशिकोह लाहोरको गयाथा इसलिये औरंगजेब भी पंजाब को रवाने हुआ।

औरंगजेब का बादशाह होना।

हि. सन् १०६८ सं० १७१५ १६५८ ई०

ज्योतिषियों ने तख्त पर बैठने का महूर्त १ जीकाद मुआफिक १५ अमरदाद (सावनसुदि तृतीया । २३ जौलाई) शुक्रवार का निकाला था मगर औरंगजेब

को इतनी फुरसत न थी कि दिल्ली के किले में जाकर धूमधाम से तखत पर बैठे इसलिये महूर्त साधने के लिये आअज्जावाद में टहर कर उस दिन तख्त-नशीनीका जुलूस किया गया शाहजादों और अमीरों को बडे बडे इनाम दिये गये लेकिन खुशी और सिक्के खुतबे की तजवीज दूसरे जुलूस पर मोकूफ रखकर फिर १ फ़ौज खलीलुल्लाहखां के साथ बहादुरखां से जामिलने और सुतलज नदी से उतरने का बंदोवस्तकरने के लिये भेजी गई। इतने में यह खबर पहुंची कि सुलेमांशिकोह गंगा के ऊपर हरिद्वार पहुंच कर सहारनपुर के रस्ते से अपने बाप को मिलाना चाहताहै। बादशाहने शायस्ताखां और शेखमीर वगेरह को उस के मुकाबले पर जाने का हुक्म दिया।

२ जीकाद १६ अमरदाद (सावनसुदि ४। ५। २४ जौलाई) को बादशाह के डेरे पंजाब जाने के लिये बाहर निकालगये।

१५ (भादों बदि ३। ६ अगस्त) को लशकर के सुतलज से उतरने और दाराशिकोह के आदमियोंके भागने की खबर बहादुरखां की अरजी से मालूम हुई और इन्हीं दिनों में सुलेमांशिकोह के कशमीर के पहाडों में भागजाने के समाचार भी सुनेगये जो फौज उसके पीछे गई थी उसको लौट आनेका हुक्म हुआ।

सन् १०६८ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगजेब (पंजाबमें)

दाराशिकोहने लाहोर में पहुंचकर २० हजार सवार जमा करलिये और बहादुरखां और खलीलुल्लाहखां के सतलज से उतरने की खबर सुनकर रस्ता रोकनेके लिये दाऊदखांके साथ बहुतसे आदमी व्यास नदी पर भेजदिये पीछे से सिपहरशिकोह को भी भेजा।

बादशाहने यह सुनकर राजा जैसिंहको भी भेजकर अगले लशकर में शामिल किया। दाराशिकोह यह बातजानकर लाहोर में भी न ठहरसका और मुल्तान को चला गया।

इन्हीं दिनों में महाराजा जसवंतसिंह शर्मिंदाहुआ अपने वतन से आया बादशाह ने कसूर माफ करके उसे दिल्ली में भेज दिया।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगज़ेब (मुलतानमें)

२४ जिलहज्ज (आसोज वदि ११ । १३ सितंम्बरको) हतपुरपट्टी में खलीलु-ल्लाहखां वगैरह की अरजी से बादशाह को मालूम हुआ कि दाराशिकोह बडे ठाठसे बादशाही लशकरके मुकाबिले को लाहोर से निकला है और इसी लिहाजसे बाद-शाही लशकरने उसका पीछा करने में सुस्ती की थी। उसपर बादशाह ने उसी मंजिल से शाहजादे मोहम्मदआजम को तो फालतू लशकर और कारखानोंके साथ लाहोर में भेजदिया और खुद दाराशिकोह के पीछे धावाकरने वालेथे कि इतने-ही में खबर पहुंची कि दाराशिकोह मुलतान में भी नहीं ठहरसका भक्कर को चलदियाहै। बहुत से नौकर उसको छोडगयेहैं और उसकी परेशानी बढतीजाती है इस पर बादशाह धावा मोकूफ रखकर धीरे २ उसके पीछे गये और मुलतान तक रस्ते में कहीं नहीं ठहरे।

सन् १०६९—

४ मोहर्रम सन् १०६९ (आसोज सुदि ६। २२ सितम्बर) को सफशिकनखां मुलतान से दाराशिकोहके पीछे रवाने हो चुकाथा तो भी बादशाह ने शेखमीर को ९००० सवारों के साथ फिर भेजा।

सन १०६९ हि. संवत १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगज़ेब (दिल्लीमें)

अब यह खबर पहुंची कि मँलझाभाई शाहशुजा जो बादशाह के तख्त पर बैठने से पहिले तक बहुत मेल मिलाप रखता था बंगाले से लडने को चला आताहै बादशाह १२ मोहर्रम (आसोजसुदि १४ । ३० सितंबर) को मुलतान से कूच करके ४ रबीउलअव्वल (मार्गशिरसुदि ५ । १९ नवम्बर) को दिल्लीके किले में दाखिल हुए, शाहशुजाअ के बागीहोने की खबरें लगातार पहुंचतीथीं तो भी चाह-ते थे कि जहांतक होसके टालजावें मगर वह तो बनारस तक बढाही चलाआया और लडने को तैयारहुआ तबतो बादशाहज़ादे मोहम्मद सुलतान को हुक्मदेनापडा कि

७ रबीउलअव्वल (मगसरसुदि ८ । २२ नवम्बर) को आगरे से उधर जावे। इतनेही में फिर यह खबर आई कि शाहशुजा तो बनारस से भी आगे बढाचाहता है इसपर बादशाह की यह सलाह ठहरी कि सोरों की शिकारगाह में चलकर उधर की खबरों का रस्ता देखें जो शुजा पटने को लौट जावे तो अगले लशकर को भी लौटा ले नहीं तो जाकर उसको सजादें।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५८ ई०

औरंगज़ेब (सोरोंमें)

१६ रबीउलअव्वल (पौषबदि २ । १ दिसम्बर) को दिल्लीसे कूचहुआ २० (पौषबदि ६ । ५ दिसम्बर) को खबर आई कि अगला लशकर कल इटावे में जापहुंचाहै। बादशाह भी शिकार खेलते हुए २ रबीउलआखिर (पौषसुदि ४ । १६ दिसम्बर को सोरों में पहुंचे और शाहशुजाअकी मनसा मालूम करनेके लिये उसके नाम नसीहत का १ खत भेजा, मगर जब यकीन होगया कि रिआयत करनेसे कोई फायदा नहीं है तो ५ (पौष सुदि ६ । १८ दिसम्बर) को सोरों से चढाई की और शाहजादे मोहम्मद सुलतानको लिखा कि लडाई में जल्दी न करके हमारे पहुंचने का रस्ता देखे।

सन् १०६९ हि- संवत् १७१५ सन् १६५९ ई०

औरंगज़ेब (कोड़ेमें)

१७ (माहबदि २ । ३१ दिसंबर) को कसबे कोडाके पास जहां शाहजादा मोहम्मदसुलतान ठहरा हुआ था और शाहशुजाअ भी वहांसे ४ कोसपर आपहुंचा था बादशाह के डेरे हुए और इसी दिन मोअज्जमखां भी जो खानदेश से बुलायागया था बादशाही लशकर से आमिला।

शाहशुजाअसे लड़ाई।

शाहशुजाअने लडने के इरादे से तोपखाना आगे लगा रक्खाथा १९ रबीउलआखिर (माहबदि ५ । २ जनवरी) इतवार को बादशाह ने कोडे में पहुंचनेसे ती-

---

१–कलकत्तेकी प्रतिमें १८ तारीख गलत छपीहै क्योंकि आगे १६ है।

सरे दिन हुक्म दे दिया कि तोपखाना वढाकर शाह की फौजपर आग वरसावें और लशकर भी लडने को आगे वढे यह सुनते ही वादशाही लशकर जोश में आया और ९०००० के करीव सवार लडने को तैयार हुए उर्दूय मुअल्ला (वडेलशकर) और दौलतखांने के वास्ते यह हुक्महुआ कि जहां हैं वहीं रहें।

उसी दिन शाहशुजाअने भी अपनी फौजों के पैर जमाये। वादशाह भी चार घडी दिन चढे पीछे रवाने होकर तीसरे पहर को उसके लशकर से आधकोसपर जा उतरे मगर शाहशुजाअ लडने को नहीं आया अपने कुछ तोपखाने को आगे भेजदिया राततक लडाई होतीरही। फिर उसने अपना लशकर पीछे वुलालिया।

वादशाह मोरचों का वंदोवस्त और खवरदारी की ताकीद करके एक छोटे से दौलतखाने में जो वहां वनालिया गया था सोगये। पिछलीरात को एक अजव गडवड मची जिसे नासमझ लोगोंने वडी भारी शकिस्त समझी और वादशाही लशकर में भागड पडगई। इसका सवव यह हुआ कि महाराजा जसवंतसिंह जाहिर में तो तावेदारी वरता था मगर दिल में दुशमनी रखता था। वादशाह ने इस वक्त उस को दाहनी अनी (फौज) का सरदार वनाया था उसने भागने का इरादा करके शाहशुजाअ को खवरदी और पिछली रात को अपनी सव फौज और दूसरे राजपूतों के साथ मुह फेरा। वादशाहजादे मोहम्मद सुलतान का लशकर उसके रस्ते में था इसलिये उसके आदमियों ने पहिले उसी को लूटा फिर उर्दू (छावनी) में वहुत लूट हुई और वुरी २ खवरें उडीं लुटेरों ने कारखानों खजानों वादशाही-जानवरों अमीरों और सिपाहियों के माल असवाव पर खूव हाथ मारे।

सन् १०६९ हि. संवत १७१५ सन् १६५९ ई०

औरंगजेब (खजवेमें)

यह खवर वादशाह तक पहुँची मगर वह विलकुल नहीं घवराये। आधे से जियादा लशकर विखरगया था तो भी लशकर के कम रहजाने का कुछ फिकर न करके वादशाह लडाई में गये। शाहशुजाअ ने कल की तरकीव वदल कर सेना सजाई। दोनों तरफ़ से वान तोप और वंदूकों की लडाई शुरू हुई खूव आग वरसी जहां वादशाही फ़ौज हारती थी वहीं वादशाह जाते थे और खलल नहीं पडने देते थे।

उनकी सवारी में २००० से जियादा सवार नहीं थे तो भी मजबूती से जमकर लडते थे, उनकी बहादुरी से आखिर फतह होगई। शुजाअ की फौज भाग निकली। बादशाह उस की छावनी में जोखजवे के तआवरर थी जाकर ठहरे और उसीदिन शाहजादे मोहम्मद सुलतान को शुजाअ के पीछे भेजकर २६ (माह बदि १२। ९ जनवरी) तक आप वहीं रहे। २७ (माहबदि १३। १० जनवरी) को कूच हुआ चांदरात (माह सुदि १ ।१३ जनवरी) तक गंगा के किनारे पर ठहरे, यहां मोअज्जमखां और दूसरे बडे बडे अमीरों को हुक्म हुआ कि शाहजादे मोहम्मदसुलतान से मिलकर शुजाअ के पीछे जावें।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५९ ई०

औरंगजेब गंगाके किनारेपर.

दाराशिकोह का पीछा।

सफशिकनखां जो ४ मोहर्रम सन् १०६९ (आसोजसुदि ६। २२)सितम्बर को मुलतान से दाराशिकोह के पीछे गया था व्यास नदी से उतरनेही यह सुन कर कि दाराशिकोह आगे चला गया है फिर आगे न बढा और कुछ दिन तक शेखमीरके इन्तजार में ठहरा रहा, जब दोनों लशकर मिलगये और यह खबर पहुंची कि दाराशिकोह भक्कर में भी नदी से उतरकर सक्खर को गयाहै तब यह सलाह हुई कि शेखमीर तो नदी से उतरकर सक्खरके उधर जावे और सफशिकनखां नदी के इधर भक्कर की तरफ बढे। इस तरहसे दोनों तरफ से दाराशिकोह उसको घेरलें।

सफशिकनखां तो दूसरे दिन शेखमीर को छोडकर भक्कर गया और शेखमीर दो दिन में नदी से उतर कर ५ सफर (कार्तिक सुदि ७। २२ अक्टूबर) को सक्खर से १२ कोस पर पहुंचा ६ (कार्तिक सुदि ८। २३ अक्टूबर) को लशकर का वहीं मुकाम रहा। सफशिकनखां ३ दिन पहिले सक्खर में पहुंचगया। जब अगले दिन वहांसे आगे चला तो सुना कि दाराशिकोह सब बोझ भार भक्कर के किले में छोड कर मोहर्रम को चांदरात (कार्तिकसुदि १। २७ अक्तूबर) को आगे चल दिया है, उसका बाकी खजाना और असबाब तो नावों में है और आप जंगल के रस्ते से जारहा है। उसके उमदा नौकरों से दाऊदखां वगैरह उसे छोडगये हैं

और वह तो सक्खर से कंधार को जाना चाहताथा मगर साथवालें के अलग होजाने और जनानों के राजी न होने से उसने ठट्ठे को जाने का इरादा किया है ।

सफशिकन खां आज़जखां को कुछ आदमियों के साथ भक्कर में छोडकर सेवस्थान को गया । जहांके किलेदार मोहम्मद, सालह, तरखां ने उसको लिखा कि दाराशिकोह किले से ९ कोस तक आपहुंचा है तुम जल्दी आओ और उसके खज़ाने की नावों को रोकलो ।

सफशिकनखां ने अपने जमाई मोहम्मदमासूम को जब ही कुछ लशकर से नदीके किनारे पर मोरचे लगाने को भेजदिया और आधी रातको वह भी दाराशिकोह के लशकर के सामने होकर ३ कोसपर नावों के इन्तज़ार में जाबैठा और पानी में उतरकर दुशमनोंपर जानेका इरादा करके मोहम्मदसालह को भी उधर से नावें भेजने को कहलाया । उसने कहा कि इधर से नदी की गहराई कमरतक है और नावें इधर से ही उतरें गी ।सफ़शिकनखां यह सुनकर पानी में नहीं उतरा तडके ही नदी के उसपार गर्द उडने से मालूम हुआ कि दाराशिकोह कूच करगया और दुशमन नावों को भी उधरसे ही लेगये तो फ़तह जो होनेवाली थी मोहम्मदसालह की उलटी समझ से नहीं हुई ।

दाराशिकोह सेवस्थान की घाटी से उतरा सफ़शिकनखां उसी किनारे से दो मंजिल उसके पीछे गया इधर से शेखमीर ने पहुंचकर कहलाया कि अब सलाह यही है कि पानीसे उतरकर इधर आजाओ तो दोनों मिलकर पीछा करें ।

सफशिकनखां नदीसे उतरा । तब यह खबर पहुंची कि दाराशिकोह ठट्ठे में पहुंच कर गुजरातको जाने वाला है । सफ़शिकनखां शेखमीर से आगे बढकर ठट्ठे की नदी तक जापहुंचा उधर से दाराशिकोह कूच करके गुजरात को रवाने होगया, सफ़शिकनखां भी ७ दिनमें पुल बांध कर दरिया से उतरा, इतने में बादशाह का हुक्म शेखमीर दिलेर खां और सफशिकनखां के नाम गया कि दाराशिकोह का पीछा छोडकर हजूर में पहुंचे ।

सन् १०६९ हि॰ संवत् १७१५ सन् १६५९ ई०

औरंगजेब आगरेके पास रूपवासमें.

बादशाहका इलाहाबादसे लौटना।

जब बादशाह को दाराशिकोहके गुजरात में जाने की खबर पहुंची तो वह इलाहाबाद से लौट पडे। १ जमादिउलअव्वल (माहसुदि २ । १४ जनवरी) को गंगाके किनारे पर इलाहाबाद के फतह होने की खबर बादशाहजादे मोहम्मद सुलतान की अरजी से मालूम हुई। दूसरे दिन महाराज जसवंतसिंह को सजादेने के लिये जो दाराशिकोह से जा मिलने के इरादे में था घाटमपुर की मंजिल से मोहम्मदअमीनखां मीरबख्शी को ९ हजार सवारों के साथ उसपर भेजा फिर आप भी जसवंतसिंह और दाराशिकोह को हराने की जलदीसे आगरे में न जाकर बाग नूरमंजिल से ही अजमेर को रवाने हुए। २५ (फागुनवदि ११ ।७ फरवरी) को रूपवास में कूचहुआ रस्ते में शेखमीर और दिलेरखां भी आमिले।

लशकर के लौट आने से जो दाराशिकोह को सुभीता मिला तो वह जंगल के रस्ते से कच्छ में पहुंचा और वहां से गुजरात में आया दिलरसबानूबेगम का बाप शाहनवाजखां सफवी दानाहोकर भी हिम्मत हार कर उस से मिलगया।

दाराशिकोह ने १ महीना ७ दिन गुजरात में रहकर २२ हजार सवार जमा करलिये १ जमादिउलआखिर (फागुनसुदि २ । १२ फरवरी) को वहां से निकला रस्ते में जसवंतसिंह की लिखावटों के पहुचने से उसका अजमेर आनेका हौसला बढ़गया था।

सन् १०६९ हि॰ संवत् १७१५ सन् १६५९ ई०

औरंगजेब हिंडोन और टोडेमें.

७ जमादिउलआखिर (फागुनसुदि ८ । १९ फरवरी) को बादशाह के डेरे हिंडोन में हुए वहां से टोडे तक फिर कहीं ठहरने का काम नहीं पडा।

१५ (चैतवदि ९ । २७ फरवरी) को शेखमीर का भाई अमीरखां मुरादबखश को दिल्ली के किले से गवालियर के किले में पहुंचाकर हाजिर होगया।

---

(१) यह बादशाह की बेगम थी.

सन् १०६९ हि, संवत् १७१५ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब रामसरमें.

दाराशिकोह से लड़ाई और उसका भागना।

दाराशिकोह अजमेर में पहुंचकर लडने को तैयार था २४ जमादिउलआखिर (चैतवदि १० । ८ मार्च) को बादशाही लशकर भी ६ कोस पर रामसर के तलाब के पास उतरा और लडाई के वास्ते लाम बांधने का हुक्म हुआ। दाराशिकोह जसवंतसिंह के पहुंचने के बलपर कूदता था मगर राजा जैसिंह ने जसवंतसिंह पर रहम करके बादशाह से उसके कसूरों की माफ़ी चाही और बादशाह के कबूल करलेने पर उसको माफ़ीकी बधाई और दाराशिकोहसे नहीं मिलनेकी ताकीद लिखी

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब गांवदेराईमें.

जसवंतसिंह को जब यह खुशखबरी पहुंची तो वह जोधपुर से २० कोस पर था वहीं से लौट गया, फिर दाराशिकोह ने उस के आने के वास्ते बहुत ही खुशामद की और सिपहरशिकोह को भी भेजा मगर कुछ फायदा नहुआ। इतनेही में बादशाही लशकर अजमेर के पास जापहुंचा और दाराशिकोह को भी लडनापडा, मगर मैदान में आने की ताकत नहोंने से अजमेर के पहाडों की चौडाई पर मोरचे लगाये गये। बादशाह के डेरे गाव देराई में हुए जहां से अजमेर ३ कोस है, मगर दाराशिकोह का डेरा थोडी ही दूर था।

दूसरे दिन बादशाह का हुक्म तोपखाना बढाने और गोले मारने का हुआ। उधर से तोपें और बंदूकें चलने लगीं। उसदिन उसरात और दूसरे दिन तीसरे पहर तक लड़ाई की आग भड़कती रही जिस में शाहनवाज़खां सफ़वी मोहम्मदशरीफ़ खां, मीरबख़शी और दूसरे बड़े बड़े सरदार दाराशिकोह के मारेगये इधर से शेख मीर छाती में गोली लगने से काम आया मगर मीरहाशम जो हाथी के हौदे में उसके पीछे बैठा था उस को गोद में लेकर संभाले रहा।

---

(१) इस मामिले का पूरा हाल हम महाराज जसवंतसिंह के जीवनचरित्र में लिख चुके हैं।

आखिर दाराशिकोह बादशाही लशकर की यह बहादुरी देखकर गुजरात को चलदिया बादशाह की फतह होगई।

बादशाहने खुदाका शुक्र करके कहा कि उसने पेगम्बर का दीन चलाने और नास्तिकमतके मिटाने के लिये ऐसी बड़ी फतह मुझको बखशी।

दूसरे दिन चांदरात (चैतसुदि १। १२ मार्च) को राजा जैसिंह और बहादुरखां दाराशिकोह के पीछे भेजगये।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१५ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब अजमेरमें.

बादशाहका अजमेरसे लौटना।

बादशाह इस तरह निश्चिन्त होकर ४ रजब (चैतसुदि ९ सं० १७१६।१८ मार्च) को अजमेर से दिल्ली की तरफ लौटे।

शाहजादे मोहम्मद सुलतान की अरजी पहुंची कि शाहशुजाअ मुंगेर में कुछ दिनों रहना चाहता था मगर बादशाही लशकर के जापहुंचने से डर कर जहांगीर नगर को चलागया और मुअज्जम खां मुंगर के किले में दाखिल हुआ।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१६ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब फतहपुर और खिज़राबादमें.

२४ रजब (वैशाख वदि ११। ८ अप्रेल) को बादशाह की सवारी फतहपुर में पहुंची और ६ शाबान (वैशाख सुदि ८। १९ अप्रेल) को दिल्ली की तरफ रवाने हुई। बादशाहज़ादे मोहम्मद सुलतान की अरज़ी आई जिसमें लिखा था कि शाहशुजा अपहिले तो जहांगीर नगर को गयाथा मगर जब बादशाही लशकर नजदीक पहुंचा तो वह नावों में बैठकर चलदिया और ज़हांगीर नगर बादशाही बन्दों के कब्जे में आगया।

दाराशिकोह के तरफ़ की यह ख़बर आई कि वह अजमेर से गुज़रात में पहुंच कर फिर कब्ज़ा किया चाहता था मगर सरदार ख़ां ने जो उस सूबे के मददगारों में से था उसको अहमदाबाद में घुसने नहीं दिया तब वह शहर से हटकर कानजी कोली के पास चला गया।

सन् १०६९ हि. संवत् १७१६ सन् १६५९ ई.

औरंगजेब दिल्लीमें.

१९ (जेठवदि ६ । २ मई) को बादशाह खिजराबाद पहुँच कर ११ दिन तक वहां रहे चांदरात (जेठ सुदि १ । १२ मई) को दिल्ली के किले में पहुंचे पंजाब जाने की जलदी से तख्त पर बैठने की खुशी की कुछ धूमधाम न होसकी थी इसलिये अब उसकी तैयारी करने का हुक्म दिया गया।

दूसरा जलूसी साल।

२४ रमज़ान २९ खुरदाद (आसाढ बदि ११ । ९ जून) इतवार को बादशाह बड़े ठाट और ठस्से से तख्त पर बैठे। उस दिन उन की उमर शमसीसाल (सौरवर्षों) के हिसाब से ४० वर्ष ७ महीने १३ दिन की और कमरी साल (चन्द्रवर्षों) के लेख से ४१ वर्ष २ महीने १२ दिन की हुई थी, जब खुतबा पढ़ा गया और उसमें उनका नाम आया तो पढ़नेवाले पर हरतरफ़ से रुपया और अशरफियों का मेह बरसगया। पहिले सिक्के में एक तरफ़ को मुसलमानी कलमा खोदाजाता था बादशाह ने हाथ पैरों के नीचे आजाने में बेअदबी होने से उसको बन्द करदिया और उसकी जगह उस तरफ अपना नाम और दूसरी तरफ सन् जलूस और टकसाल का मुकाम खुदवाया। तुगरा (मुहरछाप) में अबुल मुज़फ्फ़र मुईउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह गाज़ी रखागया। इसी मुहरसे सब सूबो में जिलूस की खुशखबरी के फ़रमान जारी हुए, बादशाहजादों बेगमों अमीरों और सब नोकरों को बड़ी बड़ी बखशिशें और पदवियें मिलीं। शायरों मोलवियों और गवइयों वगैरहों ने भी खूबखूब इनाम पाये। यह खुशीका जिलूस रमज़ान के महीने में हुआ था इसलिये जिलूसी वर्षोंका शुरू १ रमज़ान से रक्खा-

---

१–कलकत्ते की प्रति में १० महीने २ दिन लिखे हैं मगर दोनों प्रतियों में गलती है सही १० महीने १० दिन हैं क्योंकि औरंगजेब का जन्म १५ जीकाद सन् १०२७ को हुआ था। २–यह भी १ मुसलमानी दस्तूर है कि जब नया बादशाह तख्त पर बैठता है तो उसके नामका खुतबा (एड्रेस) पढाजाता है जा फिर जुमे (शुक्रवार) और ईद बकरीद की नमाज़ के पीछे मसजिदोंमें जारी होजाते हैं।

गया और नौरोज़ का जशन (जलेसा) भी जो पहिले ईरानी बादशाह जमशेद और किसरा के क़ायदे से फ़ारसी महीने फरवरदीन की १ तारीख़ को होता था अब से अरबी महीने रमज़ान की पहिली तारीख़ को होना ठहरा। नशे की चीजों को दूर करदेने के लिये मुल्ला "एवजवर्जीह" मुक़र्रर कियागया और १५००० सालाने के बदले उसको १ हज़ारी १०० सवारों का मनसब दिया गया।

बंगाले के अखबार से मालूम हुआ कि शाहजादा मोहम्मदसुलतान शाहशुजाअ के बहकाने से २९ रमजान (आसाढ़सुदि १ । १० जून) को नाव में बैठकर उस के पास चलागया।

२१ शव्वाल (सावनबदि ९ । २ जुलाई) को दाराशिकोह और सिपहेर शिकोह के पकड़ेजाने की ख़ुशख़बरी पहुंची, जमीनदावर के ज़मींदार मलिकजीवन ने दोनों को पकड़कर बहादुरखां के हवाले करदिया था।

बादशाह ने शाहज़ादा मोअज़म की जगह अमीरुलउमरा को दक्खन की सूबेदारी पर भेजा और आकिलखां को बदलकर अक़ीदतखां को औरंगाबाद का किला सौंपा। आकिलखां और वजीरखां को शाहजादे के साथ हजूर में आने का हुक्म लिखा गया।

इसी दिन शाहज़ादे आज़म को भी छठा वर्ष लगा था इसलिये उसको जड़ाऊ सरपेच तलवार मोतियों की माला और ५ घोड़े इनायत हुए।

मलिकजीवन को अच्छी खिदमत करने के इनाम में ख़िलअत हजारी २०० सवार का मनसब और बख़्तयारखां का ख़िताब मिला।

क़ाबिलखां मुनशी ने घर बैठने का इरादा किया था इसलिये उसका ५०००) सालाना होगया।

राजा राजरूप को श्रीनगर के पहाड़ों में जाने की छुट्टी मिली सो वहां के जमींदार पृथ्वीपति को डरा धमकाकर तथा फुसलाकर सुलेमांशिकोह को उसकी पनाह में से निकाल लावे।

---

१ उत्सव। २ कलकत्ते की प्रति में २७ है।

बंगाले के अखबार से अर्ज़हुई कि शाहशुजाअ ने अकबर नगर से टांडे को जातेहुए अलावरदीखां की मनसा अलग होजाने की मालूम करके उसको और उस के बेटे से पुल्लाह को मरवा डाला ।

बादशाह ने किले आगरे के गिर्द शेरहाजी नाम परकोटे के बनाने का हुक्म दिया जो ३ वर्ष में एतबारखां के अहतें माम से पूरा हुआ ।

२३ जीकाद (भादों वदि १० । ३ अगस्त) को बादशाह का कैमरी तुला-दान गरीबों को बांटा गया । सब छोटे बड़े लोगों को खिलअत, इजाफे, मनसब और इनाम में जवाहर हाथी घोडे मिले ।

बहादुरखां दाराशिकोह को लेकर आया जो खिजराबाद में रक्खागया २१ जिल-हज्ज (आसोजवदि ९ । ३१ अगस्त) गुरुवार की रात को उसकी जिंदगी का चिराग़ ठंडा किया गया। लाश हुमायूं बादशाह के मकबरे में गाड़ी गई, सेफखां को हुक्म हुवा कि सिपहरशिकोह को गवालियर के किले में पहुंचाकर आगरे में लौटआवे और वहां की फौजदारी का काम करे ।

राजा जैसिंह जो बहादुरखां से पीछे रहगया था दरगाह में हाजिर आया बाद-शाह ने उस पर बडी महरबानी की उसके और बहादुरखां के बहुत से घोडे दौड़ धूप में मरगये थे इसलिये २०० घोडे उस को और १०० बहादुरखां को इनायत हुए ।

इन्हीं दिनों में आम महरबानी से राहदारी का महसूल नाज और तमाम चीजों-पर से हमेशे के वास्ते उठादियागया। इसके लिये २५ लाख रुपये साल तो बादशाही खालसे में ही बखशे गये जो कुल मुल्कों में से छोड़ गये थे उनका तो कुछ पार नहीं था ।

जुलफिकार खां करांकीनलू मरगया उसके बेटे असदखां और जमाई नामदारखां को मातमी के खिलअत मिले ।

---

१ प्रयल । २ चान्द्रमासीय वर्षगांठ का तुला दान । ३ तुर्कमानों को एक जाति का नाम ।

मोअज्जमखां ने करनाटक की विलायत कुतुबुल्मुल्क से छीन ली थी वह उसके फिर लेने की फिक्र में लगारहता था इसलिये बादशाह ने मीरअहम्मदखवाफ़ी को मुस्तफ़खां का खिताब देकर उस मुल्क के बंदोबस्त पर भेजा।

जमीनदावर के ज़मींदार बखतियार खां को घर जाने की रुखसत मिली।

काबुल के अखबार से मालूम हुआ कि नुजहतखां के पोते शेरुल्लाह ने अपने बाप से आदतखां को जमधर मारकर मारडाला और महाबतखां सूबेदार ने उसको पकड़रक्खा है, सआदतखां की जगह शमशेरखां काबुल की किलेदारी पर भेजागया।

तूरान के अखबार में लिखाआया कि बलख के हाकिम सुबहानकुलीखां और उसके भाई कासिम सुल्तान में जो हिसार का हाकिम था, बिगाड़ होकर सुबहान-कुली खां ने कासिम को दगा से मारडाला।

शाहज़ादे मोहम्मदसुलतान के शाहशुजा की तरफ चलेजाने से बंगाले के बाद-शाही लशकर को बड़ा धक्का लगाथा। मगर मोअज़्ज़मखां के वहां रहने से सब तरह की तसल्ली थी। तो भी बादशाह ४१ वें शमसी साल लगने का तुलादान करके (२०) रबीउलअव्वल सन् १०७० (पोस बदि ६। २५ नवम्बर) को गंगाकी तरफ़ रवाने हुए।

राजा जसवंतसिंह को महाराजा का खिताब बहाल होकर कसूरोंकी माफी मिली।

६ लाख ३० हजार रुपया की जिनस मक्के और मदीने के शरीफों (महं-तों) को भेजी गई।

सन् १०७० हि॰ संवत् १७१६ सन् १६६०

औरंगजेब गढमुक्तेश्वर और शमसाबादमें.

१९ रबीउलअव्वल (पौसबदि ५। २४ नवंबर) को गढ मुक्तेश्वर में डेरे हुए।

२२ (पौसबदि ८। २७ नवम्बर) को शाहज़ादा मोहम्मद मोअज़म और वज़ीरखां दक्षिण से आये।

१५ रबीउलसानी (माहबद २। २० दिसम्बर) को शाहजादे मोअज़म की शादी खुरासान की एक शरीफ लड़की से हुई।

---

(१) औरमासकी ३५ पा॰। (२) कलकत्ते का आलमगीरनामा ८ रबीउलअव्वल मगसर सुदि १० । १३ नवम्बर। ३ कुलीन।

४ जमादिउलअव्वल (माहसुदि ६ । ७ जनवरी १६६०ई) को गढ़मुक्तेश्वर से इलहाबाद को कूचहुआ ।

इन्हीं दिनों में मोअज्जमखां की अरज़ी आई कि गंगा से उतरकर शाहशुजाअ की मुहिम पूरी करने में लगाहुआहूं और शाहशुजाअ जो टांडे में ठहराहुआथा जहांगीर-नगर को चलागया है ।

सन् १०७० हि. संवत् १७१७ सन् १६६० ई.

औरंगजेब दिल्लीमें.

बादशाह की असली मनसा इस दौरे से बंगाले के लशकर को मदद पहुंचाने की थी अब जो इस अरज़ी से तसल्ली होगई तो शमशाबाद से लौटकर ११ जमादिउलआखिर (फागुण सुदि १२ । १२ फरवरी) को दिल्लीके किले में दाखिल होगये और नमाज़ पढ़नेके लिये अपने महल के पास १ छोटी सी मसजिद सफेद पत्थर पर पच्चीकारी के काम की बनवाई जो ५ वर्षमें १ लाख २५ हज़ार के खर्च से तैयार हुई ।

बंगाले के अखबार से अरज हुई कि जब शाहशुजाअ जहांगीर नगरसे भागा तो शाहजादा मोहम्मद सुलतान अपनी करनीसे पछताकर जैसा गया था वैसाही अकबर नगरमें इसलामखां के पास चलाआया । बादशाहने हुक्मदिया कि मोहम्मद मीरक गुर्जबरदार तो नादरी का खिलअत उसके वास्ते लेजावे और फिदाईखां जाकर उसको हजूरमें लावे, जब शाहजादा दिल्ली के करीब पहुंचा तो २५ शाबान (जेठबदि १२ । २६ अप्रेल) को अलायारखां पेशवाई करके उसको जमुना-के जलमार्ग से सलीमगढ में पहुंचाआया और मोतमिदखां को उसकी निगह-बानी सौंपी गई ।

तीसरा आलमगीरी सन् ।

रमजान सन १०७० (जेठसुदि २ । १ मई) को तीसरा वर्ष लगा ४ (जेठ सुदि ५ । ४ मई) को खुशी का जशन हुआ अमीरोंके मनसब बढे ।

बंगाले से खबर आई कि शाहशुजाअ जहांगीर नगरमें भी न ठहरसका ६ रम-जान (जेठ सुदि ७ । ६ मई) को रखंग[1] की विलायत में भागगया मोअज्जमखां जहांगीर नगर में दाखिल हुआ ।

---

(१) अराकान ।

२४ (द्वितीय जेठ वदि ११ । २४ मई) से जो दूसरे जलूस का दिन था ईद (द्वि. जेठसुदि ३ । ३१ मई) तक खुशी की मजलिसें और बखशिशें होती रहीं । ईदके दिन बादशाह ने ईदगाह में जाकर नमाज पढी ईदसे दो दिन पीछे तक भी मजलिसें हुईं ।

बादशाही लशकर के पीछा करनेसे शाहशुजा का हाल यहां तक पतला होगया था कि सैयद आलम बारहके १० सैयदों और सैयद कुली उजबक १२ मुगलों और कई दूसरे आदमियों के सिवाय और कोई उसके पास नहीं रहा था । वह भागता भटकता विकट जंगलों और गहरी दरियाओं को पार करता हुआ दुनिया भर की बस्तियों से दिल उठा कर रखंग के टापू में पहुंचा और वहां के जंगली आदमियों और जानवरों में रहने लगा उसका जो परिणामहुआ वह आगे लिखा जावेगा ।

१७ जीकाद (सावन वदि ५ । १६ जुलाई) को ४४ वीं कमरी सालग्रह का तुलादान हुआ । बादशाहजादों और आमलोगों पर बडी बडी इनायतें हुईं ।

मोअज्जमखां सूबेदार बंगाले को खानखानां का बडा खिताब सिपहसालारी का ओहदा ७ हजारी ७ हजार सवार । दुअस्पे तिअस्पे का मनसब ।मिला । जडाऊ तलवार समेत खिलअत भी शाहशुजाअ का निकाल देने के इनाम में उसके वास्ते भेजा, गया बंगाले के लशकर में जो अमीर थे और जो हजूरमें हाजिर थे या सूबों में सूबेदार थे उन सब को भी खिलअत और इनाम मिले ।

निजाबतखां पर एक कसूर से खफ़गी थी इस सबब से वह बगैर हथियार के दरबार में आता था सो उसको तलवार इनायत हुई ।

काशगर के हाकिम अबदुल्लाहखांका भाई मनसूर और उसका भतीजा महदी दोनों भागकर बदखशां के रस्ते से हिन्दुस्तान में आये और बादशाह की खिदमत में हाजिर हुये ।

बेगमसाहिब दूसरी बेगमों और बादशाहजादों की नजरों के जवाहर और जडाऊ गहने बादशाह की नजर से गुजरे ।

---

(१) २ घोडोंकी तनख्वाह पानेवाला सवार (२) ३ घोडोंकी तनख्वाह पानेवाला सवार ।

बकराईद (सावन सुदि २ । २९ जुलाई) के दिन बहुत से आदमियों को बख़शिशें मिलीं ।

रावकरण भुरटिया दाराशिकोह के बहकाने से बिना रुखसत ही दक्खन से अपने वतन को चलागया था इस लिये अमीरखां को हुक्म हुआ कि जाकर उस को सजादे और जो माफी चाहे तो अपने साथ ले आवे, अमीरखां जब बीकानेर के पास पहुंचा तो रावकरन उससे मिला और उसके साथ दरगाह में आया अमीरखां की सिफ़ारिश से उस के कुसूर बखशेगये ।

सन् १०७१ ।

७ मोहर्रम सन् १०७१ (भादों सुदि ९ । ३ सितम्बर) को इख़्लासखां शाहसुजाअ के खजाने जवाहरखाने और जनाने को लेकर बंगालेसे आया ।

इन्हीं दिनों कोकन में चाकने का किला दक्खिन के सूबेदार अमीरुलउमरा की कोशिश से फ़तह हुआ क्योंकि उसको सेवा के निकालने और उसके किलों के फतह करने का हुक्म दियागयाथा जो उसने बीजापुर में गदर होने और वहां के बड़े अमीर अफ़जलखां को मरवाडालने से दबालिये थे अमीरुलउमरा ने कई जगह उसके आदमियों को भी पूरी २ सजा देकर शाही थाने बैठादिये ।

४३ वें शमसी साल लगने का तुलादान हुआ ।

इन्हींदिनों में परेंडा का किला भी लड़ाई के बिना ही फतह होगया वहां जो गालिब नाम किलेदार आदिलखां की तर्फ से था उसने बादशाह की नौकरी करने का इरादा करके अमीरुलउमरा के पास किला सौंप देने का संदेसा भेजा, उसने मुखतारखां को वहां की किलेदारी पर भेजकर गालिब को अपने पास बुलालिया बादशाह ने गालिब के वास्ते खान का खिताब चारहजारी मनसब खिलअत और इनाम भेजा ।

श्रीनगर के पहाड़ों के राजा पृथ्वीसिंह ने कसूर माफ कराने और सुलेमांशिकोह के सौंप देने का ख़त राजा जैसिंह को लिखा । राजा की अरज़ पर बादशाह ने उसके कंवर रामसिंह को सुलेमांनशिकोह के लानेके लिये भेजा । उसने ५ जमादिउल-अव्वल (पोस सुदि ७ । २८ दिसंबर) को दिल्ली में लाकर सलीमगढ में सौंप दिया ।

२४ (माह वदि ११ । १६ जनवरी) को मुरतिजा खां[1] दूसके और मोहम्मद सुलतान को गवालियर के किले में पहुंचा आया, मोतमदखां किलेदार हुआ ।

सूरतबंदर के अखबार से अरज़ हुई कि बसेरे के हाकिम हुसेनपाशा ने बादशाह के जिलूस की मुबारकबादी की अरजी और अरबी घोडों की नजर कासिम आका के साथ भेजी है, बंदरसूरत के मुत्सद्दी मुसतफ़ाखां को हुक्म लिखागया कि४०००) देकर कासिम को हजूर में रवाने करे ।

इसी अरसे में बलख के हाकिम सुबहानकुलीखां का वकील खत और तूरान के तुहफ़े लेकर आया मगर बीमार होने से मरगया उसके साथी खिलअत और २००००) पाकर रुखसत हुए ।

इस वर्ष अकसर सूबों में काल पडाहुआ था इस लिये हुक्म हुआ कि मामूली लंगरखानों के सिवाय १० लंगरखाने दिल्ली में और १२ आसपास के परगनों में गरीबों के वास्ते खोलेजावें ऐसेही लंगरखाने लाहौर में भी खोले गये और नकद रुपया जो मोहर्रम, रबीउलअव्वल, रजब, शाबान, रमजान, और जिलहज्ज के महीनों में बांटा जाता था वह इस साल दूना करदिया गया और हजारी तक के अमीरों को भी अपनी २ तर्फ से खैरात जारी करने का हुक्म हुआ जबतक कालकी तकलीफ न मिटी यह मदद जारी रही ।

चौथा जलूसी सन् ।

१ रमज़ान (वैसाख सुदि ३ । २१ अप्रेल) से चौथा जलूसी सन् लगा ।

मजलिसें जो २४ रमजान (जेठ वदि ११ । १४ मई) से पिछली सालमें शुरू हुई थीं रोजों के सबब से १ शव्वाल (जेठ सुदि २ । २० मई) से १० दिन तक मुकर्रर की गई ।

बादशाहजादे मोहम्मद मुअज्जम के लडका हुआ बादशाह ने मोअज्जुद्दीन उसका नाम रक्खा ।

---

(१) बसरा अरब में १ बंदर है जहां रूमके सुलतानकी अमलदारी जब भी थी और अब भी है । (२) हज़ारीमनसबके अमीरों ।

ईरानके बादशाह शाहशुजा का एलची बबादकबेग ३० शाबान (बैसाख सुदि २ । २० अप्रेल) को मुलतान में पहुंचा था, वहां के सूबेदार तरबीयतखां ने जिया-फतें करके ५०००) और ९ थान कपडों के उसे दिये । लाहौर में खलीलुल्लाहखां ने अच्छी दावतें दीं २००००) मीनाकार खंजर शमशेर और ७ थान हिन्दुस्तान के उमदा कपड़े भेंट किये । जब यह सरायबावली में पहुंचा तो बादशाह ने अपना झूटा खाना और ३ शव्वाल (जेठसुदि ४ । २२ मई) को आकर जमीन चूमने का हुक्म भेजा ।

१ शव्वाल (जेठ सुदि २ । २० मई) से जुलूसी महफिलें शुरु हुई बादशाह ने ईद की नमाज पढकर बादशाहजादों अमीरों राजों महाराजों और सरदारोंपर उनकी उमेद से जियादा इनायतें कीं ।

कासिमआका रूमीने हाजिर होकर ५ अरबी घोडे हुसेन पाशा की तरफ से और कई घोडे और गुरजी गुलाम अपनी तर्फ से नजर किये खिलअत और ५०००) उसको मिले ।

३ (जेठ सुदि ४ । २२ मई) को अबदुल्लहखां सफीखां और मुलतिफखां शहर के बाहर जाकर ईरान के एलची को दरगाह में लाये । उसने आदाब बजा-कर शाह का खत जो तख़तनशीनी की मुबारकबाद में था बादशाह की नजर से गुजराना । खिलअत जीगा जड़ाऊ खंजर:मजलिसीअरगजा प्याला सोनेका ख्वांन-चा पान पानदान और सोने का ख्वांन इनायत हुआ, रुस्तमखां की हवेली रहने के वास्ते मुकर्रर हुई और मीरअजीज बदखशी महमानदारी पर तइनात हुआ ।

७ शव्वाल (जेठ सुदि ८ । २६ मई) को एलचीने शाह की सौगातें बादशाह को दिखाईं जिनमें ६६ घोड़े और १ मोती ३७ कीरात (२४२ रत्तीभर) का भी था. कुल सौगात ४ लाख २२ हजार रुपये की आंकी गई ।

१९ जीकाद (सावन बदि ६ । ७ जोलाई) को ४९ वें कमरीवर्ष लगने का तुलादान और दरबार हुआ हजूर और दूर के सब छोटे बडे अपनी मुरादों को पहुंचे ।

---

(१) गुर्जिस्तानके रहने वाले । (२) कलकत्ते की प्रांत में असदखां है । (३) छोटाथाल (४) बड़ाथाल ।

१० जिलहिज्ज (सावन सुदि ११ । २७ जोलाई) को ईद की खुशी और ईरानी एलची की रुखसत हुई १ लाख रुपया खिलअत, मीनाकार खंजर मोतियों की लड़ीसमेत सोने की जीन, और लगाम का घोड़ा सोने की जीन चांदी के साज और झूल का हाथी और १ हाथी दरयाई, और पालकी सोने के समान की, उसको इनायतहुई, खत का जवाब पीछे से भेजना ठहरा एलची को अव्वल से आखिर तक ५ लाख और उसके साथियों को २६०००) मिले थे।

आकिलखां ने घरमें बैठने की अरज की उसको ९०००) सालाना मुकर्रर होगया।

इन्हीं दिनों में ४४ वें शमसी साल लगने का तुलादान और दरबार हुआ।

हुसेन पाशा का वकील कासिमआका १००००) और खिलअत पाकर रुखसत हुआ. उसके साथवालों को १०००)मिला और एक जड़ाऊ तलवार हुसेनपाशा के वास्ते भेजी गई।

सन् १०७२ (सं० १७१८)

४ रबीउलसानी सन् १०७२ (मगसर सुदि ६ । १७ नवम्बर) को बुखारा के खान अबदुलअजीजखां का एलची ख्वाजाखावंद महमूद दिल्ली के पास पहुंचा सफ़ीखां और किबादखां पेशवाई करके उसको दरगाह में लाये। उसने खत और सौगात के तुरकी कदमबाज घोडे ऊंट ऊंटनियां और दूसरे तुहफे नजर किये। जिनमें से एक लाल की कीमत २४०००) की ठहरी। बादशाहने उसको खिलअत मोतियों की लड़ीका खंजर २००००) और रहने के वास्ते मकान इनायत किया।

इन्हीं दिनोंमें राजा रूपसिंह की बेटी जिसे मुसलमान करके महल में तालीम दीगई थी शाहजादे मोहम्मद मुअज्जम से ब्याही गई। इस शादी की महफिलें बड़ी धूमधाम से हुई थीं।

पटने के सूबेदार दाऊदखां ने बदोऊं की बलायत जो सूबे बिहार के इलाकोंमें से थी बडी २ लडाइयां लडकर फतह की थी इसलिये उसके वास्ते खिलअत भेजा गया।

---

(१) पलामू।

सैयद अमीरखां महावतखां के बदले जाने से क़ाबुलका सूबेदार हुआ।

१ रजब (फागुन सुदि ३।११ फरवरी सं. १६६२) को फाजिलखां ने आगरे से पहुंचकर कुछ जवाहरात और जडाऊ सामान जो आलाहजरत (शाहजहां) ने भेजे थे नजर किये।

२ (फागन सुदि ४ । १२ फरवरी) को अरज हुई कि लाहौर का सूबेदार खलीलुल्लाहखां जो बीमार होकर दिल्लीमें आया था मरगया। बादशाह उसके मकान-पर गये। मीरखां, रूहुल्लाहखां और अजीजुल्लाहखां उसके बेटों और दूसरे भाई-बंदों को खिलअत देआये। मुमताज, ज़मानी (ताजबीबी) की बहन मलिकाबानू की बेटी हमीदाबानू उसकी बीबी थी इसलिये उसका ५० हजार रुपये साला-ना मुकर्रर होगया।

६ रजब (फागुन सुदि ९। १६ फरवरी) को शाहजादे मोहम्मद अकबर की मुसलमानी हुई।

बुखारा के ड्योढीदार ख्वाजा अहमद को खिलअत मोतियों की लडी का जडाऊ खंजर और ३० हजार रुपया मिला और जानेकी इजाजत हुई अव्वल से आखिर तक १ लाख २० हजार रुपया उसे पहुंचा था।

१ शाबान (चैत्र सुदि ३ । १२ मार्च) को शुजाअ के हाथियों में से ८० और पलामूं की लूटके २ हाथी खानखाना के भेजे हुए बादशाह की नजर से गुजरे।

बादशाह की शिकारोंमें इस साल १५० कुलंग बाजों से पकडाये गये थे और कमरगे (हाके) का शिकार भी हुआ था। जिसमें ३५५ हरन जालसे पकड़े गये ७८ बादशाह के और ४७ दूसरे आदमियों के हाथसे जिनको शिकार की छूट होगई थी मारे गये। बाकी को छोडदेने का हुक्म हुआ यह भी अर्ज हुई कि हरन तो बहुतसे घेरे गये थे मगर सब भड़ककर हांकनेवालोंपर दौड़पड़े १०७० हरन तो ५ आदमियों को (जिन में से २ तो वहीं मर गये) सींग मारकर निकल गये।

उन दिनोंमें यह १ अजब बात बादशाहसे अर्ज हुई कि कुछ लड़के क़सबे सोनपतमें बादशाह और वजीर का खेल खेलरहे थे दो आदमी चोर निकले कोत-

वाल उनको हाकिम के पास लाया उसने सजादेने को इशारा किया कोतवाल के हाथ में एक लकड़ी थी उस नादान ने उनके शिरपर ऐसी मार मारी कि दोनों मरगये और वह खेल एक आफत होगया।

कूचविहार और आसामकी फतह।

जब सन् १०६७ के अखीर (संवत् १७१७ के बीच) में आलाहजरत (शाहजहां) के बीमार होजाने से तमाम शरहदोंपर गड़बड़ मचगई थी तो कूचविहार का जमींदार प्रेमनारायण बादशाही कब्जे की वलायत कामरूप को दबाबैठा। इधर से आसाम के राजा विजैयसिंहने भी जो अपनी वलायत को बादशाही लशकरों की चढाईयों से बचाये रखता था एक वडा लशकर खुशकी के रस्ते से कामरूप को भेजा। खानखाना इन दोनों के निकालने की तैयारी करके बादशाह से मंजूरी मंगवाकर १८ रबीउलअव्वल (मगसर वदि ५ । १ नवम्बर) को खिजरपुरसे इधर गया। (२७ मगसर वदि १४ । १० नवम्बर) को कूच विहार पहुँचा जिसका नाम आलमगीरनगर रखकर २८ (मगसरवदि ३० । ११ नवम्बर) को थोडा घाट के रस्ते से आशामपर चढ़ा ५ महीने की महनत के पीछे ६ शाबान (चैत सुदि ८ । १७ मार्च) को आशाम का राजस्थान गिरगांव फतह हुआ। बहुतसी लूट हाथ लगी, जब इस वडी फतह की खबर खानखाना की अरजी से बादशाह को मालूम हुई तो मेंहरवानी से उसके बेटे मोहम्मदअमीन को जो हजूर में था खिलअत इनायत हुआ और उसके वास्ते भी शाबाशी का फरमान और खासा खिलअत भेजा गया।

इस चढ़ाई की लूट और आशाम की अनोखी चीजों और बातों का पूरा २हाल आलमगीरनामे में लिखाहे।

पांचवां आलमगीरी सन्।

१ रमजान (वैशाख सुदि २ । १० अप्रेल) से पांचवां जुलूसी सन् लगा। मामूली महफिलों और आतिशबाजी की तैयारी होने लगी बादशाहने ईद की

(१) कलकत्ते की प्रति में जयध्वजसिंह है।

नमाज पढकर हाजिर और गैरहाजिर अमीरों को जो सूबोंमें नोकरीपर थे इनाम और खिलअत बखशे नजरें और पेशकशें भी कबूल हुई।

२ (वैशाख सुदि ४ । ९—१२ अप्रेल) को बादशाह बीमार हुए बहुत सा खून निकलवाने से बेहोशी होगई, १० जिलहज (सावन सुदि १२ । १७ जोलाई) तक वही हाल रहा, हकीम मोहम्मद अमीन और हकीम महदी ने इलाज किया, बीमारी दूर करने वाली खैरातें हुईं १० (सावन सुदि १२ । १७ जोलाई) को बकराईद के दिन बादशाह नमाज पढने को ईदगाहमें गये॥

सब लोग उनको देखकर खुश हुए मानों दो ईदें हुईं।

११ (भादों वदि ३ । १३ जोलाई) को ४६ वें कमरी साल लगने का तुलादान हुआ।

१७ (भादों वदि ४ । २४-जोलाई) को बादशाह नहाये।

सन् १०७३ सं० १७१९।२०

गुजरात की सूबेदारी महाराज जसवंतसिंह से उतरकर महाबतखां को मिली। उसका मनसब भी बढकर ६ हजारी (९ हजार सवार का) होगया।

रु बुखारीको, जो घर में बैठ रहा था ढाई हज़ारी, (४०० सवारों का) मनसब त हुआ।

अ ां के नौकर जो पेशकश लेकर आये थे खिलअत पाकर रुखसत हुवे।

तकरुबखां मरगया उसके बेटे मोहम्मदअलीखां को जो बापके कसूर में मनसब से दूरहोगया था मातमी का ख़िलअत डेढ़ हजारी, २०० सवार का मनसब इनायत हुआ। सैफखां ने जो सरहदमें बैठ रहा था हाज़िर होकर खिलअत तलवार और दो हज़ारी डेढ़हजार सवार का मनसबदारी पाया।

१ जमादिउलअव्वल (पौषसुदि ३ । ३ दिसम्बर) को ४५ वें शमसीसाल का तुलादान हुआ।

निजाबतखां को फिर ५ हजारी ४००० सवार का मनसब मिला॥ यह पहिले साल में एक कुसूर के सबबसे खफगी में आया हुआ था।

---

(१) बादशाहने महाराजा जसवंतसिंहको गुजरातकी सूबेदारी देकर दाराशिकोह की मदद से बाज रक्खाथा।

सन् १०७३ हि० संवत् १७१९ सन् १६६३ ई०

औरंगज़ेब-लाहौरमें.

७ (पौस सुदि ९ । ९ दिसम्बर) को बादशाह पंजावकी तर्फ़ रवाने हुआ। करनालसे फ़ाजिलखां को फालतू कारखानों के साथ सीधे रस्ते से लाहौर जानेका हुक्म दिया और आप मुखलिसपुर की तर्फ से शिकार खेलते हुए १० रजब (फागुन सुदि १२।२ फरवरी १६६३ई०) को लाहौर में पहुंचे और खिदमतगारखां को कशमीरका रस्ता साफकरने के वास्ते भेजा।

१९ रजब (चैतवदि २ । १४ फरवरी) को जूनागढ के फौजदार कुतुबुद्दीनखां ने जामनगरके जमीदार शत्रुसाल के चचा रायसिंह को ३०० भाई बंदों समेत मारडाला क्योंकि उसने शत्रुसाल के बाप रायमल के मरे पीछे फसाद करके शत्रुशाल को निकाल दिया था।

जामनगर का नाम बादशाह ने इसलामनगर रखा।

आसाम का बाकी हाल।

खानखानां ने बरसात तैर करने के लिये मथुरापुरमें छावनी डाली थी। मेह बरसने पर तमाम जगह पानी ही पानी होगया। आसामवाले छेड छाड करने लगे सिपाही घोडेपर सवार नहीं होसकतेथे। राजा पेमनारायण ने भी कामरूप के पहाडों से निकलकर थाने उठादिये। करगांव और मथुरापुर के सिवाय और कोई जगह बादशाही कब्जे में नहीं रही, रसद बंद होगई हवा खराब होजाने से मरी पड़ी, बहुत से आदमी बादशाही लशकर के सिपाहियों और जानवरों की खुराक चांवल और गायके मांस पर थी। जो दुशमनों से बहुतसी छीन लीगईथीं। चारा बिलकुल नहीं था बीच में मेह थमा तो नाज की नावें भी आईं। रबीउलअव्वल के आखीर (मगसर वदि में) पर जमीनें पानी में से निकलीं और फौजों ने आसपास में दौड़कर फिर कतल करना शुरू किया। राजा पहाड़ों में भाग गया और सुलह चाहने लगा मगर खानखानां सुलहको कबूल न करके कामरूप को

(१।२) कलकत्ते की प्रति में नामरूपहे।

रवाने हुआ। रस्ते में बीमार होगया। सिपाही जो मेहनत करते २ थक गये थे खानखानांके मर जानेके डरसे उसको छोड कर बंगाले को चलदिये, खान इस बातसे नाराज होकर ४ जमादिउलअव्वल (पौसखुदि ६ । ६ दिसम्बर) को १ मंजिल और आगे गया लेकिन उसने फिर लौट चलना उचित समझा, राजा ने अपना पकड़ा जानां करीब देखकर दिलेरखां का वसीला उठाया उसने खानखानां को राजी किया।

५ जमादिउलसानी (माहसुद ७ । ६ जनवरी) को राजा के वकील आये। २० हजार तोला सोना १ लाख २० हजार तोला चांदी २० हाथी सरकार के लिये १५ खानखानां के और ५ दिलेरखां के वास्ते लाये बाकी पेशकशें - पहुंचने तक आसाम के राजा की बेटी और बेटेको जो कूचविहार के राजा का नजदीकी रिस्तेदार था और भी बड़े २ सरदारों के ४ बेटों को बंगाले में रहनेके लिये लश-कर में छोड़गये।

१० (माहसुद १३ । ११ जनवरी) को खानखानां कामरूपके पहाडोंके नाके से लौटकर २९ (फागुनसुदि १—३० जनवरी) को लखूगर में पहुंचा।

१३ रजब (फागुण सुदि १५ । १२ फरवरी) को कचली से कूचकरके गांव बाड़ू में गवाहट्टी के सामने नदी के उधर उतरा, रशीदखां को कामरूपकी फौज-दारी पर भेजा. इस बीचमें खानखानांकी बीमारी बहुत बढगई थी इस लिये उसने असकरखां को कूचबिहार के फतह करने पर भेजा जिसे राजा पेमनारायण ने ले लिया था फिर खानखानां खिजरपुर को रवाने हुआ और १०रमजान (द्वि० चैतसुदि १२ । ९ अप्रैल) को खिजरपुरसे २ कोस इधर मरगया।

छठा आलमगीरी सन्।

१ रमजान (चैत सुदि ३ । ३१ मार्च) को छठा जिलूसी वर्ष लगा।

२५ रमजान (वैसाख वदि १२। २४ अप्रैल) से दिल कुशाबाग में, जो रावी नदी के पार है, जशन की तैयारियां होने लगीं। बादशाह भी उसी दिन कश-मीर जाने के इरादेसे उस बागमें आगये और खानखानां के मरने की खबर सुनकर

---

(१) कलकत्ते की प्रति मे ८ हजार तोला लिखा है (२) कलकत्ते की प्रति में दोनों राजाओंकी एक एक बेटियाँ लिखी हैं।

शाहजादे मोहम्मद मोअज्जम को मोहम्मद अमीनखां के डेरे पर भेजा। वह उसको हजूर में लेआया।

बादशाह ने उसको मातमी का खिलअत दिया।

ईद के दिन (वैशाख सुदि २ । २९ अप्रेल) को शाहजादों और अमीरों को बखशिशें मिलीं।

३ शव्वाल) वैसाख सुदि ४ । ५ । १ मई) को कूच हुआ, इन दिनों में सेना ने अमीरुलउमरा के डेरे पर छापा मारा। उसका बेटा अबुलफतह मारागया, अमीरुलउमरा की उंगली कटगई यह वारदात अमीरउलउमरा की गफ़लत से हुई थी इस लिये बादशाह ने खफा होकर दक्खिन की सूबेदारी उससे छीन कर शाहजादे मोहम्मद मोअज्जम को दी और अमीरउलउमरा बंगाले की सूबेदारीपर भेजागया जो मोअज्जमखां के मरजाने से खालीथी।

सन् १०६७ हिजरी। संवत् १७१४। सन् १६५७ ईसवी.

औरंगज़ेब कश्मीरमें.

१४ (वैसाख सुदि ११ । १२ मई) को भंबर में जहाँ से कश्मीर के पहाड शुरू होते हैं डेरे हुए मगर लाहौर में देर होजाने से पीर पंचाल के रस्ते का वर्फ पिघलगया था इसलिये उधर से जाना ठहरा। राजा जैसिंह और निजाबतखां को फालतू उर्दू के साथ चिनाब नदी के किनारे पर ठहरने का हुक्म हुआ। ताहिरखां और बहुतसे अमीरों को जागीरों में जानेकी रुखसत मिली, सफाशिकनखां और कई अमीर भंबर की घाटी के नीचे चौकसी रखने के लिये तइनात हुए दूसरे अमीर और अमले वाले जो सवारी में थे उनको मोहम्मदअमीनखां और फाजिलखां के साथ तीन मंजिल पीछे पीछे आनेका हुक्म दियागया।

१६ (जेठबदि २ । १४ मई) को भंबर से कूचहुआ, पीर पंचाल पहाडसे उतरते हुए एक बडा हाथी चौंक कर बगूलेकी तरह से अचानक बेहीर में जापड़ा जिससे उस तंगघाटी में बड़ी खलबली मची कई सरकारी हथनियां और बोझ ले-

---

(१) फौज का बाजार वगैरह।

जानेवाले आदमी उसकी झपट से नीचे खड्डोंमें गिरकर ऐसे चकनाचूर हुए कि हाथियों तककी हड्डी ढूंढी नहीं मिली आदमियों का तो कहनाही क्या है। इस भयानक धक्के से बादशाह भी घबरागये और उसी दम उन्होंने अपने दिल में यह बात ठहरा ली कि फिर कशमीर देखने को नहीं आवेंगे।

१ जीकाद (जेठ सुदि ३ । २९ मई) को कश्मीर में पहुंचे। राजा रघुनाथ दिवान मरगया था इस लिये ११ (जेठ सुदि १३ । ८ जून) को बजीरका ओहदा फाजिलखां को और खानसामानी का ओहदा इफ़तखारखां को इनायत हुआ।

आलाहजरत (शाहजहां बादशाह) के राज में हरसाल ७९ हजार रुपये ५ महीनों में खैरात होते थे और ७ महीनों के वास्ते कुछभी नहीं था। बादशाह ने हुक्म दिया कि उन ५ महीनों में तो वही ७९ हजार रहें और बाकी ७ महीनों के वास्ते दस हजारका महीना मुकर्रर करके सालभर में कुल १ लाख ४९ हजार रुपये गरीबों को बांटे जाया करें।

१७ जीकाद (असाढ बदि ४ । १४ जून) को ४७ वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान होकर हजूर और सूबों के सब बंदों को बख़शिशें मिलीं।

फाजिलखां दीवान होते ही बीमार होकर २७ (असाढ बदि १४ । २४ जून) को मरगया। उसके भतीजे बुरहानुद्दीन को जो उसी वक्त ईरान से आया था मा-तमीका खिलअत मिला।

सन् १०७४ हि.

बादशाह कश्मीर के सब स्थानों की बहार देखकर २२ मोहर्रम (भादोंबदि ८ । १६ अगस्त) को लाहोर की तरफ को लौटा। मालवे का सूबेदार जाफ़रखां वज़ीर बनाने के लिये हजूर में बुलायागया और निजाबतखां उसकी जगह भेजागया।

७ रबीउलअव्वल (आसोज सुदि ८ । २९ सितंबर) को बादशाह लाहौर में पहुंचे।

११ रबीउस्सानी (कातिक सुदि १२ । २ नवम्बर) को ४६ वें शमसी साल लगने का तुलादान हुआ।

आकिलखां को फिर २ हजारी ७०० सवार का मनसब मिला।

तरबीयतखां शाह ईरान अब्बास सफ़वी के खतका जवाब और ७ लाख रुपये की निहायत तुहफ़ा चीजें लेकर ईरान को रुख़सत हुआ।

सन् १०७४ हि० संवत् १७२१। सन् १६६३ ई०

औरंगजेब दिल्लीके रस्तेमें.

१७ (मगसर वदि ४ । ८ नवम्बर) को दिल्ली की तरफ़ कूच हुआ। जाफ़रखां ने पानीपत में हाज़िर होकर वजीरका बड़ा ओहदा पाया।

सन् १०७५ हि० संवत् १७२१ सन् १६६४ ई०

औरंगजेब दिल्लीमें.

चांदरात (मगसरसुदि २।२१ नवम्बर) को बादशाह की सवारी दिल्लीमें पहुंची

सातवां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (चैत सुदि २। २० मार्च १६६४) को सातवां जिलूसी वर्ष लगा) खुशी की मामूली मजलिसें ईद की नमाजें और बखशिशें हुई नजरें और पेशकशें लीगईं।

२१ जीकाद (असाढ़वदि ७। ६ जून) को ४८ वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान और जलसा हुआ।

शाहज़ादे मोहम्मद मुअज्जम की अरजी मोअजुद्दीन की मां से फिर एक लड़का पैदा होने की पहुंची बादशाह ने उसका नाम आअजुद्दीन रक्खा।

मुस्तफ़ाखां बुखारा और बलख के खानों के खतों का जवाब लेकर तूरान को रुखसत हुआ। एक लाख ९० हजार के जवाहर और जडाऊ चीजें तूरान और बुखाराके हाकिम अबदुलअजीजखां के लिये और एक लाख रुपये की बलख के खान सुबहानकुलीखां के वास्ते भेजी गई।

महाराजा जसवंतसिंह ने सेवा को सज़ा देने और उसके किलों के फतह करने में मिहनत तो बहुत की थी लेकिन जो बात बादशाह चाहते थे वह नहीं हुई इसवास्ते राजा जैसिंह को दूसरे नामी अमीरों के साथ उसके ऊपर विदाकिया।

१९ रबीउलसानी (मगसर वदि ५ ।२९ अक्टूबर) को ४७ वें शमसी साल का तुलादान हुआ, बादशाह जादों और अमीरों के मनसब बढे ।

निजाबतखां के मरजानेसे खानदेश का सूबेदार वजीरखां मालवे का सूबेदार हुआ और खानदेश की सूबेदारी दाऊदखां को मिली जो राजा जैसिंहके मददगारों में था । उसको हुक्म पहुंचा कि अपने किसी भाई बंद को बुरहानपुर में छोडकर राजा के साथ जावे ।

बादशाहजादे मोहम्मदमोअज्जम की अरजी रूपसिंह राठोड की बेटी से २८ जमादिउलअव्वल (पौस वदि ३ । ७ दिसम्बर) को लड़का पैदा होने की आई जिस का नाम बादशाह ने सुलतान मोहम्मद अजीम रखा ।

आठवां आलमगीरी सन् ।

१ रमज़ान (चैतसुदि ३ ।९ मार्च सन् १६६५) से आठवां जिलूसी सन लगा मामूली महफिलें और बखशिशें हुई ।

हाजी अहमदसईद ने जो ४ वर्ष पहिले ६ लाख ६० हज़ार रुपयेकी भेट लेकर मक्के और मदीने को गया था अब वहां से आकर १४ अरबी घोडे भेट किये । शरीफ मक्के का आदमी सैयद याहा भी अरबी घोडे और तबर्रूक (प्रसाद) लेकर आया उसको खिलअत और ६०००) इनाममें मिले ।

हब्श और हजरमौत के हाकिमों के वकील सैयद कामिल और सैयद अबदुल्लाह अरजियां और सौगातें लेकर आये और वे खिलअत और रोकड़ रुपये पाकर निहाल हुए ।

यमन के हाकिम इमाम इसमाईल ने ९ अरबी घोडे भेजे ।

अब के नौरोज की महफ़िलें ५ दिन तक हुई ।

आगरे का किलेदार एतबारखां मरगया वहां का फौजदार रादअंदाजखां किलेदार हुआ और उसकी जगह होशदारखां को मिली ।

८ जीकाद (जेठ सुदि १० । १४ मई) को महाराजा जसवंतसिंह ने दक्खन से आकर मुलाज़मत की ।

१७ (असाढ वदि ९ । २३ मई) को ४९ वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान हुआ, हज़ूर और दूरके वंदों को निवाज़िशें मिलीं ।

हवश और हजरमौत के एलची अपने अपने लायक इनाम और ख़िलअतें पाकर रुख़सत हुए ।

१० जिलहिज्ज (असाढ सुदि १२ । १४ जून) को बकराईद और १९ (प्र० सावन वदि ६ । २७ जून) को गुलाबी ईद हुई ।

शाहज़ादों और अमीरों ने जडाऊ और मीनाकार सुराहियां नज़र कीं ।

राजा जैसिंह और दिलेरखां की कोशिश से पुरंधर और रुद्रमाल वगैरा कई किले सेवा के फ़तह हुए और वह पकडे जाने के डरसे राजा जैसिंह का वचन लेकर १० ज़िलहज्ज (असाढ़ सुदि १२ । १४ जून) को वगैर हथियारों के मिलनेको आया । राजा ने सेवासे मिलकर उसे अपने पास वैठाया और जानकी अमान देकर जडाऊ तलवार और खंजर दिया और हथियार फिर से वंधाकर दिलेरखां के पास भेजा उसने भी उसके साथ तरह २ की रियायतें कीं सेवा ने २३ किले वादशाही वंदों को सोंपदिये ।

सन् १०७६ (सं० १७२२) ।

वादशाह ने राजा जैसिंह की अर्ज से सेवाके नाम कसूरों की माफी का फ़रमान और उसके वेटे संभा को ५ हज़ारी ५ हजार सवार दुअस्पा और तिअस्पा मनसब भेजा ।

राजा जैसिंह का वेटा रामसिंह जो हजूरमें था दिलेरखां दाऊदखां रायसिंह और कीर्तिसिंह वगैरह पर भी महरवानियां हुईं ।

---

(१) दोनों प्रतियों में १७ शव्वाल लिखी है सो गलत है १७ जीकाद चाहिये क्योंकि वादशाह का जन्म इसी तारीख को हुआ था । (२) कलकत्ते की प्रति में ८ जिलहज्ज है ।

बीजापुर का आदिलखां पेशकश देने में ढील करता था और सेवा को मदद देता था इसलिये राजा जैसिंह को फरमान लिखागया कि सेवा की वलायत का जो बादशाही कब्जेमें आई है बंदोबस्त करके बीजापुर को जावे और किले को घेर कर उसकी फौजों को धुयें से उड़ादे ।

काजी असलम का बेटा-मोहम्मद जाहिद लशकर का महोतसिब[1] मुकर्रर हुआ ।

जाफ़िर खां वज़ीर ने जमना के किनारे पर एक अच्छी हवेली बनाई थी बादशाह उसके देखने को गये जाफ़िरखां ने खूब नज़र निछावर की और पेशकश दी ।

अबदुल्लाहखां हाकिम काशगर के खान अबदुल्लाहखां के वास्ते खत का जवाब और कुछ तुहफे ख्वाजा इसहाक़के हाथ भेजेगये ।

२९ रबीउलसानी (कातिक वदि १२ । २९ अकतूबर) को ४८ वें शमसी साल लगनेका तुलादान और उत्सव हुआ ।

राजा जैसिंह की अर्ज़ से आदिलखां के बडे अमीर मुल्ला अहमदनायता के बुलाने का फरमान लिखा गया । जो आदिलखां के कामों की दुरुस्तीके लिये राजा जैसिंह के पास आयाथा और दरगाह में हाजिर होना चाहता था । उसको आनेसे पाहिले ही ६ हजारी (६ हजार सवार का) मनसब भी मिलगया ।

११ जमादिउल अव्वल (कातिकसुदि १३ । १० नवम्बर) को कश्मीर के सूबेदार सैफखां की अरजी से मालूम हुआ कि- हुक्म के मुवाफ़िक वहां तिब्बत के जमीदार दलदल महमल ने ताबेदारी कुबूल करके बादशाह के नाम का खुतबा अपनी विलायत में पढाया सिक्का भी चलाया है और वहां एक वडी मसजिदभी बनी है ।

बादशाह ने इसकाम के इनाम में सैफखां का मनसब बढाया और खिलअत भी भेजा । छोटी तिब्बत के ज़मींदार मुरादखां को भी खिलअत इनायत हुआ क्योंकि उसने भी इस काममें खैर ख्वाही की-थी ।

---

१ नमाज रोजे वगैरहका हिसाब पूछनेवाला । (२) कलकत्ते की प्रति में ११ जमादिउलआखिर (मगसरसुदि १२ । ९ दिसम्बर) है ।

७ रजब (पौससुदि ८।२ जनवरी स० १६६६) को बादशाहज़ादे मोहम्मदे मुअज्ज़म ने दक्खन से आकर मुलाज़िमत की।

दक्खन के अख़बार से मालूम हुआ कि मुल्लाअहमद नायता जो हज़ूर में आता था रस्ते में मरगया उस के बेटे असद वग़ैरह को हाज़िर होने का हुक्म हुआ।

आलाहज़रत (शाहजहां का) मरना।

अकबराबाद (आगरा) के ख़बर देनेवालों की लिखावट से मालूम हुआ कि १२ रज्जब (पौससुदि १३।८ जनवरी) को आलाहज़रत का पेशाब बन्द होगया। हकीमों ने इलाज करने से हाथ खैंच लिया है नाउमेदी ज़ाहिर करते हैं बादशाहने जाना तो चाहा था मगर होशियारी से २३ (माहबदि ९।१०।१९ जनवरी) को शाहज़ादे मोहम्मद मोअज्ज़म को पहिले भेजदिया।

२६ (माहबदि १३ । २२ जनवरी) सोमवार को रात पड़ते ही बीमारी की सख्ती बढ़ी और उस बड़े बादशाह की जान निकलगई। बेगमसाहिब रादअंदाज़खां ख्वाजा बहलोल सैयद मोहम्मद कन्नौजी और काजी क़ुरबान ने गुसलखानेमें आकर कफन पहिनाया फिर लाश को समन बुर्ज से बाहर लाये जिसे होशदारखां सुबेदारने साथ जाकर जमनापार ताजबीबी के रोजे में दफन करदी उसवक्त शाहजहांको ७६ वर्ष ३ महीने की उमर थी और ३१ वर्ष २ महीने बादशाही की थी।

शाहज़ादा पिछली रात को यह ख़बर सुनकर दूसरे दिन शहर में पहुंचा और मातमदारोंमें शामिल हुआ.

ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने भी शाहजादों और बेगमों समेत मातमी कपड़े पहने और हुक्म दिया कि फरमानों में अब आलाहजरत का नाम फिरदोस आशियानी (स्वर्गवासी) लिखा करें।

सन् १०७६ हि. संवत् १७२२ सन् १६६६ ई०

औरंगजेब (आगरेमें)

९ शाबान (माहसुदि १०।४ फरवरी) को बादशाह जमना में होकर आगरे पहुंचे २० (फागुण वदि ७।१५ फरवरी) को दाराशिकोह की हवेलीमें उतरे

(१) कलकत्ते की प्रति में २८ शाबान (फागुण वदि ३०।२३ फरवरी) है

दूसरे दिन ताजबीबी के रोज़े की ज़ियारत करके तीसरे दिन किले में गये बेगम साहिब और दूसरी सब बेगमों को तसल्ली देकर मातमी कपड़े उतरवाये और मसलिहत देखकर कुछ दिनों के लिये वहीं रहे और अपनी बेगमों को भी दिल्ली से वहीं बुलवालिया.

इन्हीं दिनों में चाटगाम का किला अमीरुलउमरा की कोशिश से फ़तह होगया बादशाह ने उसका नाम इसलामाबाद रखा अमीरुलउमरा तथा उसके बेटे बुजुर्ग-उमेदखां और सारे सरदारों पर बहुत महरबानी की.

नवां आलमगीरी सन ।

१ रमज़ान (फागुणसुदि ३।२६ फरवरी) से नवां जलूसी वर्षलगा।

१ शव्वाल (चैतसुदि ३।२८ मार्च) को बादशाह ने ईद की नमाज पढ़कर बखशिशें कीं (०) बेगम साहिबा को १लाख अशरफियां देकर उनका सालियाना भी १२ लाख से १७ लाख का करदिया परहेजेबानूबेगम और गोहर आराबेगम को भी दो दो लाख रुपये मिले ।

आगरे के किले के खज़ाने जो पांचवें जिलूसी वर्ष में दिल्ली के किले में मंगवालिये गये थे फिर अब वहां से आगरे के किले में लायेगये.

राजा जयसिंह ने सेवा को हज़ूर में भेजाथा वह जब आगरे के पास पहुंचा तो कुंवर रामसिंह और मुखलिसखां पेशवाई करके उसको लाये ।

१८ ज़ीकाद (जेठबदि ५।१३ मई) को ५० वीं कमरी सालग्रह का तुलादान हुआ ।

सेवा ने अपने बेटे संभा के साथ जमीन चूमकर डेढ़ हजार अशरफी नज़र और ६ हज़ार रुपये निछावर किये ।

राजा जैसिंह ने सेवा को उसी के चाहने से दरगाहमें भेजा था और बादशाह उस के पिछले कसूरोंका ख्याल न करके चाहते थे कि महरबानी करके कुछ दिनों पीछे उसे रुख़सत करदें वह उसदिन एक मुनासिब जगह पर बड़े बड़े अमीरों के बराबर खड़ा किया गया था, पर जंगली था और दरबारका कायदा नहीं जानता

१।२।३ ये तीनों बादशाहकी बहनें थीं ।

था इस लिये उसने एक कोनेमें कुँवर रामसिंह से नाराजी जताकर वेजा गिला किया और उसका शिर चकराने लगा, इसलिये हुक्म हुआ कि डेरे पर जावें और रामसिंह उसको अपने मकानके पास ठहराकर उसके वेटे संभा को अपने साथ मुजरा करने के लिये लायाकरें सेवा छल कपट से भाग न जावे इस लिये फौलादखां को उसकी चौकसीपर रक्खा और यह हाल राजा जैसिंहको फरमान में लिखा और उसके साथ बरताव करनेके लिये भी पूछा गया।

दो तीन दिन पीछे वह कपटी मारे डर के बडे बडे अमीरोंका आसरा लेकर पछताने और गिड़गिड़ाने लगा। इतनेमें राजा जैसिंहकी अरज़ी भी आगई कि मैंने उस को वचन दिया है और इधर के कामों की मसलहत के लिये उसके कसूरोंसे दरगुज़र करना मुनासिव है वादशाह ने फौलादखां को हुक्म देदिया कि उसके डेरे पर से पहरे उठाले और कुँवर रामसिंहने भी ख़बरदारीसे गफलत की इससे वह २७ सफ़र सन् १०७७ (भादों वदि १४।१९ अगस्त) को अपने वेटे समेत भेस बदलकर भाग गया। इससे रामसिंह का मनसव उतार लिया गया और राजा जैसिंह को लिखा गया कि उसकी अरज़ से सेवा के जिस नजदीकी रिशतेदार नेथवा को ५ हज़ारी ५ हजार सवार का मनसव दियागया है और जो उसी के ही पास है किसी हिकमत से पकडकर हजूर में भेजदे।

सन १०७७ (सं० १७२३)

वादशाह ने वाजेकामों के लिये दिल्लीजाने का इरादा करके मलका वेगम साहिव को दूसरी वेगमों के साथ पहिले से रवाने कर दिया।

तरवीयतखां खत और तुहफे लेकर ईरान को गया था उसने वहां से शाह अव्वास की नादानी वदमिजाजी हदसे जियादा शेखी और घमंड की बातें अरजी में लिखकर भेजीं और यह भी लिखा कि वह चढ़ाई और लडाई के इरादे से खुरासानमें आना चाहता है। फिर तरवीयतखांके हजूर में पहुंचने पर भी यही हाल उसकी अर्जे और हलकारों की खवर से मालूम हुआ तो वादशाह ने उस पागल के कान अमेठने के लिये जो वगैर किसी सववके दुशमनी करना चाहता

---

(१) कलकत्तेकी प्रतिमें नेतू लिखा है।

था इरादा करके १४ रबीउलअव्वल (आसोजबदि १ । ४ सितम्बर) को बादशाहजादे मोहम्मद मुअज्जम और महाराजा जसवंतसिंह को आगरेसे रवाना किया और फरमाया कि हम भी पंजाब की तरफ आते हैं और तरबियतखां से भी कई बातों में कुछ तकसीरें हुई थीं इस लिये उसका दरबार में आना बंद कियागया ।

सन् १०७७ हि. संवत् १७२३ सन् १६६६ ई.

औरंगज़ेब दिल्लीमें.

१९ रबीउलसानी (कातिक बदि ९।८ अक्टूबर) को बादशाहने भी पंजाब जानेके लिये जमना के रस्तेसे दिल्ली को कूच किया और १४ मंजिलोंमें वहां पहुंचे ।

८ जमादिउलअव्वल (कातिक सुदी १०।२७ अक्टूबर) को ४९ वीं शमसी वर्षगांठका तुलादान हुआ.

काबुल के सूबेदार अमीरखांने कई मुगलों को जासूसीके भ्रम से पकड़कर दरगाह में भेजा था. और हज़रतने एतमादखां और मुल्ला अबदुलकवी को तहकीकात करने का हुक्म दिया था । ऐतमादखां ने उनमें से एक को बगैर जंजीर और हतकड़ी के ख़िलवत में बुलाया था वह जाहिल अचानक उठकर बाहर गया और ख़िदमतगार के पास से जो उसके हथियार लिये खड़ा था तलवार ले आया और एतमादखां पर १ ऐसा हाथ छोडा कि उसकी जिंदगी का रस्सा कटगया जो लोग पास बैठे थे उन्होंने उसको भी मारडाला.

बादशाह को ऐसे पुराने मोतबर खिदमतगार के मारे जाने का बहुत अफ़सोस हुआ उसके बेटों और भाई बंदों को खिलअत दिये और उनके मनसब भी बढाये ।

बादशाह जाफ़रखां वजीर के घरपर गये उस ने जवाहर और जडाऊ चीज़ों की पेशकश गुजरानी ।

ख्वाजा इसहाक जो पिछली साल काशग़र की वकालत पर गयाथा और वहां फितूर होना सुनकर लौट आया था. अब फिर अपना रस्ता देखे जाने का हाल मालूम करके उधर को रुखसत हुआ ।

शाह ईरान जो बुरे इरादों से असफहान को रवाने हुआ था शरावी होने से गले के भीतर गांठें उठनेसे एक रवीउलअव्वल (भादोंसुदि ३।२२ अगस्त) को गांव खार, समनान के पास मरगया वजीरों ने उसके वडे वेटे सफी मिरजा को तख्त-पर वैठा दिया। २४ जमादिउलआखिर (पौसवदि १०-११।११ दिसम्वर को शिकारगाह खास में हरकारों ने यह खवर वादशाह से अर्ज कराई तो हजरतने फरमाया कि हम तो कुछ और ही चाहतेथे मगर खुदा ने उसको वदला देदिया अब मुरव्वत नहीं चाहती है कि ईरान पर फौज भेजें शाहजादा मोहम्मद मोअज्जम को लिखागया कि लाहौर से आगे न जावे कुछ दिन वहीं ठहरा रहे।

वहादुरखां जो शाहजादे के साथ था रस्तेसे लौट कर हजूरमें आया और इलाहावाद का सूवेदार हुआ, राजा जैसिंह ने सेवा के जमाई नत्थू[1] को पकडकर हजूर में भेजदिया जो फिदाईखां को सौंपागया और यह मुसलमान होकर अपनी मुरादको पहुंचा।

जव राजा जयसिंह सेवा की मोहिम खतम करके आदिलखां को सजा देनेके लिये गया था तो दो मंजिल परही आदिलखां के सरदारों में से वह लोल का पोता अवूमोहम्मद राजा से मिला। राजा की अरज से उसको पांच हजारी ५ हजार सवारका मनसव इनायत हुआ और राजा के मददगारों में रखागया।

राजाके इशारे से सेवा और नेत्थू[2] की कोशिश से जो सेवा का सिपहसालार था फेलँन[3], नाथूरा, खावन, और मंगलवेडे के किले फतह हुये और आदिलखां के सरदार अवूमोहम्मद खवासखां और वडी २ फोजोंसे मुकाविले हुये जिनमें वादशाही वंदोंकी जीत रही उन्होंने वीजापुर के तमाम इलाकों को घेरकर दो दफै लूटा। जव वादशाही लशकर वीजापुर से ५ कोस इधर पहुंचा तो आदिलखां ने वीजापुर के किले को सजाया। तालावोंको तोडदिया आसपासके कुओं में थूहर भरदिये किले के पास की वस्तियां उजाड दीं और किले में वैठकर वादशाही लशकर के मुकाविले को अपनी फौजें निकालीं राजा का इरादा किला लेने का

---

(१) कलकत्तेकी प्रतिमें नेतू लिखा है। (२) कलकत्ते की प्रति में नेतू लिखा है। (३) कलकत्ते की प्रति में फलतन और ताथूरा है।

नहीं था और न किले तोडनेका सामान साथ था इस लिये कई दिन पीछे वहां से कूच करके २४ रजब (माहवदि ११।१० जनवरी) को भीमडा नदी से उतर आया, आदिलखां का मोतमिद दयानतराय उजर आर्जजी के संदेशे और बहुतसी जडाऊ चीजें राजा के वास्ते लाया बरसात भी आगई थी इसलिये हजूर से राजा को फरमान पहुंचा कि औरंगाबादमें बरसात तैर करे इसपर वह लडाई और दुशमनी छोडकर लौट आया।

इन्हीं दिनोंमें दिलेरखां बादशाह के हुक्म से पहिले तो चांदा की विलायत में गया वहां के जमींदार मानजीमल्लारने खान से मिलकर ५ लाख रुपये दिये; १ करोड रुपया सरकारी जुरमाने का और २ लाख सालाना मामूली पेशकशका देना कबूल किया।

दिलेरखां फिर देवगढ की विलायत में गया वहां के जमीदार केवलसिंह से ११ लाखें रुपये पिछले बाकी और ३ लाख रुपये साल और कबूल कराये और उधरके कामों से निवडकर बादशाह का हुक्म पहुंचते ही दक्खन को रवाने होगया. उसको ५ हजारी ५ हजार सवार और दुअस्पे तिअस्पे का मनसब मिला।

१० वां आलमगीरी सन्।

१ रमजान (फागन सुदि २।१५ फरवरी १६६७) को दसवां जलूसी वर्ष लगा।

१० (फागुन सुदि ११। २४ फरवरी) को उदैपुरी महल से लडका हुआ बादशाहने उसका कामबख्श नाम रक्खा।

शाहजादा मोहम्मदमोअज्जम लाहौर से आया, ईद के दिन (चैतसुदि ३।१७ मारच) को शाहजादों और अमीरों को बखशिशें हुईं।

सेवा का जमाई नत्थू जो मुसलमान होगया था मुसलमानी कराने के पीछे ३ हजारी २ हजार के मनसब और मोहम्मद कुलीखां के खिताब से सरफराज हुआ.

---

(१) माफी मांगने-(२) नम्रता। (३) कलकत्ते की प्रतिमें कूकसिंहहै। (४) कलकत्ते की प्रति में १५ लाख है। (५) कलकत्तेकी प्रतिमें नेतू।

[illegible] दीवान मीर इमादुद्दीन को रहमतखां का और अजीजुद्दीनखां को [illegible] का खिताब इनायत हुआ ।

(चैत सुदि ८।८ मारच) को शाहजादा मोअज्जम ९ हजारी जातके इजाफेसे १० हजारी (१२ हजार सवार का) मनसब पाकर दक्खन की सूबेदारी पर रुखसत हुआ । महाराजा जसवंतसिंह रायसिंह सफशिकनखां सफीखां और सरबुलंदखां नवाजिशें पाकर उसके साथ तईनात हुये राजा जैसिंह को हजूर में आनेका हुक्म लिखागया ।

यूसुफजइ पठानोंका बलवा ।

यूसुफजई अफगान १ फकीर को मोहम्मदशाह के खिताब से अपना सरदार बनाकर बागी होगये और मुल्ला चालाक और भाकू की अफसरीमें फसाद करने लगे । बादशाह ने अटक के फौजदार काबुलखां को हुक्म भेजा कि नीलाब नदी के आसपास जो जागीरदार हैं उन सबको जमा करके बनपडे जहांतक पठानोंको सजा दे और काबुल के सूबेदार अमीरखां को भी लिखागया कि शमशेरखां को ५ हजार आदमियों से भेजे । काबुलखांने शमशेरखां के पहुंचनेसे पहिले ही दुशमनों से लडकर फतह पाई और थानोंपर फिर कबजा करलिया ।

१३ जीकादै (बैशाखसुदि १५।२७ अप्रेल को शमशेरखां नीलाबसे उतरकर अटक की तर्फ आया और यूसुफजइयों की विलायत के सामने दरया से पारहोकर उनके इलाके में गया वे भी पहाडों में जाकर मौका देखने लगे ।

इसीदिन बादशाह ने मोहम्मद अमीनखां मीर बखशी को अमीरखां किबादखां और ९ हजार सवारों के साथ पठानोंपर भेजा मगर उसके पहुंचने से पहिले शमशेरखां ने दो बार लडकर उनके ३०० मोतबर मालिकों को पकड़ लिया था । बादशाह ने यह खबरें सुनकर शमशेरखां और काबुलखां को खिलअत भेजे ।

---

(१) कलकत्तेकी प्रतिमें सैफखां । (२–३) कलकत्ते की प्रतिमें कामिलखां । (४) कलकत्ते की प्रति में १८ जीकाद हैं । (५) सरदार मुखिया । (६) कलकत्तेकी प्रति में कामिलखां ।

२९ जीकाद (जेठवदि १२।९ मई) को इक्कावन वें कमरी वर्ष लगने का तुलादान हुआ ।

बादशाहजादे मोहम्मदआजम को ३ हजारी जात के बढने से १९ हजारी ७ हजार सवार का मनसब मिला और शाहजादे मोहम्मद अकबर को ८ हजारी २ हजार सवार का मनसब तूमान तोग नक्कारा और आफताबगीर इनायत हुआ ।

जाफिरखां और हजूर तथा दूर के दूसरे अमीरोंपर तरह तरह की इनायतें अता हुईं ।

बुखारा और बलखके वकील रुस्तमबेग और खुशीबेग खिलअत और नकद इनाम पाकर रुखसत हुए अव्वल दिन से आखिर तक बुखाराके सफीरे[1] को दो लाख और बलख के वकील को डेढलाख रुपये इनायत हुये थे ।

रजवीखां बुखारी आबिदखां की जगह सदर[2] के ओहदे पर मुकर्रर हुआ ।

तरबीयतखां के कसूर माफ हुये और वह खानदोराँ के मरजाने से उडीसे की सूबदारी पर गया ।

सन् १०७८

बुरहानपुर के खबर नवीसों की लिखावटों से अर्ज हुई कि राजा जैसिंह जो औरंगाबाद से चलकर हजूर में जाता था २८ मोहर्रम (सावनबदि ३०।११ जोलाई) को मरगया बादशाहने उसके कुँवर रामसिंह को कसूरों की खफगी से निकाल कर राजा का खिताब सब बखशिशों के साथ दिया ।

मोहम्मद अमीनखां ने पठानों की वलायत में पहुँच कर जहांतक होसका उनकी वास्तियों को लूटा और बिगाडा फिर बादशाह का हुक्म पहुंचा कि शमशेरखां को वहां छोडकर लाहौर में आवे और वहां की सूबेदारी का काम करे जो इब्राहीमखां से उतारली गई थी ।

२९ जमादिउलआखिर (पौसबदि १२।२ दिसम्बर) को ५० वें शमसी साल लगने का तुलादान हुआ ।

---

१ एलची वकील भला आदमी । २ दानाध्यक्ष ।

सूबे कशमीर के विकाये निगारों[1] (खबर नवीसों) और तिब्बत के जमीदार मुरादखां की अरजियों से मालूम हुआ कि काशगर का खान अब्दुल्लाहखां अपने बेटे अबुलमनसूर के जोर पकड़ जाने से बालबच्चों और थोडे से नोकरों के साथ छुटा फिरा इस दरगाह में पनाह लेने के वास्ते आरहा है, ख्वाजा इसहाक जो सफीर होकर वहां से उसके पास गया था उस हालतमें उससे मिलकर उसे मदद दे रहा है और वह अब कशमीर में पंहुचने वाला है।

बादशाहने इस खबर के सुनते ही बडी महरबानी और कदरदानी से ख्वाजा सादिक बदख्शी और सेफुल्लाह को उसकी महमानदारी के लिये भेजा और उसके खाने के मय वास्ते १ खंजर जडाऊ जीगा १०९ घोडे अरबी इराकी और तुरकी जिनमें कई जडाऊ साजके थे २ हाथी बहुत से सोने चांदी के बरतन कपडे लत्ते डेरे तंबू अच्छे २ फर्श बिछौने और भी दूसरे सामान सरदारी के उसके हवाले किये और फरमाया कि कशमीर जाकर उस बडे खान से मिलें और हजूर में पहुंचने तक उसकी महमांदारी[2] करते रहें, कशमीर के सूबेदार मुबारजखां को भी हुक्म लिखागया कि जब खान कशमीर में पहुंचे तो वह सरकार की तर्फ से उसके वास्ते तमाम जरूरी सामान तैयार करादेवे और ५० हजार रुपये उस सूबे के खजाने से देकर जब वह दरगाह को रवाने होवें तो साथ रहकर उसको हजूर में पहुंचावे।

मोहम्मद अमीनखां सूबेदार लाहोर को भी हुक्म पहुंचा कि जब खान वहां पहुंचें तो वह भी बहुत इज्जत और अदब से मिलकर उसकी अच्छी तरहसे जैयाफतें[3] करें।

२५ हजार रुपये सरकार खालिसे से और बहुत से रुपये और तुहफे अपनी तर्फ से भी दें इसी तरह के हुक्म रस्ते के सब हाकिमों और फौजदारों को भेजे गये कि जगह २ महमानदारी करें और अपनी २ हदोंसें उसे अच्छीतरह आगे रवाने करदें।

१३ रजब (पौस सुदि १४।१९ सितम्बर) को मोहम्मद अमीनखां के बदले जाने से दानिशमंदखां मीरबख्शीके बडे ओहदे पर पहुंचा खिलअत खासा और जडाऊ कलमदान भी उसको इनायत हुए।

---

१ समाचार लिखने वाले। २ कीट। ३ मिजमानी।

ख्वाजा बहलोल को गवालियर की किलेदारी मोतमदखां के बदलेजाने से इनायत हुई। खिलअत घोडा खंजर और खिदमतगारखां का खिताब भी मिला और जो खिदमतगारखां था वह खिदमत गुजार खां कहलाने लगा।

बंगाले के अखबार से मालूम हुआ कि अब फिर आसामवाले अपनी हदसे आगे बढ़े हैं बहुतसा लशकर और बड़े २ निवाडे लेकर गवाहट्टी तक चले आये हैं, जो बंगाले की सरहद पर है वहां के थानेदार सैयद फीरोजखां को मदद न मिलने से हराचुके हैं, फिरोजखां और उसके अकसर साथी लडाई में मारे गये हैं। यह सुनकर बादशाह ने चाहा कि कोई बड़ा अमीर हजूर से लशकर लेकर बंगाले को जावे और उस सूबे के कुछ मददगारों को भी अपने शामिल करके उनको सजा दे राजा रामसिंह ने इस खिदमत का बीड़ा उठाया। खिलअत सोने के साज का घोड़ा मोतियों की लडोंका जमधर पाकर २१ (माहबदि ७।२७ दिसम्बर) को रामसिंह रुखसत हुवा। कीरतसिंह मुरठिया, रघुनाथ सिंह मेडतिया वीरमदेव सीसोदिया वगैरह सरदार मनसबदार डेढ हजार अहदी और ५०० बर्कंदाज उसके साथ तइनात हुये।

यह देहसाले आलमगीरी का खुलासा पूराहुआ अब आगे मुआसिर आलमगीरी का तर्जुमा है।

---

(१) राठोड़। (२) दहसाले आलमगीरी या आलमगीर नामा जिस में औरंगजेब की पूरी तवारीख १० बर्षकी लिखी है बहुत बडी किताब है जिसका यह इतनासा खुलासा मासिर आलमगीरी के कर्ता ने अपनी किताब के शुरूमें लगाया है।

सूचना—

समाचार पत्र पाठक महाशय । औरङ्गजेबनामाके इन तीन खण्डोंको हिफाजतसे रक्खेंगे ताकि शेष खंड अगले उपहारमें मिलनेसे आपका ग्रंथ पूर्ण होजायगा ।

आपका शुभचिंतक—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रणालयाध्यक्ष,—बंबई.